भण्डारण भारती

अंक–66

राजभाषा विशेषांक

नियम 5

धारा 3(3)

नियम 11

नियम 10(4)

नियम 8(4)

अनुच्छेद 343

अनुच्छेद 351

केन्द्रीय भण्डारण निगम

जन जन के लिए भंडारण

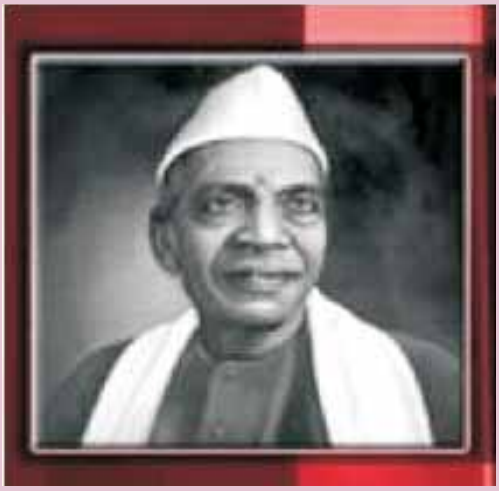

नर हो न निराश करो मन को

नर हो, न निराश करो मन को
नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रह कर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो, न निराश करो मन को।
संभलो कि सुयोग न जाय चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलंबन को
नर हो, न निराश करो मन को।
जब प्राप्त तुम्हें सब तत्त्व यहाँ
फिर जा सकता वह सत्त्व कहाँ
तुम स्वत्त्व सुधा रस पान करो
उठ के अमरत्व विधान करो
दवरूप रहो भव कानन को
नर हो, न निराश करो मन को।
निज गौरव का नित ज्ञान रहे
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे
मरणोंत्तर गुंजित गान रहे
सब जाय अभी पर मान रहे
कुछ हो न तजो निज साधन को
नर हो, न निराश करो मन को।
प्रभु ने तुम को कर दान किए
सब वांछित वस्तु विधान किए
तुम प्राप्त करो उनको न अहो
फिर है यह किसका दोष कहो
समझो न अलभ्य किसी धन को
नर हो, न निराश करो मन को।
किस गौरव के तुम योग्य नहीं
कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं
जान हो तुम भी जगदीश्वर के
सब है जिसके अपने घर के
फिर दुर्लभ क्या उसके जन को
नर हो, न निराश करो मन को।
कर के विधि वाद न खेद करो
निज लक्ष्य निरन्तर भेद करो
बनता बस उद्यम ही विधि है
मिलती जिससे सुख की निधि है
समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को
नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो।

– मैथिलीशरण गुप्त

जुलाई-सितम्बर, 2017

मुख्य संरक्षक
हरप्रीत सिंह
प्रबंध निदेशक

संरक्षक
जे.एस. कौशल
निदेशक (कार्मिक)

परामर्शदाता
पी.के. साव
उप महाप्रबंधक (कार्मिक)

मुख्य संपादक
नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
महिमानन्द भट्ट
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक
रेखा दुबे
एस.पी. तिवारी

संपादन सहयोग
नीलम खुराना, विजयपाल सिंह,
शशि बाला

केंद्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट
www.cewacor.nic.in
पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक: चन्दु प्रैस
डी-97, शकरपुर, दिल्ली-92
दूरभाष: 22526936

भण्डारण भारती

त्रैमासिक पत्रिका — अंक-66

विषय		पृष्ठ संख्या
✦	संदेश	3-11
✦	प्रबंध निदेशक की कलम से...	12
✦	निदेशक (कार्मिक) की ओर से...	13
✦	सम्पादकीय	14
आलेख		
○	प्रयोजनमूलक हिंदी -संदीप कुमार रेड्डी	15
○	ग्रामीण विकास और हिंदी -टी. रामराज रेड्डी	16
○	भाषा के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान -नम्रता बजाज	18
○	अनुवाद का ऐतिहासिक स्वरूप -डॉ. श्रीप्रकाश शुक्ल	22
○	हिंदी भाषाः संस्कृति, सभ्यता और विकास..... -महिमानंद भट्ट	26
○	भाषा की अवधारणा और स्वरूप -डॉ. अनिल कुमार द्विवेदी	30
○	हिन्दी वर्तनी संबंधी समस्याएं एवं उनका समाधान -आर.पी. जोशी	33
○	भारोपीय भाषा परिवार और हिंदी -मिश्री लाल मीना	35
○	मूषक -रवि तिवारी	36
○	राजभाषा संविधान की दृष्टि में -जिया लाल	48
○	राजभाषा हिंदी का अतीत एवं वर्तमान -रजनी सूद	75
क्षेत्रीय कार्यालय-एक परिचय		
➢	क्षेत्रीय कार्यालय - दिल्ली एवं भुवनेश्वर	42
कविताएं		
✪	मेरे हमसफर -पंकज किराड़	21
✪	हिंदी दिवस की बधाई -सच्चिदानंद राय	50
✪	मैं भारत हूं -खुरशीद रजा	52
✪	आज क्यों मानव बधिर है -वरूण भारद्वाज	57
✪	दिल की आवाज़ -मो. अरशद	64
✪	यह संभव था कि.... -राजीव शर्मा	64
✪	पापा तुम बिन लगता है.... -विनीत निगम	68
साहित्यिकी		
▸	हींगवाला (कहानी) -सुभद्रा कुमारी चौहान	53
विविध		
⅄	शहीदों की याद में -रेखा दुबे	49
⅄	जीवन का मकसद -सागरिका दत्ता	51
⅄	बीती ताहि बिसार दे.... -मीनाक्षी गुप्ता	55
⅄	कर्मयोगी की सेवा निवृत्ति -एस.के. दत्ता	56
⅄	गांव से शहर की ओर पलायन -परिमल मिस्त्री	58
⅄	तानाशाह (कहानी) -सुखबीर कुमार भारद्वाज	59
⅄	अतिथि देवो भवः -शशि बाला	63
⅄	भाग्य का लिखा -दयानिधि अग्रवाल	65
⅄	कालीदास- संक्षिप्त परिचय -जे.पी. बेंजवाल	66
⅄	अपराध अप्रभाषित -कृष्ण कुमार	78
⅄	जीवन में विचार का महत्व -रामअवतार प्रसाद	79
अन्य गतिविधियां		
✶	सचित्र गतिविधियां	69
✶	खेल समाचार	80

संपादक मंडल का लेखकों के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण-अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भण्डारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के सम्बल के रूप में एकीकृत भण्डारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भण्डारण एवं संबंधित अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भण्डारण, हैण्डलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- पर्यावरण अनुकूल विधियां प्रयोग करते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाना।
- बैंकिंग संस्थाओं एवं गैर-बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के माध्यम से भण्डारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भण्डारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- पोर्ट हैण्डलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भण्डारण वित्त पोषण, 3 पी.एल., परामर्शी सेवाएं, मल्टी मॉडल परिवहन जैसे क्षेत्रों में फारवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक्स वेल्यू चेन की योजना बनाना और विविधता लाना।
- भण्डारण और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में वैश्विक उपस्थिति दर्ज करना।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा तथा उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम की योजना बनाना तथा क्रियान्वित करना।

सत्यमेव जयते

अरूण जेटली
वित्त एवं कार्पोरेट कार्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर बेहद प्रसन्नता हुई कि केन्द्रीय भंडारण निगम की ओर से अपनी त्रैमासिक पत्रिका 'भंडारण भारती' का सितंबर, 2017 में 'राजभाषा विशेषांक' प्रकाशित किया जा रहा है। यह अपार हर्ष की बात है कि निगम देश में व्यापारिक गतिविधियों के साथ–साथ कृषक समुदाय को वैज्ञानिक भंडारण की तकनीकों में शिक्षित–प्रशिक्षित करने और दैनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने की दिशा में लगातार प्रयास कर रहा है। इस कार्य में सहयोग और मार्ग दर्शन के लिए हमारा मंत्रालय सदैव तत्पर है।

मैं 'राजभाषा विशेषांक' के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

(अरूण जेटली)

सत्यमेव जयते

प्रकाश जावडेकर
मानव संसाधन विकास मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि केन्द्रीय भण्डारण निगम अपने अंशधारियों की वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर 'भण्डारण भारती–राजभाषा विशेषांक' का प्रकाशन कर रहा है।

यह निगम देश के किसानों को वैज्ञानिक भण्डारण की सुविधाएं तथा उनके शिक्षण–प्रशिक्षण की व्यवस्था करके महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। निश्चय ही यह देश की अर्थव्यवस्था के लिए एक सकारात्मक कदम भी है। इसके अतिरिक्त, सरकार की अपेक्षाओं के अनुकूल सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए इस अवसर पर प्रकाशित की जा रही इस पत्रिका का विशेष महत्व है।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका से वैज्ञानिक भण्डारण की नई तकनीक और अन्य जानकारियाँ जनसमुदाय को मिलेंगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(प्रकाश जावडेकर)

सत्यमेव जयते

राम विलास पासवान

उपभोक्ता मामले,
खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि केन्द्रीय भंडारण निगम के अंशधारियों की वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर 'भंडारण भारती' का राजभाषा विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

किसी भी व्यावसायिक उपक्रम के लिए अपने व्यावसयिक हितों को ध्यान में रख कर संघ की राजभाषा को बढ़ावा देना एक सराहनीय कार्य है। केन्द्रीय भण्डारण निगम व्यावसायिक गतिविधियों के साथ–साथ देश में कृषक समुदाय को वैज्ञानिक भण्डारण की तकनीकों में प्रशिक्षित कर अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने की दिशा में निरन्तर प्रयत्नशील है। निगम कृषि उत्पादों का वैज्ञानिक भण्डारण करने के साथ–साथ किसानों को वैज्ञानिक भण्डारण की आधुनिक एवं आवश्यकता आधारित तकनीक का प्रशिक्षण देता है। ऐसी स्थिति में कृषि उत्पादों के संरक्षण संबंधी वैज्ञानिक एवं उपयोगी तकनीक पर आधारित पद्धति पर हिन्दी में लेख प्रकाशित करना काफी उपयोगी सिद्ध होगा। इस प्रकार की तकनीक पर आधारित सचित्र लेख आम लोगों की जानकारी बढ़ाने में सहायक होते हैं। मेरे विचार में ऐसे उपयोगी लेखों को किसानों तथा आम नागरिकों तक पहुंचाया जाना चाहिए। ऐसा करके हम अपनी वैज्ञानिक एवं उपयोगी जानकारी का लाभ आम जनता तक पहुंचा सकेंगे। आशा है निगम इस दिशा में भी प्रयास करेगा।

राजभाषा विशेषांक के लेखकों एवं सम्पादक मण्डल को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(राम विलास पासवान)

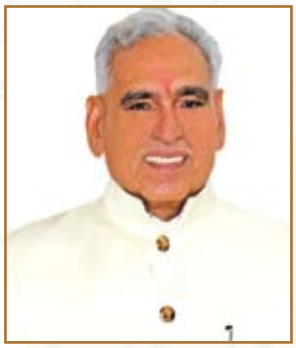

सत्यमेव जयते

सी.आर. चौधरी, भा.प्र.से. (से.नि.)
उपभोक्ता मामले,
खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि केन्द्रीय भण्डारण निगम द्वारा ''भण्डारण भारती–राजभाषा विशेषांक'' त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। निगम द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार हेतु उठाया गया यह कदम सराहनीय है। राजभाषा हिन्दी अपनी सटीकता, सरलता, व्यवहारकुशलता एवं प्रभावोत्पादकता के कारण अनन्तकाल से भारतवर्ष में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। मुझे प्रसन्नता है कि निगम राजभाषा हिन्दी की अक्षुण्यिता को बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील है।

भारत सरकार के महत्वपूर्ण उपक्रमों में से एक केन्द्रीय भण्डारण निगम अपने उद्देश्य– गति, गुणवत्ता एवं किफायत की प्राप्ति तथा वैज्ञानिक व गुणवत्तापूर्ण भण्डारण, समयानुसार लॉजिस्टीक सुविधाएँ प्रदान करने हेतु अपनी महती भूमिका अदा कर रहा है। मुझे विश्वास है कि निगम देश में भण्डारण क्षेत्र में बढ़ती आवश्यकताओं को चुनौती के रूप में स्वीकार कर इसकी पूर्ति हेतु अभिनव तकनीकि विकसित कर पायेगा।

मैं केन्द्रीय भण्डारण निगम को अपने कार्यों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने व गुणवत्ता प्रदान करने तथा दैनिक कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु किये जा रहे इस प्रयास हेतु शुभकामनाएं व धन्यवाद प्रेषित करता हूँ।

शुभेच्छु

(सी.आर. चौधरी)

सत्यमेव जयते

प्रीति सूदन
सचिव
खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग
उपभोक्ता मामले, खाद्य और
सार्वजनिक वितरण मंत्रालय
भारत सरकार
नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि केन्द्रीय भंडारण निगम द्वारा अपने अंशधारियों की वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर त्रैमासिक पत्रिका ''भंडारण भारती'' का ''राजभाषा विशेषांक'' प्रकाशित किया जा रहा है।

केन्द्रीय भंडारण निगम खाद्यान्नों का वैज्ञानिक ढंग से भंडारण कर देश की अर्थव्यवस्था में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है तथा वैज्ञानिक भंडारण के साथ–साथ किसानों के शिक्षण–प्रशिक्षण जैसे कार्यक्रमों से भी जुड़ा हुआ है, इसलिए किसानों को वैज्ञानिक भंडारण की तकनीक के बारे में जानकारी हिन्दी के माध्यम से भली–भांति दी जा सकती है। निगम द्वारा राजभाषा के कामकाज को आगे बढ़ाने की दिशा में यह अत्यंत प्रेरणादायक कार्य है। मुझे आशा है कि इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री से निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा में कार्य प्रसार की प्रेरणा मिलेगी और पाठकों के लिए भी इसमें रुचिकर एवं पठनीय सामग्री उपलब्ध होगी।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(प्रीति सूदन)

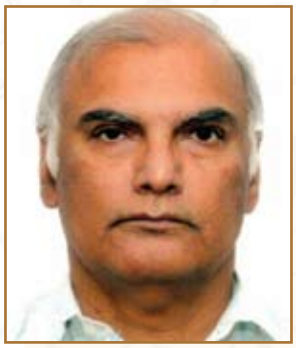

सत्यमेव जयते

प्रभास कुमार झा
सचिव
भारत सरकार
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय
नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा पत्रिका ''भंडारण भारती'' के ''राजभाषा विशेषांक'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा तथा देवनागरी को इसकी आधिकारिक लिपि के रूप में मान्यता प्रदान की है। इसलिए हम सभी का संवैधानिक दायित्व है कि ज्यादा से ज्यादा सरकारी कार्य हिन्दी में करें और दूसरों को भी इस हेतु प्रोत्साहित करें।

केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा अपने मुख्य उद्देश्यों यथा कृषि उत्पादों और अन्य अधिसूचित वस्तुओं के लिये वैज्ञानिक भंडारण की सुविधा उपलब्ध कराने के साथ–साथ राजभाषा प्रचार–प्रसार की गतिविधियों में भागीदारी सुनिश्चित करना एक सराहनीय प्रयास है। मैं 'भंडारण भारती' के संपादक मंडल को बधाई देता हूँ तथा इसके 'राजभाषा विशेषांक' हेतु अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

(प्रभास कुमार झा)

गिरीश चन्द्र चतुर्वेदी

अध्यक्ष
भाण्डागारण विकास और
विनियामक प्राधिकरण
भारत सरकार
नई दिल्ली

संदेश

राजभाषा विशेषांक हेतु केन्द्रीय भंडारण निगम के सभी कर्मियों को बधाई।

केन्द्रीय भंडारण निगम राजभाषा कार्य–क्षेत्र में सदैव अग्रणी रहा है। यह राजभाषा के माध्यम से भंडारण जैसे तकनीकी विषय की जानकारी किसानों तक पहुंचाने का कार्य कई वर्षों से करता रहा है। इससे हमारे किसान अपने कृषि–उत्पाद को सुरक्षित ढंग से रखने के प्रति जागरूक हुए हैं।

'भंडारण–भारती–राजभाषा विशेषांक' द्वारा पाठकों को सुरुचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक लेख प्राप्त होंगे– ऐसा मेरा विश्वास है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(गिरीश चन्द्र चतुर्वेदी)

योगेन्द्र त्रिपाठी
अध्यक्ष
केन्द्रीय भंडारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
नई दिल्ली

संदेश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि निगम गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी अंशधारियों की वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर "भंडारण भारती–राजभाषा विशेषांक" का प्रकाशन कर रहा है।

निगम कृषि, व्यापार, उद्योग व अन्य क्षेत्रों की भंडारण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। वैज्ञानिक भंडारण की तकनीकों के बारे में कृषक समुदाय को निरंतर शिक्षित–प्रशिक्षित करने के साथ–साथ निगम राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में अपने दायित्वों का निर्वाह करने की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। इस दृष्टि से राजभाषा से संबंधित जानकारी सहित इस विशेषांक का प्रकाशन किया जाना एक सराहनीय प्रयास है।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों के माध्यम से जनसाधारण को अनेक विषयों की जानकारी प्राप्त होगी और निगम के अधिकारियों/कर्मचारियों को भी राजभाषा में कार्य करने के प्रति रुचि पैदा होगी।

"राजभाषा विशेषांक" के उद्देश्यपूर्ण प्रकाशन एवं इससे जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(योगेन्द्र त्रिपाठी)

के.यू. थंकाचन
प्रबंध निदेशक
सैन्ट्रल रेलसाइड वेअरहाउस कम्पनी लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि हमारे मूल उद्यम केन्द्रीय भंडारण निगम द्वारा अपने अंशधारियों की आगामी वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर 'भंडारण भारती' का 'राजभाषा विशेषांक' प्रकाशित किया जाएगा।

इस प्रकार के प्रकाशन से जहाँ एक ओर निगम के कार्मिक तथा अन्य हितधारकों को मूल रूप में राजभाषा हिंदी में लिखने का अवसर प्राप्त होगा, वहीं दूसरी ओर निगम की गतिविधियों, परियोजनाओं, आधारभूत सुविधाओं, सेवाओं तथा वैज्ञानिक भंडारण की तकनीकों को जन सामान्य तक पहुँचाने में सहायता मिलेगी। अतः मेरी दृष्टि में निगम का यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय है। यह भी हर्ष का विषय है कि केंद्रीय भंडारण निगम व्यापार, उद्योग जगत एवं कृषि क्षेत्र की भंडारण आवश्यकताओं को पूरा करने सहित लॉजिस्टिक उद्योग के लिए भी आधारभूत–अवसंरचना के सृजन में उत्कृष्ट कार्य कर रहा है।

मैं 'भंडारण भारती' के 'राजभाषा विशेषांक' के सफल तथा उद्देश्यपरक प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(के.यू. थंकाचन)

प्रबंध निदेशक की कलम से...

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि हमारा निगम अंशधारियों की वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर ''भंडारण भारती'' त्रैमासिक पत्रिका का 'राजभाषा विशेषांक' प्रकाशित कर रहा है। यह वर्ष में एक ऐसी बैठक है जिसमें हम अपने अंशधारियों के साथ निगम से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा करते हैं। केन्द्रीय भंडारण निगम किसानों से जुड़ी हुई संस्था है, अतः किसानों को वैज्ञानिक भंडारण की जानकारी इस पत्रिका के माध्यम से पहुँचाने का कार्य अत्यंत सराहनीय है।

जैसा कि विदित है कि निगम किफायती लागत पर कृषि आदानों एवं अधिसूचित वस्तुओं के वैज्ञानिक भंडारण के लिए सुविधाएँ उपलब्ध करा रहा है। इसके अतिरिक्त अपनी गतिविधियों में विविधता लाने के उद्देश्य से कंटेनर ट्रेन भी चला रहा है और किसानों, व्यापारियों, निर्यातकों, आयातकों आदि के लाभ के लिए पैस्ट नियंत्रण सेवाएं भी प्रदान कर रहा है। निगम उत्कृष्ट सेवाओं के साथ ग्राहक संतुष्टि तथा सामाजिक दायित्वों की पूर्ति के लिए भी निरंतर वचनबद्ध है। अपने कार्यकलापों के लिए बेहतर सेवाएं प्रदान करने हेतु प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी को अपनी प्रबंधकीय कुशलताओं का समुचित प्रयोग करना चाहिए ताकि निगम अपनी गतिविधियों का सतत् विकास सुनिश्चित कर सके।

भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं नियमों का सुचारू रूप से अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए निगम प्रतिबद्ध है। अपने दायित्वों का निर्वाह करते हुए राजभाषा के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने के उद्देश्य से प्रत्येक तिमाही राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक, कार्यशाला एवं पत्रिका प्रकाशन करना हमारे प्रमुख कार्यों में से हैं। निगम के राजभाषा कार्यों को मान्यता देते हुए मंत्रालय एवं नराकास द्वारा पुरस्कृत किया जाना भी हमारी उपलब्धि है।

राजभाषा में उल्लेखनीय योगदान के लिए निगमित कार्यालय सहित क्षेत्रीय कार्यालयों को भी समय–समय पर पुरस्कृत किया जाता है। वर्ष 2016–17 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए नराकास, अहमदाबाद द्वारा पुरस्कृत किया गया है। इसके अतिरिक्त राजभाषा को प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षण/प्रशिक्षण अर्थात् पारंगत प्रशिक्षण, हिंदी टाइपिंग प्रशिक्षण सहित विभिन्न कार्यक्रम समय–समय पर आयोजित किए जाते हैं। वास्तव में ऐसे कार्यक्रमों से अधिकारियों/कर्मचारियों को अपना कार्य राजभाषा हिंदी में करने के लिए और अधिक उत्साह उत्पन्न होता है।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री न केवल इसके पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी बल्कि जनसमुदाय को भी निगम के कार्यकलापों के बारे में अपेक्षित जानकारी प्राप्त होगी। आइए, हम सब निगम के उद्देश्यों के अनुरूप अपनी विभिन्न गतिविधियों में तेजी लाएं और प्रगति के नए कीर्तिमान स्थापित करने के लिए सभी प्रयास निरंतर जारी रखें।

(हरप्रीत सिंह)
प्रबंध निदेशक

निदेशक (कार्मिक) की ओर से...

संगठन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उसकी कार्य पद्धति की संपूर्ण जानकारी रखने के साथ–साथ अपने कार्य से संबंधित तकनीकी ज्ञान एवं उत्कृष्ट कार्यशैली अपनाना प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी के लिए आज अत्यंत आवश्यक ही नहीं अपितु उपयोगी भी है। संगठन के बारे में जानकारी विभिन्न माध्यमों से प्राप्त की जा सकती है जिसमें से एक माध्यम विभागीय पत्रिकाएं भी होती है। इसलिए यह भी कहा जाता है कि पत्रिका संगठन का आईना होती है। यह प्रसन्नता की बात है कि निगम विगत कई वर्षों से त्रैमासिक पत्रिका भंडारण भारती का निरंतर प्रकाशन कर रहा है। इस पत्रिका का यह अंक राजभाषा विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने का उद्देश्य राजभाषा के प्रति अधिकारियों/कर्मचारियों की रुचि पैदा करने के साथ–साथ अनुभव के आधार पर अपनी लेखन प्रतिभा के लिए एक शानदार मंच प्रदान करना है।

जैसा कि विदित है कि हिन्दी संघ की राजभाषा है इसलिए हमें दैनिक प्रयोग के साथ–साथ राजभाषा विभाग की अपेक्षाओं के अनुकूल सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करके अपने संवैधानिक दायित्वों को पूरा करना है। इस दायित्व को निभाने में पत्रिका प्रकाशन का कार्य भी प्रेरणाप्रद सिद्ध होता है। राजभाषा के प्रयोग के लिए एक बेहतरीन वातावरण बनाने के उद्देश्य से निगम द्वारा निरंतर राजभाषा कार्यावन्यन समिति की तिमाही बैठक, एक दिवसीय तिमाही हिन्दी कार्यशाला एवं समय–समय पर विभागीय निरीक्षण किए जाते हैं ताकि राजभाषा का कार्य बढ़ाने हेतु विचार–विमर्श एवं समीक्षा की जा सके।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) दिल्ली द्वारा भंडारण भारती पत्रिका को गत वर्षों से श्रेष्ठ गृह पत्रिका का पुरस्कार प्रदान किया जाना निगम के लिए गौरव की बात है। मुझे आशा है कि निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा भंडारण, तकनीकी, राजभाषा एवं अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर लिखे गए लेखों से इस पत्रिका की गुणवत्ता में निरंतर बढ़ोत्तरी होगी।

मैं इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा को आगे बढ़ाने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की सराहना करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल सिद्ध होगी।

(जे.एस. कौशल)
निदेशक (कार्मिक)

संपादकीय

'भण्डारण भारती' त्रैमासिक पत्रिका का 'राजभाषा विशेषांक' पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। गत वर्ष भी निगम द्वारा इस पत्रिका का 'राजभाषा विशेषांक' प्रकाशित किया गया था जिसमें राजभाषा से संबंधित विभिन्न उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सामग्री का समावेश किया गया था।

राजभाषा हिंदी का क्षेत्र बहुत विशाल है और समय के साथ–साथ यह सूचना प्रौद्योगिकी के साथ जुड़कर निरंतर अपनी गति को बढ़ाने की दिशा में आगे कदम बढ़ा रही है। आज के दौर में सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए पत्रिकाएं सशक्त माध्यम के रूप में अपनी भूमिका निभा रही हैं। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए यह पत्रिका भी राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने में अपना योगदान दे रही है। प्रस्तुत अंक में हमने प्रयोजनमूलक हिंदी, भाषा की अवधारणा, हिंदी वर्तनी, हिंदी भाषा, संस्कृति, सभ्यता तथा राजभाषा नीति एवं नियमों को सम्मिलित करते हुए अपेक्षित जानकारी देने का प्रयास किया है।

राजभाषा गतिविधियों के अलावा प्रत्येक अंक की भांति इस अंक में भी हमने अपने स्थाई स्तंभों को प्राथमिकता के आधार पर प्रकाशित किया है ताकि हमारे दूर–दराज स्थित कार्यालयों को निगम की विभिन्न व्यापारिक एवं अन्य गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हो सके।

हमें इस बात की खुशी है कि इस अंक के सफल एवं उद्देश्यपूर्ण प्रकाशन के लिए हमें अनेक शुभकामना संदेश भी प्राप्त हुए हैं। अपने पिछले अंकों की भांति आगामी अंकों के लिए भी पाठकों के सुझाव की हमें सदैव अपेक्षा रहेगी।

(नम्रता बजाज)
मुख्य संपादक

प्रयोजनमूलक हिंदी

संदीप कुमार रेड्डी*

प्रयोजनमूलक हिंदी – किसी निश्चित लक्ष्य को ध्यान में रखकर प्रयुक्त की गई भाषा। यहां 'प्रयोजन' विशेषण है तो 'मूलक' उपसर्ग।

डा. रघुवीर सहाय के अनुसार 'प्रयोजनमूलक हिंदी की परिकल्पना यह मानकर चलती है कि वह एक ऐसी शब्दावली होगी जो ज्ञान के संप्रेषण में काम आएगी और इसलिए बाकी शब्दावली से भिन्न होगी या उस पर आश्रित नहीं होगी।

भाषा शब्दों का आदन–प्रदान ही नहीं बल्कि खुद को अपने समाज और परंपरा से जोड़े रखने का प्रेम बंधन भी है। यदि कोई मुझसे पूछे कि क्या 'प्रयोजनमूलक हिंदी' का व्यवहार क्षेत्र है? क्या इसका प्रयोग विभिन्न इलाकों में बिना बाधा के हो रहा है? तब मेरा जवाब 'हाँ' है। क्योंकि वह भाषा 'प्रयोजनमूलक' भाषा बन जाती है जिसका निश्चित उद्देश्य या प्रयोजन होता है। प्रयोजनमूलक हिंदी में किसी छोटे गांव या इलाकों का चेहरा प्रतिबिंबित नहीं होता इसमें सरल–सहज शब्दों का गमनागमनी और अवस्थिति नहीं होती, बल्कि यह संपूर्ण देश के चित्रण को बयान करता है। क्योंकि इसके पास विशिष्ट शब्दावली का एक तंत्र और समाजशास्त्र होता है, जिसके बल पर यह उदारीकृत वैश्विक व्यवस्था की भाषा बन जाती है। अपने निश्चित शब्दों और मुहावरों को लेकर यह प्रिंटिंग तकनीकी, विपणन, पत्रकारिता, उद्योग, न्यायपालिका, शोध की जड़ प्रविधि का तोड़ उसे गतिशील और जीवन्त बनाती हुई संसद से निकल कर गांव–शहर में फैले विकास खंडों के कार्यालयों तक पहुंचती है।

समाजिक विकास के जितने भी महत्वपूर्ण कारक हो सकते हैं, हिंदी का प्रयोजनमूलक रूप उसके साथ खड़ा है। कुल मिलाकर प्रयोजनमूलक हिंदी आज इस देश में बहुत बड़े स्तर पर प्रयोग की जा रही है। केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच संवादों का पुल स्थापित करने में आज इसकी अहम भूमिका रही है। आज इसने एक ओर कम्प्यूटर, इलैक्ट्रोनिक्स, टेलीप्रिंटर, तार, दूरदर्शन, रेडियो, डाक, अखबार, फिल्म और विज्ञापन आदि जन–संचार के सभी माध्यमों में इसकी पहुंच है तो दूसरी ओर शेयर बाजार, रेल, हवाई जहाज, बीमा–उद्योग बैंक आदि औद्योगिक उपक्रमों, रक्षा, सेना, इंजीनियरिंग आदि प्रोद्योगिक संस्थानों, तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रों के साथ–साथ विभिन्न संस्थानों में हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण दिलाने, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, सरकारी–अद्धसरकारी कार्यालयों में पत्र, लेटर पैड, स्टॉक रजिस्टर, लिफाफे, मुहरे, नामपट्ट, स्टेशनरी के साथ–साथ कार्यालय ज्ञापन, परिपत्र आदेश, राजपत्र अधिसूचना, अनुस्मारक, प्रेस–विज्ञप्ति, निविदा, अपील, मंजूरी पत्र, पावती आदि में यह प्रयोग की जा रही है।

प्रयोजनमूलक हिंदी का वर्गीकरण क. समाजी हिंदी, ख. व्यापारी हिंदी, ग. शास्त्रीय हिंदी, घ. साहित्यिक हिंदी, ड. जन–संचारी हिंदी

आज हिंदी का प्रयोग प्रयोजनमूलक हिंदी, संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा आदि के माध्यम से किया जा रहा है। हर्ष की बात है कि इसका अधिक से अधिक प्रयोग हो रहा है। आज हिंदी ने सभी को एक सूत्र में बांध दिया है। आज कोई भी इस भाषा से अछूता नहीं है। इसका कारण है यह पढ़ते–लिखने तथा समझने की दृष्टि से बेहद सरल है।

यदि भाषा है, तो भावों विचारों की अभिव्यक्ति उसका पहला प्रयोजन है। ❑

* वरिष्ठ सहायक. प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरू

राजभाषा नियमः गृह मंत्रालय के अधीन 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना के तुरन्त बाद 1976 में 12 राजभाषा नियम बनाए गए। संघ सरकार के प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी से यह अपेक्षा रहती है कि वे इन सभी 12 नियमों की जानकारी रखें ताकि उन्हें पता रहे कि अपने सरकारी कामकाज में कितना काम हिंदी में करना है।

दोस्ती और भाईचारा ही मानव जीवन के सर्वश्रेष्ठ रत्न हैं।

ग्रामीण विकास और हिंदी

टी. रामराज रेड्डी*

देश की 68.70 प्रतिशत जनसंख्या आज भी ग्रामों में निवास करती है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अनुसार भारत की आत्मा ग्रामों में बसती है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति की गंगा ग्रामों से ही होकर बहती है। देश के सम्पूर्ण विकास के लिए ग्रामीण विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत का विकास गाँवों की गलियों से होकर गुजरता है, देश के 11 राज्यों की मातृभाषा हिंदी है और 18 राज्य हिंदी को दूसरी भाषा के रूप में पढ़ते है, हिंदी देश की राजभाषा और राष्ट्रभाषा भी है अतः ग्रामीण विकास में हिंदी की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है।

भाषा संप्रेषण का माध्यम और सम्पर्क का साधन होने के साथ–साथ संस्कृति व संस्कार के संरक्षण, संवर्धन व संवहन का संसाधन भी है और भारत भूमि में सदियों से ही हिंदी ही एक ऐसी भाषा रही है जो पूरे भारतवर्ष में किसी ना किसी रूप में लिखी, पढ़ी या बोली और समझी जाती रही हैं। हिंदी के बिना ग्रामीण विकास संभव ही नहीं है और ग्रामीण विकास के बिना देश का विकास। ग्रामीण विकास के लिए ग्रामवासियों की भाषा का ज्ञान जरूरी है। बोलियों को छोड़ दे तो भारत में 22 भाषाएं बोली जाती है, और किसी भी इन्सान के लिए 22 भाषाएं सीखना संभव नहीं है, परन्तु हर राज्य के भाषा के कुछ शब्द सीखना संभव है (क्योकिं लगभग भारत की सभी भाषाएं संस्कृत से ही प्रेरित है) और उन शब्दों को हिंदी वाक्यों में जोड़ कर बोल दे तो वह ग्रामीणों की भाषा बन जाएगी क्योंकि हिंदी एक ऐसी भाषा है जो किसी भी भाषा के शब्दों को आसानी से ग्रहण कर लेती है, हिंदी ने अनगिनत अन्य भारतीय और अभारतीय भाषाओं के शब्दों का आत्मसात किया है, स्वयं "हिंदी" शब्द फारसी भाषा का शब्द है।

ग्रामीण विकास से सम्पूर्ण देश का विकास एवं भविष्य शिक्षा पर ही टिका हुआ है। बेहतर शिक्षा से बेहतर समाज बनता है और बेहतर समाज से बेहतर गाँव और बेहतर गाँवों से बेहतर देश बनता है। शिक्षा पद्धति में भाषा का कितना योगदान है इसे समझाने के लिए मैं आपके समक्ष लॉर्ड मैकॉले (जिन्होंने भारत में अंग्रेजियत भर दी थी, जिसके हम आज भी शिकार हैं) के दिनांक 02 फरवरी, 1835 में ब्रिटिश संसद में दिए गए भाषण के एक अंश का हिंदी अनुवाद उद्धृत कर रहा हूँ–

"पूरे भारतवर्ष के भ्रमण के दौरान मैंने एक आदमी भी ऐसा नहीं देखा जो चोर हो। मैंने उस देश में ऐसी समृद्धि और प्रतिभाएं देखी हैं, ऐसे श्रेष्ठ नैतिक लोग देखे हैं कि मुझे नहीं लगता कि उसके सांस्कृतिक एवं नैतिक मेरुदंड को तोड़े बगैर हम उसे पराजित कर सकेंगे। इसीलिए मेरा प्रस्ताव है कि भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति और संस्कृति के स्थान पर अंग्रेजियत भर दी जाए ताकि भारतवासियों के दिलोदिमाग में यह सोच घर कर जाए कि जो कुछ भी विदेशी और अंग्रेजी है, वही बेहतर और श्रेयस्कर है। ऐसा होने से ही वे अपने स्वाभिमान एवं अपनी संस्कृति भूल जाएंगे और जैसा कि हम चाहते है, वे एक पराधीन कौम बन जाएंगे "लॉर्ड मैकॉले।

इसी सोच ने "बाँटो और राज करो" नीति दी और भारत में इसका पहला शिकार हुई भाषा। स्वतंत्र भारत में ग्रामीण विकास में हिंदी एक समृद्ध भाषा के रूप में कार्य कर रहा है। शिक्षा का मूल उद्देश्य है बच्चों में छिपी हुई प्रतिभा को निखारना तथा उनके व्यक्तित्व का चँहुमुखी विकास (शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक) करना ताकि वे समाज के उपयोगी एवं जिम्मेदार नागरिक बन सकें। हिंदी आज भारत में 30 करोड़ लोगों की मातृभाषा के रूप में और 40 करोड़ लोगों की दूसरी भाषा के रूप में शिक्षा देने का कार्य कर रहा है।

* हिंदी अनुवादक, क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि

हमारे संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी भारत की राजभाषा है। हमारे संविधान के 12 अनुच्छेद (अनुच्छेद 343–351), और अनुच्छेद 120, 210 एवं 294 (क), सरकार की राजभाषा नीति से संबंधित है। इसके अलावा राष्ट्रपति के आदेश–1960, राजभाषा अधिनयम–1963 (1967 यथा संशोधित), राजभाषा संकल्प–1968, राजभाषा नियम–1976 और राजभाषा विभाग द्वारा समय–समय पर जारी किए गए आदेश, अनुदेश आदि राजभाषा नीति के प्रमुख आयाम है। मैं यहाँ इन आयामों की बात इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि ग्रामीण विकास में राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयम के लिए ये आयाम संवैधानिक आधार हैं, जिसके बिना प्रभावी कार्यान्वयन संभव नहीं है। राजभाषा हिंदी जन–जन की भाषा है और ग्रामीण विकास में इसका प्रभावी कार्यान्वयन अति आवश्यक है। यूँ तो भारत के बहुत से राज्य जैसे बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड राज्य और अंडमान–निकोबार द्वीप समूह के गाँवों में राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वन लगभग सौ प्रतिशत होता है, परन्तु गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, पश्चिम बंगाल, आदि राज्यों के ग्रामों में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन अपेक्षाकृत कम होता है और दक्षिण राज्यों में तमिलनाडु के अलावा सभी राज्यों में हिंदी प्राथमिक शिक्षा से माध्यमिक स्तर तक अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाता है, अगर महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर से देखे तो तमिलनाडु सहित पूरे भारत में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है, परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए प्राथमिक स्तर पर हिंदी को पढ़ाने पर जोर दिया जाना चाहिए। देश के प्रधानमंत्री हिंदी भाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए हर गाँव तक पँहुच बनाने वाला जनसंचार माध्यम "आकाशवाणी" का चयन किया है और "मन की बात" में जन–जन–की भाषा हिंदी में जनता से संबोधित करते है। आकाशवाणी के अलावा जनसंचार के अन्य माध्यम जैसे हिंदी अखबार, दूरदर्शन और कुछ निजी हिंदी चैनलों की पहुँच भी हर गाँव तक है, हिंदी के विकास यात्रा में इन जन–संचार माध्यमों का अनमोल योगदान है। सम्पूर्ण देश के ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी कार्यालय, पंचायती राज कार्यालय आदि में राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यन्वयन होना ग्रामीण विकास के लिए बहुत जरूरी है क्योंकि हिंदी एक ऐसी भाषा है जो अपनी संप्रेषणशीलता क्षमता से मनुष्य को मनुष्य से, समाज को समाज को, धर्म को धर्म से, संप्रदाय को संप्रदाय से, व्यवसाय को व्यवसाय से, जाति को जाति से संस्कृति को संस्कृति से क्षेत्र को क्षेत्र से, और राष्ट्र को राष्ट्र से जोड़ कर वसुधैव कुटुंबकम की अवधारण ा को उजागर करता है।

निष्कर्ष में मैं कहना चाहूँगा कि ग्रामीण विकास और हिंदी एक दूसरे से जुड़ी हुई है। अगर भारत के गाँव भारत माँ की आत्मा है, तो हिंदी भारत माँ की बिंदी है। ❑

"हर राष्ट्र के पास अपना चिन्तन होता है, अपनी भावनाएं होती हैं, जिन्हें वह अपनी भाषा में व्यक्त करता है। मैं यह मानता हूं कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, बल्कि उससे बोलने वाले के संस्कृति और संस्कार भी जुड़े होते हैं। भाषा जहां अपनी सांस्कृतिक विरासत से उपजी हुई होती है, वहीं वह इस विरासत को आगे आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाती भी है। इसलिए भाषा का प्रश्न केवल एक अभिव्यक्ति के माध्यम का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत और हमारे देश के लोगों के संस्कार से भी जुड़ा है। फिर लोकतंत्रात्मक शासन पद्धति में तो भाषा का प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि जनता भी कामकाज में सक्रिय रूप से भाग ले सकती है, जबकि राजकाज में ऐसी भाषा हो, जिसे वहां की जनता अच्छी तरह से समझ सके।"

डॉ. शंकर दयाल शर्मा

एक दूसरे का सम्मान और शिष्टाचार ही संस्कृति की आधारशिला है।

भाषा के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान

नम्रता बजाज*

विज्ञान और तकनीकी के वर्तमान युग में हिंदी कंप्यूटिंग की दुनिया तेजी से बदल रही है। आज से कुछ वर्ष पहले जो चीजें देखने और सुनने में असंभव सी लगती थी, आज बदलते तकनीकी परिवेश में हकीकत में बदल रही हैं। आज के इस युग को 'टेक्नोयुग' भी कहा जा सकता है। उदाहरण के तौर पर अब कोई भी पहले की तरह अंतर्देशीय पत्र पर चिट्ठियां नहीं लिखता, अपितु आज सभी मोबाइल या ई–मेल पर मेसेज टाइप कर चुटकियों में अपने संदेश को दूसरों तक पहुंचाते हैं। स्कूलों में भी अब पढ़ाई ई–लर्निंग और ई–क्लासेस के माध्यम से की जाने लगी है। आज मानव हर क्षेत्र में नए–नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। संस्थाओं तथा उद्योग धंधों में कंप्यूटर का प्रयोग विशाल पैमाने पर हो रहा है। साथ ही, हर छोटी से छोटी समस्या को सुलझाने के लिए भी कम्प्यूटर का प्रयोग किया जा रहा है, चाहे वो मोबाइल में रिचार्ज करवाना हो या फिर बिजली का बिल भरना हो। कम्प्यूटर आज रोजमर्रा की उपयोगी वस्तुओं में से एक बन चुका है। औद्योगिक क्षेत्र में मशीनों तथा कारखानों का संचालन करने के लिए कम्प्यूटर को प्रयोग में लाया जाता है। सूचना एवं समाचार के क्षेत्र में भी कम्प्यूटर अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है। कम्प्यूटर नेटवर्क के द्वारा विश्व भर के नगर एक–दूसरे से एक परिवार की भांति जुड़ गए हैं। बैंक भी ग्राहकों की सुविधा के लिए नेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, एटीएम आदि की सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। कम्प्यूटर द्वारा अंतरिक्ष के चित्र भी विशाल पैमाने पर एकत्र किए जा रहे हैं। आज विश्व में सब कुछ इतनी तेजी से बदल रहा है कि कोई भी क्षेत्र तकनीकी से अछूता नहीं है। हम देख रहे हैं कि आज कृषि, शिक्षा व्यवसाय आदि के साथ–साथ भाषाएं भी तकनीक के साथ जुड़ गई हैं तो हिंदी भाषा इससे इतर क्यों रहे?

आज सभी लोग कंप्यूटर पर ईमेल भेजने, फेसबुक स्टेटस अपडेट करने या चौटिंग करने आदि के लिए आसानी से टाइपिंग कर लेते हैं। अंग्रेजी टाइपिंग के साथ–साथ हिंदी टाइपिंग भी अब सरल हो गई है और मोबाइल पर भी लोग सरलता से हिंदी टाइपिंग करने लगे हैं। हिंदी (देवनागरी) के फॉन्ट दो प्रकार के होते हैं– यूनिकोड फॉन्ट और नॉन–यूनिकोड फॉन्ट। माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज इनपुट टूल की सहायता से कोई भी व्यक्ति हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में आसानी से काम कर सकता है। यह टूल सभी एप्लिकेशनों पर सफलतापूर्वक कार्य करता है और अंग्रेजी की–बोर्ड ले–आउट होने के कारण प्रयोग करने में भी सरल है। इसके अतिरिक्त, गूगल हिंदी इनपुट है जो अंग्रेजी की–बोर्ड की सहायता से चलता है। इनके साथ ही इनस्क्रिप्ट आदि से भी कंप्यूटर पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में विविध तकनीकी सुविधाएं उपलब्ध हैं। इनके अतिरिक्त www.bhashaindia.com से भी इंडिक इनपुट टूल को डाउनलोड कर इनस्क्रिप्ट के अतिरिक्त रेमिंग्टन टाइप राइटर को सैलेक्ट कर के हिंदी या अन्य प्रान्तीय भाषाओं में भी टाइपिंग की जा सकती है।

हिंदी भाषा की विशेषता यह हैं कि यह अपने अन्दर प्रांतीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी एवं अन्य विदेशी भाषाओं को भी समाहित करने की क्षमता रखती है। तकनीकी के इस युग में हिंदी ने भी अपने आप को समय के अनुरूप ढाल लिया है। टाइपिंग की सुविधा से लेकर वॉइस टाइपिंग की सभी सुविधाएं आज उपलब्ध हैं। आवश्यकता केवल हिंदी भाषा के उपयोगकर्ताओं द्वारा इन नवीनतम तकनीकी सुविधाओं को अपनाने की है। ओसीआर अर्थात ऑप्टीकल कैरेक्टर रिकग्नीशन अर्थात प्रकाश

* प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

पुंज द्वारा वर्णों की पहचान कर पुराने देवनागरी हिंदी टेक्सट को यूनिकोड फॉन्ट में परिवर्तित करने की सुविधा से पुरानी किताबों का डिजीटलाइजेशन करने में मदद मिल रही है। इससे संस्कृत भाषा में लिखे गये लेख सामग्री को आसानी से हिंदी के यूनिकोड फॉन्ट में परिवर्तित किया जा सकता हैं। प्राचीन ग्रंथों की दुर्लभ प्रतियों का डिजीटलाइजेशन करने से उनमें उपलब्ध ज्ञान से सभी को लाभ होगा।

भारत की राजभाषा हिंदी को डिजीटल दुनिया में समृद्ध करने और बढ़ावा देने में ऑनलाइन हिंदी पुस्तकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। गूगल बुक्स और किंडल बुक्स आदि ऑनलाइन सुविधाओं की सहायता से आप अपने कंप्यूटर या मोबाइल फोन पर हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं की हजारों पुस्तकों को मुफ्त में अथवा पैसों का भुगतान करके पढ़ सकते हैं। गूगल वॉइस टाइपिंग सेवा की सहायता से आप बोलकर टाइप कर सकते हैं। इस सुविधा से हिंदी टाइपिंग के लिए लगने वाले समय में काफी बचत हुई है। एन्ड्रॉइड मोबाइल पर हिंदी की ऑफलाइन शब्दावली सुविधा अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं के शब्दों के हिंदी शब्दार्थ ढूंढने में सहायक है।

हिन्दी ऑनलाइन OCR यानी "Optical character recognition" यानी हाथ से लिखे या टाइप कर प्रिंट किये या किसी समाचार पत्र अथवा पुस्तक के किसी भी पेज को स्कैन कर टैक्सट में परिवर्तित करना जिससे उसे दोबारा एडिट किया जा सके। असल में यह सॉफ्टवेयर कुछ–कुछ Artificial intelligence यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित है। जब आप स्कैनर से कोई भी पेज स्कैन करते हैं तो, OCR प्रकाश द्वारा छपे हुए अक्षरों की बनावट से उनकी पहचान करता है और उसे टैक्सट में बदल देता है, अब तो कुछ सॉफ्टवेयर यहाँ तक सक्षम हैं कि आपके हाथों की लिखावट को भी पहचान कर उसे भी टैक्सट में बदल देते हैं साथ ही साथ आपकी वर्तनी को चेक कर लेते हैं।

पहले हिन्दी में ईमेल भेजते समय कुछ समस्याएँ सामने आती थीं। वास्तव में ईमेल भेजने और प्राप्त करने के लिए प्रमुख रूप से दो तरह के टूल काम आते हैं, एक ईमेल क्लाईंट तथा दूसरा वेब आधारित ईमेल सर्वर। आरंभ में क्लाइंट और सर्वर सॉफ्टवेयर की सभी कोडिंग केवल ASCII (American Standard Code for Information Interchange) प्रणाली पर आधारित थी। इस प्रणाली में कम्प्यूटर स्क्रीन पर केवल अंग्रेजी भाषा के अक्षरों को ही प्रदर्शित किया जा सकता था। हिन्दी में ईमेल करने के लिए कुछ वर्षों पहले तक हमारे पास एक मात्र विकल्प के रूप में ऑस्की फॉन्ट आधारित सेवाएँ ही थीं।

ईमेल के हैडर तथा विषय को अँग्रेजी में ही लिखना होता था क्योंकि यह हिन्दी में लिखना संभव नहीं था। दूसरा, जिसको ईमेल किया जा रहा है उसके कंप्यूटर में भी वही फॉन्ट संस्थापित (Installed) होना अनिवार्य होता था, अन्यथा उस ईमेल को पढ़ना संभव नहीं था। मूल रूप से अँग्रेजी शब्दों के साथ काम करने के कारण हिन्दी शब्दों के आधार पर अपनी आवश्यक ईमेल को खोजने तथा सहेज कर रखने में भी समस्याएँ आतीं थीं। यदि ऑपरेटिंग सिस्टम यूनीकोड का समर्थन करता है तो आपका ईमेल क्लाइंट तथा ब्राउजर भी यूनीकोड हिन्दी समर्थन प्राप्त करने वाला होना चाहिए।

ईमेल सेवाएं प्रमुख रूप से दो प्रकार की एनकोडिंग प्रणाली पर आधारित होती हैं, एक ASCII और दूसरी यूनिकोड। अब समय के साथ कंपनियों ने यूनीकोड एनकोडिंग प्रणाली को अपनाना शुरू कर दिया है जो ईमेल सॉफ्टवेयर अर्थात क्लाइंट और सर्वर, ASCII प्रणाली पर आधारित हैं, उनमें हिन्दी या किसी अन्य भाषा में ईमेल भेजना मुश्किल काम है। किन्तु, जो क्लाइंट और सर्वर यूनिकोड प्रणाली पर आधारित हैं उनमें हिन्दी में सहजता से ईमेल

भेजे जा सकते हैं। वास्तव में यूनिकोड दुनिया भर की सभी भाषाओं के प्रत्येक अक्षर के लिए कंप्यूटर में एक सर्वमान्य कोड उपलब्ध कराने की व्यवस्था है। अतः यूनिकोड प्रणाली में हिंदी (देवनागरी) के किसी भी अक्षर को प्रदर्शित करने के लिए जो कोड उपलब्ध कराया गया है वह पूरे विश्व में अंग्रेजी (ASCII) की ही तरह मानक और सर्वमान्य है।

वर्तमान में ईमेल सेवा उपलब्ध कराने वाली सभी प्रमुख कंपनियां जैसे– जीमेल, याहू मेल, रेडिफ मेल, हॉट मेल आदि यूनिकोड आधारित एनकोडिंग का प्रयोग कर रही हैं। इससे अब हिन्दी में ईमेल भेजना कोई समस्या नहीं रही है। बस आपको अपने कंप्यूटर में यूनिकोड सक्रिय करना है और हिन्दी टाइपिंग की के लिए किसी इनपुट प्रणाली (typing method) को सीखना है। विंडोज 2000 एवं इसके बाद के सभी संस्करणों में तथा वर्ष 2002 के बाद जारी लिनक्स के लगभग सभी संस्करणों में ऑपरेटिंग सिस्टम के स्तर पर ही डिफॉल्ट रूप से हिन्दी यूनीकोड के समर्थन की सुविधा उपलब्ध रहती है। इन सुविधाओं में ईमेल क्लाईंट तथा ब्राउजर भी शामिल हैं। आजकल जावा आधारित कुछ ऐसे टूल्स भी प्रचलित हैं जिनको चलाने के लिए कंप्यूटर पर किसी प्रकार के यूनीकोड समर्थन की आवश्यकता नहीं है परंतु जावा वर्चुअल मशीन संस्थापित होना आवश्यक है। जीमेल भी जावा स्क्रिप्ट पर चलता है अर्थात् इसके लिए आपके मशीन में जावा संस्थापित होना तो आवश्यक है ही परन्तु साथ ही आपका ब्राउजर भी जावा स्क्रिप्ट चलाने के लायक होना चाहिए। जावा स्क्रिप्ट पर आधारित होने के कारण जी–मेल के नए संस्करण को अलग से डाउनलोड करने की आवश्यकता नहीं होती है अर्थात जब भी आप जी–मेल का उपयोग करते हैं यह नवीनतम संस्करण ही रहता है। कुछ पुराने सिस्टमों जैसे विंडोज 98 में इंटरनेट एक्सप्लोरर 6 का पूरा पैकेज संस्थापित करने से यूनीकोड हिन्दी के आंशिक उपयोग करने के लायक बनाया जा सकता है।

हिन्दी टाइपिंग के लिए भारत सरकार ने इनस्क्रिप्ट प्रणाली को आधिकारिक रूप से मानक घोषित किया है। यह आपके कंप्यूटर में पहले से

ही मौजूद है। यदि आपको इसमे टाइपिंग नहीं भी आती है तो भी आजकल हिंदी टाइपिंग कोई समस्या नहीं रही है, अब आप फोनेटिक टाइपिंग (अंग्रेजी में टाइप करके हिंदी में लिखना) से भी आसानी से लिख सकते हैं। तकनीकी तो एक कदम और आगे बढ़ चुकी है, अब आप बोलकर (वॉइस टाइपिंग) भी हिंदी में टाइप कर सकते हैं। तकनीकी रूप से तो हिंदी ईमेल भेजने से संबंधित समस्याओं का लगभग समाधान हो चुका है।

कंप्यूटर पर कई अन्य समस्याएं भी आपके समक्ष आती हैं जिनका समाधान एक छोटे से विकल्प का प्रयोग करने से हो जाता है। परन्तु जानकारी के अभाव में हम परेशान होते हैं जैसे– कई बार आप किसी वेबसाइट से कोई टेक्स्ट कॉपी करके लाते हैं और उसे माइक्रोसॉफ्ट वर्ड डॉक्यूमेंट में पेस्ट करते हैं। पहले तो पेस्ट होने में ही सारा वक्त लग जाता है। दूसरे, जब टैक्स्ट कॉपी होता भी है तो उसी स्टाइल में जैसे कि वह वेबसाइट में दिख रहा था। अब आपको वह स्टाइल हटाकर अपने डॉक्यूमेंट की स्टाइल (फॉन्ट, साइज, रंग, बुलेट आदि) में बदलने में काफी मेहनत करनी पड़ती है, परन्तु यदि आप अपने वेबसाइट टेक्स्ट को डॉक्यूमेंट में पेस्ट करते समय एक छोटी–सी सावधानी रख लेंगे तो सारा टेक्स्ट खुद ही आपके डॉक्यूमेंट के स्टाइल में बदलकर पेस्ट हो जाएगा। जब भी कोई टैक्स्ट कॉपी करके लाएँ, तब विंडोज के मेन्यू में पेस्ट के लिए दिए गए विकल्पों पर ध्यान दें। इनमें आखिरी विकल्प (जिस पर अंग्रेजी का A लिखा है) पर क्लिक करके पेस्ट करें। यह बटन यह सुनिश्चित करता है कि आपके द्वारा वेबसाइट से कॉपी किए गए टेक्स्ट

की सारी फॉरमैटिंग खत्म हो जाए और वह सामान्य टेक्स्ट के रूप में पेस्ट हो। कभी–कभी जल्दबाजी में हम अचानक गलत ईमेल पते पर ईमेल भेज देते हैं या बिना File Attachment के ही भेज देते हैं। ऐसी स्थिति से निपटने के लिए कई ईमेल सेवा प्रदाता Send ईमेल को Undo करने का Feature भी उपलब्ध कराते हैं। जीमेल में यूजर्स के लिए ऑफिशियली यह सुविधा उपलब्ध है।

इसके अतिरिक्त, मान लीजिए पावरप्वाइंट पर आपने बहुत सारी इमेज को मिलाकर एक एनिमेशन बनाया या तमाम तरह के इफेक्ट्स के साथ किसी खास किस्म के लेआउट में कोई इमेज डाली या फिर किसी और की पावरप्वाइंट स्लाइड को इस्तेमाल करते समय लगा कि यह डिजाइन तो बहुत अच्छा लग रहा है लेकिन उसमें इस इमेज को बदलने की जरूरत है। ऐसे में आप पावरप्वाइंट में इमेज को सलेक्ट कर डिलीट करेंगे और फिर दूसरी इमेज को वहीं पर पेस्ट कर देंगे। मगर इससे आपका सारा एनिमेशन हिल जाता है और आपने पहले इमेज के साथ जो फॉरमैटिंग या डिजाइनिंग की थी, वह सब भी चली जाती है। ऐसे में आप जब भी किसी एनिमेशन या विशेष डिजाइन में मौजूद इमेज को बदलना चाहते हैं तो इमेज को सलेक्ट करने के लिए क्लिक कीजिए और Format मेनू में जाकर Change Picture पर क्लिक कीजिए। यहाँ आपको अपने पीसी में मौजूद दूसरी इमेज सलेक्ट करने या फिर इंटरनेट से कोई इमेज लेने की सुविधा मिलेगी। उसे चुनिए और ओके बटन दबाइए। बस, आपकी नई इमेज पुरानी इमेज में ठीक उसी साइज, रंग–रूप, डिजाइन, इफेक्ट और एनिमेशन के साथ फिट हो जाएगी।

इसी प्रकार यदि आप ऑटो रिकवरी में बदलाव करेंगे तो आपकी ऑफिस फाइलें कभी नहीं खोएंगी। माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, एक्सेल, पावरप्वाइंट आदि पर काम करते समय कंप्यूटर आपकी फाइलों को भीतर ही भीतर सेव करता रहता है ताकि अचानक कंप्यूटर बंद हो जाने या बिजली चले जाने जैसी स्थिति में, उन्हें फिर से रिकवर करके आपको दिखाया जा सके। इसे ऑटो रिकवरी कहते हैं। ये फाइलें आपके कंप्यूटर में मौजूद ऑटो रिकवरी फोल्डर में रखी जाती हैं। अगर आप किसी क्लाउड ड्राइव का इस्तेमाल करते हैं और अपने सिस्टम में किसी ड्राइव को क्लाउड के साथ मैप कर चुके हैं (जैसे वन ड्राइव, ड्रॉपबॉक्स, गूगल ड्राइव आदि) तो अपने ऑटो रिकवरी फोल्डर का पता बदलकर इस ड्राइव पर कर दीजिए। फिर आपकी कोई फाईल कभी नहीं खोएगी क्योंकि वह सिस्टम के साथ–साथ क्लाउड पर भी सेव होती रहेगी। यह बदलाव करने के लिए File>Options>Save पर जाएँ और Auto Recovery के साथ दिए Browse बटन को दबाकर नए ऑटो रिकवरी फोल्डर का चुनाव करें।

सूचना प्रौद्योगिकी तथा नित नई विकसित होने वाली तकनीकों से भाषा के विकास को और भी गति मिल रही है। अतः हम देख सकते हैं कि न केवल हिन्दी अपितु अन्य भारतीय भाषाओं की प्रगति में भी इसके योगदान को नकारा नहीं जा सकता। ❑

मेरे हमसफर

पंकज किराड़*

तुम मेरे साथ रहना मेरे हमसफर,
बड़ी आसान लगेगी जिंदगी की डगर

तेरे कन्धों का सम्बल जब मिल गया,
रात कैसी हो काली, हो जायेगी सहर

दुनिया के जुल्मों की है परवाह किसे,
हंस के सह जायेंगे हम उसका कहर

तुम मेरे साथ हो और मैं तुम्हारा रहूं,
साथ कौन किसके रहे, है किसको फिकर

पर शर्त है तुम मेरा साथ दो,
सुख–दुख, हर कदम, हर डगर

फिर कोई पागल कहे, या फिर दीवाना कहे,
प्यार में जिंदगी हम कर लेंगे बसर

* लेखाकार, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

अनुवाद का ऐतिहासिक स्वरूप

डॉ. श्रीप्रकाश शुक्ल*

''वागर्थाविव सम्पृक्तौ''अथवा ''गिरा–अर्थ जल–वीचि सम''में जिस शब्द–अर्थ की अभिन्नता की परिकल्पना की गई है या ''अनादि निधनं ब्रह्म शब्द तत्वंयदक्षरम्'' में भर्तृहरि की तपःपूत वाणी से जिस प्रथम अभिव्यक्ति ''ब्रह्म''के लिए ''शब्दतत्व'' को ब्रह्म की संज्ञा मिली है, उस पर गहराई से विचार करने से यह प्रतीत होता है कि जब प्रथम अभिव्यक्ति के लिए शब्द की आवश्यकता हुई होगी और उस अभिव्यक्ति को शब्द रूप दिया गया होगा, तो चाहे–अनचाहे या जाने–अनजाने उसी समय अनुवाद का भी जन्म किसी न किसी रूप में हो गया था। भर्तृहरि के ''शब्दतत्त्व'' की तरह अनुवाद को हम ''ब्रह्म'' तो नहीं कह सकते किंतु 'विवर्तते अर्थ भावेन' के साथ अनुवाद भी उसी ''शब्द ब्रह्म'' से विवर्त रूप में जुड़ा हुआ है। हां, कदाचित् यह भाषान्तरण के रूप में नहीं हो सकता है, यह अनुवाद एक नितांत मानसिक प्रक्रिया थी।

भारतीय वाङ्मय में अनुवाद शब्द का उल्लेख इसके प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में मिलता है, जहां जगदीश्वर को समस्त विद्याओं का अनुवाद करने वाला बताया गया है–

अन्वेको वदति यद्ददाति तद्रूपामिनन्तदपा एक ईयते।
विश्वा एकस्य विनुदस्तितिक्षते यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः।।

ऋग्वेद 2.13.3

अर्थात् ''हे जगदीश्वर एक आप ही समस्त विद्याओं के अनुवादों को करते हैं व साथ ही नाना प्रकार के रूपों को छिन्न–भिन्न करते और वही कर्म जिनका ऐसे होते हुए आप एकाकी प्राप्त होते हुए सबका सहन करते जो उन उक्त कर्मों का विस्तार जैसे हो वैसे करते हैं जिन प्रेरणा करने वाले एक आप का यह जगत है वह आप कथनीय जनों में प्रसिद्ध है''। (दयानन्द भाष्य)

इससे यह भाषित होता है कि अनुवाद की आवश्यकता सृष्टि के विकास के समय से ही महसूस की गई और तब से किसी न किसी रूप में यह निरंतर चली आ रही है।

ऋग्वेद के अतिरिक्त संस्कृत के अन्य प्राचीन ग्रंथों में भी अनुवाद शब्द का वर्णन मिलता है। ऐतरेय ब्राह्मण में अनुब्रयाद् (पुनःकथन) अर्थ में अनुवाद का वर्णन आया है:–

यद् वाचि प्रोदितायाम् अनुबूयाद अन्य स्पैवैनम् उदितानुवादिनम् कुर्याते। ऐतरेय ब्राह्मण 2.15

ऐतरेय ब्राह्मण के साथ अन्य ब्राह्मण ग्रन्थों में भी अनुवाद की चर्चा की गई है। ब्राह्मण ग्रंथों के अतिरिक्त उपनिषदों में भी अनुवाद शब्द का उल्लेख मिलता है। बृहदराण्यक उपनिषद् में एक प्रसंग में एवैषा देवी वाग अनुवदति (वृ.उ.5.3) का वर्णन आया है किन्तु यहां भी अनुवाद का अर्थ पुनःकथन या दुहराने के अर्थ में ही हुआ है। वैदिक संस्कृत में अनुवाद का उल्लेख प्राप्त होने से निरूक्तकार ''यास्क''ने भी वैदिक शब्दों का निर्वचन करते हुए कतिपय प्रसंगों में अनुवाद के संबंध में लिखा है: यथा– एतद् ब्राह्मणेन रूप सम्पन्न विधीयंत इत्युदितानुवाद : स भवति। (या.नि. 1.16) तथा कालानुवाद परीत्य (या.नि. 12.13)।

निरूक्तकार की अनुवाद के संबंध में ये सभी व्याख्याएं ''अन्वेको वदति'' के ही अर्थ में है। वहां भी गुरू द्वारा उच्चारण किये गये मंत्रों को शिष्य द्वारा दुहराये जाने जैसी बात आती है। अनुवाद की यह व्यवस्था एक भाषायी मौखिक व्यवस्था थी जहां गुरू द्वारा पढ़ाए गए पाठ या यज्ञ के समय उच्चारित मंत्रों का शिष्यों द्वारा पुनरुच्चारण किया जाता था। अतीत काल में अनुवाद का यह एक रूप था।इसे प्राथमिक चरण भी कहा जा सकता है। भाषावैज्ञानिकों ने अन्वयान्तर या

* संयुक्त निदेशक (नीति/पत्रिका), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली

अन्तः भाषिक अनुवाद में एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था से व्यक्त अर्थ को उसी भाषा की दूसरी प्रतीक व्यवस्था द्वारा किए गए अन्तः अनुवाद की जो चर्चा की है वह अतीत काल के इस प्राथमिक चरण के अनुवाद का ही एक रूप है।

अनुवाद का दूसरा चरण वैदिक कालावसान तथा लौकिक संस्कृत की सुविस्तृत परम्परा के उदय होने के साथ–साथ ही उस समय उदय हुआ है। जब वेद एवं उपवेद तथा ब्राह्मण ग्रंथों की पठनीय सामग्री को लेखकों एवं कवियों ने लौकिक संस्कृत में भाव या सार के रूप में या उस सुदीर्घ परम्परा से पोषित एवं प्रेरित होकर साहित्य साधना एवं साहित्य–सर्जन के रूप में प्रारंभ किया।

यों तो पाणिनि से पूर्वापर वैयाकरणों की लम्बी परम्परा रही है और उन वैयाकरणों ने भी अनुवाद को किसी न किसी रूप में स्वीकार किया है। किन्तु अष्टाध्यायी में पाणिनि ने वर्तमान अनुवाद की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए अपने सूत्र ''अनुवादे चरणानाम'' (पा.अ. 2.4.3) के द्वारा अनुवाद के नए युग का सूत्रपात किया है। इसका एक कारण यह भी है कि तत्कालीन समाज के समक्ष कम से कम दो भाषाओं का उदात्त रूप सामने आ चुका था– एक वैदिक संस्कृत और दूसरी लौकिक संस्कृत। अर्थ बोध के लिए वैदिक भाषा की टीका या उस भाषा–साहित्य के प्राण को एक अन्य स्वरूप में प्रतिष्ठित करने के लिए साहित्य की जो विधा बीज रूप में उत्पन्न हुई थी, उसी का वट वृक्ष वर्तमान अनुवाद के रूप में प्रकट हुआ है।

पाणिनि के उक्त सूत्र पर यदि भट्टोजि दीक्षित की व्याख्या–''सिद्धस्य उपन्यासे'' और भट्टोजि दीक्षित की इस व्याख्या पर सूत्र के संबंध में वासुदेव दीक्षित की बाल मनोरमा की व्याख्या ''अवगतार्थस्य प्रतिपादने इत्यर्थः'' पर विचार किया जाए तो अनुवाद के इस रूप और ऋग्वेद के ''अन्वेकोवदति'' में निहित अनुवाद के प्रथम रूप में व्यापक भेद परिलक्षित होता है। पाणिनि के सूत्र से ज्ञात बात (विषय) के पुनर्कथन में मल्लिनाथ द्वारा अनुवाद के संबंध में की गई टीका 'नामूलं लिख्यते किंचित नानपेक्षितमुच्यते' का उद्घोष है। वेदों में मूल बात को पुनः कहने की ही बात कही गई है किंतु यहां न तो मूल से भिन्न बात को दुहराया जा रहा है और न ही कोई नई बात कही जा रही है। अमूल न हो और मूल से भिन्न कोई अनपेक्षित बात भी न हो, यही वागन्तरण या भाषान्तरण या कथ्यान्तरण है जो पाणिनि के समय से चला आ रहा है। इस काल में भाषा के एक प्रतीक को उसी भाषा की दूसरी प्रतीक व्यवस्था द्वारा मूल बात को लिखने का कार्य बहुत हुआ है। यह प्रतीकांतरण अनुवाद के व्यापक संदर्भ को घोषित करता है। भाषा में कथ्य और अभिव्यक्ति के संबंधों की प्रकृति यादृच्छिक होती है और यादृच्छिक होने के कारण ही किसी एक कथ्य के लिए भाषा में अनेक समतुल्य शब्द संभव है। इसी से ही अन्तः भाषिक (अन्वयान्तर) अनुवाद संभव हो जाता है। पाश्चात्य साहित्य में भी इस तरह के अनुवाद हुए हैं।

पाणिनि के सूत्र ''अनुवादे चरणानाम'' पर काशिकाकार जयादित्य और वामन की टीका– ''प्रमाणान्तरावगतस्यार्थस्य शब्देन संकीर्तन मात्र अनुवादः'' का. 2.4.3 से भी इसी प्रकार का अर्थ बोध होता है कि किसी भी प्रमाण से ज्ञात तथ्य का पुनः कथन ही अनुवाद है। (पाणिनि व्याकरण के अनुसार अनुवाद शब्द अनु उपसर्ग पूर्वक वद् धातु से भावे (पा. व्या. 3.3.8) सूत्र से घत्र प्रत्यय लगाकर बना है जिसका अर्थ भी पुनः कथन ही होता है।)

अनुवाद की आवश्कता शनै–शनैः बढ़ने पर अनुवाद के विषय में चिंतन भी बढ़ा है। न्याय सूत्रकार अक्षपाद गौतम ने ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में अनुवाद के महत्व को दर्शाते हुए इसे वाक्यों के प्रकारों में से एक माना है:– **विध्यर्थवादानुवाद वचन विनियोगात्। न्यायसूत्र 2.1.62**

अर्थात विनियोग से विधि, अर्थवाद और अनुवाद वाक्य के तीन प्रकार है। अक्षपाद गौतम ने विधि तथा विहित के पुनर्कथन को अनुवाद के रूप में परिभाषित किया है:

विधिविहितस्यनुवचन अनुवाद : न्यायसूत्र 2.1.65

वैदिक काल तक भारत में अनुवाद का रूप एक

भाषायी था। लौकिक संस्कृत तक वैदिक से लौकिक में अनुवाद किसी न किसी रूप में किया गया है। वैदिक युगीन भारतीय साहित्य समृद्ध एवं प्रामाणिक साहित्य रहा है। अथर्ववेद प्राचीन ज्ञान–विज्ञान में तथा आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र के क्षेत्र में प्राचीन काल में विश्व के अद्वितीय ग्रंथ रहे हैं। इन ग्रंथों में दिए गए तथ्यों का समकालीन विश्व की भाषाओं में अनुवाद न हुआ हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। हां, यह अवश्य है कि संप्रेषण एवं संचार के संकुचन के कारण यह आज जैसे रूप में नहीं था।

अवश्वघोष, भास, शूद्रक, कालिदास तथा श्री हर्ष आदि संस्कृत के महान नाटककारों के नाटकों में संस्कृत के साथ–साथ मागधी, अर्धमागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री, चांडाली आदि प्राकृत भाषाओं का प्रयोग हुआ है। इन सभी नाटकों में प्राकृत अंशों की छाया भी संस्कृत में दी गई है। तत्कालीन समाज में अभिजात वर्ग की भाषा संस्कृत तथा स्त्री पात्रों एवं अनपढ़ लागों की भाषा प्राकृत थी। प्राकृत और संस्कृत के बीच अनुवाद की अच्छी व्यवस्था होने पर ही दोनों भाषाओं के नाटक का लेखन और मंचन संभव हुआ होगा। इसके अतिरिक्त गुणाढ्य की वृहत्कथा जो मूलतः पैशाची भाषा में लिखी गई थी, उसका सांगोपांग संस्कृत अनुवाद उपलब्ध होने का प्रमाण मिलता है। सम्राट अशोक के काल से लेकर गुप्त साम्राज्य के अभ्युदय तक पालि–प्राकृत भाषाओं का बोल–बाला रहा। गुप्त साम्राज्य के उत्कर्ष के साथ–साथ संस्कृत का भी प्रयोग बढ़ा था और संस्कृत में पुनः उच्च कोटि की रचनाएं हुई थीं। साथ ही कुछ प्राकृत एवं पालि ग्रंथों का अनुवाद भी हुआ।

प्राचीन भारत साहित्य, संगीत, कला, विज्ञान, आयुर्वेद, गणित तथा ज्ञान–विज्ञान के विविध क्षेत्र में बहुत समृद्ध था। उस काल में शेष विश्व उक्त क्षेत्रों में भारत का ही अनुकरण करता था। यह एक मुख्य कारण था कि विश्व की अन्य भाषाओं की सामग्री का अनुवाद संस्कृत में करने की आवश्यकता नहीं महसूस की गई थी। हां, खगोल शास्त्र पर थोड़ा–बहुत विदेशी प्रभाव देखने को मिलता है। इसके विपरीत भारत के गौरवशाली एवं प्रचुर संस्कृत साहित्य का अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में हुआ है। आयुर्वेद एवं चरक संहिता जैसे प्राचीन चिकित्सा विज्ञान के ग्रंथ का अनुकरण सारे विश्व ने किया। संस्कृत साहित्य में पंचतंत्र सरीखा उच्च कोटि का कहानी संग्रह रहा है, जिसकी उंगली पकड़ कर विश्व के कहानी साहित्य ने चलना सीखा है। पंचतंत्र भारत का ऐसा प्राचीनतम ग्रंथ है जिसका विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। विश्व के अनूदित ग्रंथों में बाइबिल के बाद इसका दूसरा स्थान है।

पाश्चात्य देशों में प्राचीन काल से ही अनुवाद की बहुलता रही है। ईसा से लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व असीरिया का राजा सरगोन अपनी घोषणाएं विभिन्न भाषाओं में करता था। बाइबिल मूलतः ''हिब्रू'' भाषा में थी। ईसापूर्व तीसरी सदी में इसका यूनानी भाषा में विधिवत् अनुवाद हुआ था। इसी तरह होमर की कृति ''ओडिसी'' का अनुवाद भी लैटिन छन्दों में किया गया। बाइबिल के ''न्यूटेस्टामेंट'' का विधिवत अनुवाद 1611 ई. में पूरा हो चुका था। संस्कृत के समृद्ध वाङ्मय का पता चलते ही प्राचीन अरबवासियों ने सिंधी ब्राह्मणों की सहायता से 8वीं–10वीं शताब्दी में ज्योतिष, चिकित्साशास्त्र, रसायनशास्त्र, चरक संहिता, अर्थशास्त्र, महाभारत, पंचतंत्र आदि का अनुवाद कराया था।

भारत में वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, प्राकृत, पालि, अपभ्रंश से होते हुए हिंदी तक आते–आते अनेक भाषाएं होने के साथ–साथ परस्पर अनुवाद की आवश्यकता बढ़ने लगी होगी, फिर भी अनुवाद साहित्य का बहुत विकास नहीं हुआ। जयदेव के गीतगोविन्दम् की तर्ज पर विद्यापति ने पदावली का सर्जन अवश्य किया। इसे अनुवाद भले ही न कहा जाए पर बहुत कुछ अनुवाद ही है एक उदाहरण द्रष्टव्य है:–

जयदेव – ललित लवंगलता परिशीलन कोमल मलय समीरे।
मधुकर निकर करंवित कोकिल कूंजित्कुंजकुटीरे।।

हिंदी भाषान्तरण –

विद्यापति–ललित लवंग लता परि चुंबित कोमल मलय समीर।
मधुकर–निकर कलित कोकिल से कूजित कुंज कुटीर।।

मध्यकालीन हिंदी के भक्ति साहित्य में अनुवाद बहुतायत से तो नहीं है, पर बहुत से उदाहरण देखने को मिलते हैं– संस्कृत के एक लोक विश्रुत श्लोक– ''मूकं करोति वाचालंपंगु लंघयते गिरिम'' का अनुवाद तुलसीदास एवं सूरदास की कृतियों में क्रमशः इस प्रकार देखने को मिलता है–

''मूक होहिं वाचाल पंगु चढ़ै गिरिवर गहन''

तथा

जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे अंधे को सब कुछ दरसाई।
बहिरो सुने गूंगपुनि बोले रंक चलै सिर छत्र धराई।

पर ये सभी अनुवाद समग्र एवं सांगोपांग नहीं थे। ये क्या थे, इसका भ्रम तुलसीदास ने ''नाना पुराण निगमागम सम्मतं यत् रामायणे निगदिंत, क्वचिदन्यतोअपि'' लिखकर दूर कर दिया है । यदि सारानुवाद, भावानुवाद आदि को अनुवाद के समकक्ष रखा जाए, तो तुलसी दास के रामचरितमानस से अच्छा कोई अनुवाद मिलना असंभव है। इसी तरह रीतिकालीन साहित्य में केशव, बिहारी आदि की कृतियों में भी कुछ ऐसा ही देखने को मिलता है। परन्तु समीक्षाकारों ने इसे प्राचीन कृतियों की उपजीव्यता बताया है न कि अनुवाद।

हिंदी में गद्य साहित्य का विकास होने के साथ ही हिंदी साहित्य में अनुवाद की बाढ़–सी आ गई है। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी तक आकर हिंदी में इतने अनुवाद हुए कि अब यह कहना ही कठिन है कि संस्कृत, प्राकृत और पालि भाषा का कौन–सा ग्रंथ बचा है जिसका अनुवाद हिंदी भाषा में नहीं हुआ है। ऋग्वेद से लेकर सभी वेद, उपवेद, वेदान्त, ब्राह्मण ग्रंथ, लौकिक संस्कृत के समस्त वाङ्मय के अनेक हिंदी अनुवाद सुलभ हैं। वेदों का अनुवाद महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिंदी में उस समय किया था जब हिंदी गद्य अपने बाल्यावस्था में था। हिंदी साहित्य में महावीर प्रसाद द्विवेदी, भारतन्दु हरिश्चन्द्र, रामचन्द्र शुक्ल, मुंशी प्रेमचन्द्र, रत्नाकर, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, दिनकर जैसे लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों ने भी विपुल अनुवाद कार्य किया।

वर्तमान बहुभाषी समाज में ज्ञान–विज्ञान इतना आगे बढ़ गया है कि हर दिन नए–नए आविष्कार एवं खोजें हो रही हैं। ऐसे परिवेश में अनुवाद की आवश्यकता से कौन अनभिज्ञ है। अब जब विश्व 21वीं सदी में ज्ञान–विज्ञान में आशातीत सफलता प्राप्त कर चुका है, चांद–सितारों की दुनिया, समुद्र तल एवं पृथ्वी के गर्भ में छिपी चीजें उसके लिए खुली पुस्तक बन चुकी हैं, तो आवश्यकता है ज्ञान–विज्ञान की खुली पुस्तक सदृश विपुल सामग्री का अनुवाद मशीनों द्वारा किया जाए।

विज्ञान के हर क्षेत्र में व्यापक सफलता पाने वाला मानव मशीन अनुवाद के क्षेत्र में अभी उल्लेखनीय सफलता हासिल नहीं कर सका है। मशीन अनुवाद की दिशा में संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, इजराइल, जापान, इटली, ब्रिटेन ने काफी प्रयास किया है। कुछ भाषाओं में परस्पर अनुवाद सफल भी रहा है।

मशीन अनुवाद की दिशा में भारत में भी कई संस्थाओं द्वारा प्रयास जारी हैं। अनुवाद का मुख्य आधार है व्यतिरेकी विश्लेषण और अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान। मशीनी अनुवाद की दिशा में यह सबसे बड़ी चुनौती है फिर दूसरी बात यह है कि मशीन केवल उन्हीं तथ्यों का अनुवाद कर सकती है जिसका प्रोग्राम बनाया गया है। सीमित स्तर पर दोनों भाषाओं के प्रोग्राम बनाकर सामग्री का अनुवाद तो मशीन से संभव हो गया है किंतु क्या कंप्यूटर कभी शब्दकोश और शब्दावली के डाटा बेस पर स्वतः शब्द चयन करके नित्यप्रति नई सामग्रियों का अनुवाद कर सकेगा। निःसंदेह यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसे साकार करने के लिए भाषाविदों और कम्प्यूटर वैज्ञानिकों के संयुक्त प्रयास की आवश्यकता है। दो भाषाओं की समग्र जानकारी कम्प्यूटर में भरने के लिए भाषाविदों और कम्प्यूटर वैज्ञानिकों को भगीरथ प्रयत्न करना होगा। ❑

❖ खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है। जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ते रहने की लगन का। –मुंशी प्रेमचंद

❖ परिवर्तन ही सृष्टि है, जीवन है और स्थिर होना मृत्यु –जयशंकर प्रसाद

हिंदी भाषा सभी भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली महान भाषा है।

हिंदी भाषा: संस्कृति, सभ्यता और विकास का सुनहरा आईना

महिमानन्द भट्ट*

भाषा मानव समाज की सर्वोच्च सृष्टि है तथा संस्कृति को संजोकर रखने का साधन भी। कह सकते हैं कि संस्कृति के अनुसार भाषा बनती है और भाषा संस्कृति का प्रतिबिंब होती है। वर्तमान में हमारे संविधान में 22 भाषाओं को एक साथ रखा गया है। भाषाओं के मामले में भारत एक समृद्ध राष्ट्र है। हमें अपनी सभी क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों पर गर्व है तथा सदैव उनके उन्नयन के लिए प्रयत्नशील हैं। सभी भाषाओं के प्रति समर्पण का भाव राष्ट्रीय कर्तव्य है और इनका विस्तार शिक्षा और समृद्धि का विस्तार है तथा राष्ट्रीयता का विस्तार है।

भाषा साहित्य की संवाहिका है, मनुष्य जो कुछ सोचता है, समझता है, अनुभव करता है उसे अगर व्यक्त करता है तो एक ऐसी भाषा का सहारा लेना पड़ेगा जो सरल एवं सीधी हो। उर्दू ने अपनी शब्दावली का स्रोत अरबी–फारसी में देखा और हिंदी ने संस्कृत–देशज शब्दों को आधार बनाया। हिंदी के लिए राजभाषा शब्द का प्रयोग संविधान सभा की देन है। मुंशी प्रेमचंद जी ने राष्ट्रभाषा, कौमी जबान और सार्वभौमिक भाषा आदि का प्रयोग किया है। सभी जानते हैं कि राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र का बोध हो ही नहीं सकता, जहाँ राष्ट्र है वहाँ राष्ट्रभाषा का होना लाज़िमी है। भाषा ही राष्ट्र, साहित्य और संस्कृति का निर्माण करती है। भारतेंदु हरिशचंद्र जी का यह कथन अकाट्य सत्य है कि :–

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।।

निःसदेह निज भाषा की उन्नति के बिना किसी भी देश का साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास संभव नहीं है, क्योंकि भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, अपितु वह आंतरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति का भी माध्यम होती है।

भाषा विहीन समाज और समाज विहीन भाषा नितांत अकल्पनीय है। बिन भाषा के न कल्पना संभव है न विचार। समाज भाषा के माध्यम से बना और विकसित हुआ है। प्रत्येक जीवन्त समाज की अपनी एक भाषा होती है, यह भाषा उस समाज के साथ ही पनपती है, बढ़ती है और व्यवहार करती है।

भाषा समाज सापेक्ष है और समाज के विकास के साथ–साथ भाषा का भी विकास होता है तथा शब्दों के अर्थ निश्चित होते हैं।

मानक भाषा के लिए निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है–

1. बोधगम्यता, 2. केंद्रोन्मुखी प्रवृत्ति, 3. प्रयोगशीलता, 4. जातीय समानता, 5. व्याकरणीय समता

संपर्क भाषा – एक भाषा–भाषी जिस भाषा के माध्यम से किसी दूसरी भाषा के बोलने वालों के साथ संपर्क स्थापित कर सकें, उसे संपर्क भाषा कहते हैं। अतः संपर्क भाषा से तात्पर्य उस भाषा से है जो समाज के विभिन्न वर्गों या निवासियों के बीच संपर्क के काम

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

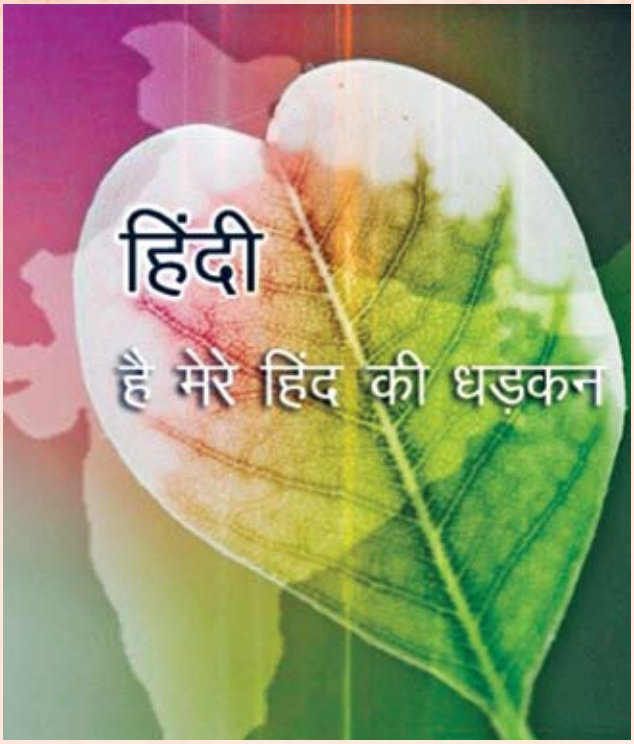

आती है। इस दृष्टि से भिन्न–भिन्न भाषाएं बोलने वालों के बीच "हिंदी एक संपर्क–भाषा" है।

संपर्क भाषा के रूप में बोलचाल में हिंदी का प्रयोग भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में होता है। हिंदी एक सरल, व्यावहारिक एवं जीवंत भाषा है तथा इस भाषा में जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। अतः हिंदी वैज्ञानिक भाषा है। इसके पास विपुल शब्द भंडार है। संस्कृत के साथ–साथ इसने अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, अरबी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि अन्य भाषाओं के हज़ारों शब्दों को ग्रहण किया है। अपने व्यापक जनाधार की बदौलत आज हिंदी एक बड़े भू–भाग की मातृभाषा बन गई है।

राष्ट्रभाषा – राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी एक प्रदेश के लोगों को दूसरे प्रदेशों के लोगों से जोड़ती है एवं सपंर्क स्थापित करती है और राष्ट्रीय एकता का भाव जगाती है। हिंदी भाषा में अनेक खूबियाँ हैं अर्थात्

1. हिंदी एक सशक्त और सरल भाषा है।
2. हिंदी देवनागरी लिपि में ध्वनि–प्रतीकों (स्वर–व्यंजन) का क्रम वैज्ञानिक है।
3. इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग चिह्न है।
4. इसमें केवल उच्चरित ध्वनियाँ ही लिखी जाती हैं।
5. जिस रूप में बोली जाती है, उसी रूप में लिखी जाती है आदि अपनी अनेक विशेषताओं के कारण यह सम्पन्न भाषा है।

डॉ. हरदेव बाहरी के शब्दों में– "जो भाषा थोड़ी–बहुत सारे राष्ट्र में बोली और समझी जाती है, वह अपने इन्हीं गुणों के कारण राष्ट्रभाषा है।" वस्तुतः राष्ट्रभाषा संपूर्ण राष्ट्र की भावनात्मक एकता को अभिव्यक्त करने का माध्यम होती है। इसके द्वारा संपूर्ण राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना प्रतिपादित होती है। जो भाषा जनता समझती एवं बोलती है और जिसका अस्तित्व सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, वह राष्ट्रभाषा है। राष्ट्रभाषा का संबंध राष्ट्र की परंपरा, संस्कृति और सभ्यता से जुड़ा होता है। इस संबंध में हमें यह याद रखना होगा कि

राष्ट्र की पहचान है जो, भाषाओं में महान है जो।
जो सरल–सहज समझी जाए, उस हिंदी को सम्मान दो।।

राजभाषा – किसी राष्ट्र के समस्त सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाली भाषा को "राजभाषा" कहते हैं। 14 सितम्बर, 1949 को भारतीय संविधान सभा ने हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है।

हिंदी भारत के जनमानस की भाषा है, राष्ट्रभाषा है, संपर्क भाषा है और साथ ही शासकीय प्रयोजनों के लिए भारत संघ की राजभाषा भी है। यह निर्विवाद सत्य है कि हिंदी भाषा पूर्णतः वैज्ञानिक भाषा है और आज किसी भी उच्च–तकनीक के अनुकूल है। गुणवत्ता की दृष्टि से भी यह समृद्ध और हर क्षण बदलते वैश्विक परिदृश्य के बीच एक नए जोश के साथ उभर रही है तथा अपनी पहचान स्थापित करने की दिशा में सतत् अग्रसर है।

भाषा केवल विचारों की संवाहिका ही नहीं बल्कि भावनाओं की अभिव्यक्ति भी है। भारत जैसा वैविध्यपूर्ण देश एक विशाल फूलों के उद्यान की तरह है जिसमें हर भाषा की अपनी महक है। हिंदी उनमें गुलाब का फूल है। हिंदी हमारे प्यारे हिंदुस्तान के मस्तक की बिंदी है। देश में जनता और सरकार के बीच जनभाषा ही संपर्क भाषा के रूप में सार्थक कार्य कर सकती है।

अपनेपन से अपनाने की भाषा है- हिंदी।

हमारे देश में अपने आरंभिक काल से ही हिंदी जनभाषा और संपर्क भाषा रही हैं। भाषा वही श्रेष्ठ होती है जिसे जनसमूह सहजता से समझ ले। किसी भी समाज में भाषा संप्रेषण व्यवस्था का सर्वोत्तम उदाहरण है। हिंदी को परिपूर्ण भाषा माना गया है। भाषा किसी भी राष्ट्र और समाज की आत्मा होती है। भाषा और संस्कृति राष्ट्र और समाज की पहचान होती है। भाषा ही देश और समाज को एक रूप में पिरोती है। राष्ट्रीयता के प्रमुख सूत्र के रूप में राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा का प्रथम स्थान है।

हिंदी भारतीय सभ्यता और संस्कृति की भाषा है। यह हमारे स्वतंत्रता आंदोलन की भाषा रही है क्योंकि हिंदी का शृंगार राष्ट्र के सभी भागों के लोगो ने किया है। हिंदी का ज्ञान राष्ट्रीयता को प्रोत्साहन देता है। राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने के लिए हिंदी रामबाण का काम करती है। हिंदी को हमारी राष्ट्रीय भाषा होने का गौरव प्राप्त है।

यदि हम देखें तो हिन्दी केवल एक भाषा ही नहीं बल्कि यह हमारी संपूर्ण जीवन शैली भी है। खुले दिल से सबका स्वागत करने वाली **हिंदी जयहिंद की भाषा** है। **'सारे जहां से अच्छा, हिदोस्तां हमारा'** की भाषा है। देश की रक्षा में तैनात वीर सैनिकों को एक सूत्र में बांधने वाली भाषा भी यही है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान यह संदेश कि **स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है**, जन–जन तक पहुंचाने वाली भाषा भी यही थी। यह मनोरंजन की भी भाषा है और आनन्द तथा प्रेम की भी। हिंदी की विशेषताओं में सबसे बड़ी विशेषता है इसकी नमनीयता। इस भाषा में स्वाभिमान है, पर अंहकार नहीं। इसमें एक सरल प्रवाह है तथा इसमें देवभाषा बनने के सारे गुण विद्यमान हैं।

हिंदी के मुख्यतः चार रूप हैं:–

1. सामान्य बोलचाल व व्यवहार की हिंदी
2. साहित्यिक हिंदी, 3. प्रयोजनमूलक हिंदी और
4. कार्यालयी हिंदी

हिंदी आज जिस मुकाम पर खड़ी है, उसकी सीमाएँ भारत की सीमाओं से बाहर निकलकर दूर देशों के अनेक अनजान क्षितिजों का स्पर्श करती है।

निःसंदेह हिंदी की एक स्वाभाविक शक्ति है तथा उसकी लिपि है देवनागरी। भाषाएँ जब संसार में चलेंगी, तो केवल (देव) नागरी ही ऐसी लिपि होगी जिसमें सही भाषा लिखी जा सकेगी, क्योंकि यह बात सब जानते हैं कि संसार में देवनागरी के समान वैज्ञानिक लिपि दूसरी नहीं है। हिंदी का भविष्य संभावनाओं से भरा है। यदि हमारे मन में अपनी भाषाओं के लिए आत्म–स्वाभिमान और आत्म–गौरव हो तथा व्यापक एवं उदार दृष्टिकोण से विशेषकर राजभाषा कार्यान्वयन में अपनाएं और भावुकता की बजाए व्यवहार में उसे आगे बढ़ाएं तो हिंदी केवल नाम की ही नहीं, अपितु संपूर्ण देश की संपर्क भाषा होने के साथ–साथ सच्चे अर्थों में राजभाषा बन सकती है। कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने भाषा और देश–प्रेम को उजागर करते हुए उल्लेख किया है कि:–

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

हिंदी आज भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा और राजभाषा है इसकी अपनी शब्दावली, लिपि, व्याकरण और शैली है इसलिए भी हिंदी विश्व मंच पर अपनी पहचान स्थापित करने की दिशा में सतत् अग्रसर है।

आमतौर पर हिंदी के विविध रूपों में राष्ट्रभाषा हिंदी, राजभाषा हिंदी, संपर्क भाषा हिंदी प्रमुख हैं। हिंदी

कई राज्यों की राज्यभाषा है। संघ एवं कई राज्यों की राजभाषा है। हिंदी राष्ट्रभाषा ही नहीं अपितु देश की संस्कृति, सभ्यता और विकास का सुनहरा आईना है।

हिंदी के विकास का इतिहास बहुत पुराना है। इंटरनेट हिंदी को अपनाने वाला नवीनतम बाज़ार है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कारोबार की सफलता की कुंजी हिंदी के हाथ में है। भाषा का मानव जीवन में अत्यन्त महत्व है। वैचारिक आदान–प्रदान, व्यापार–व्यवहार का आधार भाषा है अर्थात् भाषा संप्रेषण का माध्यम है तथा इसका पहला रूप 'बोली' है। भाषा नदी के प्रवाहमान जल–सी होती है जो अपना मार्ग स्वंय बनाती हुई निरंतर गति बनाए रखती है।

भाषा के कई रूप हैं– मातृभाषा, संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं राज्य भाषा। दूसरे रूप में देखें तो इसे साहित्यिक भाषा, कविता की भाषा, व्यक्तिगत भाषा, प्रयोजनमूलक भाषा, कार्यालयी भाषा, व्यापार की भाषा, राजनीति की भाषा, समाचारों की भाषा, खेलों की भाषा आदि में विभाजित किया गया है।

भाषा के गुण हैं कि वह सरल हो, सार्थक हो, संक्षिप्त हो, संगत हो, स्पष्ट हो और सुग्राह्य हो। अतः हिन्दी केवल संप्रेषण का माध्यम ही नहीं यह चरित्र का उद्घाटन भी करती है। यह मात्र व्यक्ति के चरित्र को ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र के चरित्र को उजागर करती है। यह भाषा संगठित करने वाली शक्ति है। भारत की अमर वाणी है और हमारी स्वतंत्रता और सम्प्रभुता की गरिमा है। यह याद रखना होगा कि–

हम सबका अभिमान है हिंदी
भारत देश की शान है हिंदी

जिस प्रकार अतीत में इस भाषा ने अपनी सार्थकता और उपयोगिता सिद्ध की है, उसी प्रकार भविष्य में भी इसका विकास और प्रसार इसे समसामयिक और अनिवार्य बनाए रखेगा, ऐसा विश्वास हमें रखना चाहिए। ❑

भाषा सीखने में आनंद

हम तो हमेशा कहते हैं कि मनुष्य की एक आंख है मात्रभाषा और दूसरी है राजभाषा। उसके अलावा और भी एक–दो भाषाएं सीखनी चाहिए। उसका बोझ नहीं होगा, उसमें आनन्द आता है। व्याकरण में कुछ समानता भी दिखती है। जैसे– ''सुन्दर'' का तमिल में होगा (सुदरमान), मलयालम में हो (सुंदरमाया), कन्नड़ में होगा (सुंदरवाद) और तेलुगु में होगा (सुंदरमैना)। शब्द एक ही, परन्तु हर एक भाषा में प्रत्यय अलग–अलग लगा है, कहीं शब्दों में थोड़ा फर्क होता है जैसे– मलयालम और तमिल में ''कपास'' को (परूत्ती), तेलुगु में (पत्ती)। यह परूती का ही रूप है। कन्नड़ में 'प' का होता है (ह)। इस वास्ते कहेंगे (हत्ती)। इस तरह भाषा सीखने से आनन्द बढ़ता है।

–विनोबा भावे

सबसे प्यारा मेरा हिंदुस्तान, हिंदी जिसकी है पहचान।

भाषा की अवधारणा और स्वरूप

डॉ. अनिल कुमार द्विवेदी*

'भाषा' शब्द संस्कृत के 'भाष' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'व्यक्त वाणी'। इस प्रकार से इस धातु के अर्थ में ही भाषा का अर्थ विद्यमान है। 'भाषा' शब्द अपने–आप में व्यापक है। भाषा का मुख्य प्रकार्य संप्रेषण है जिसे कई प्रकार से अभिव्यक्त किया जा सकता है। मनुष्य अपने मुख से उच्चरित ध्वनियों के द्वारा जो बोलता है वह भाषा है। भाषा शब्द का प्रयोग कई अर्थों में होता है। भाषा सामान्य रूप से उन सभी माध्यमों का बोध कराती है जिनसे भावाभिव्यंजन का काम लिया जाता है। इस दृष्टि से पशु–पक्षियों की बोली भी भाषा है। तुलसी ने मानस में लिखा है कि 'समुझै खग–खग ही कै भाषा'। रेलगाड़ी के गार्ड द्वारा हरी झंडी दिखा कर चलने का संकेत भाषा का ही एक रूप है। भाषा अध्येता एवं विशेषज्ञों का मत है कि भाषाओं में भाव और अभिप्राय के अनुसार ध्वनि में अंतर आ जाता है। जब कोई व्यक्ति इस प्रकार से अपना अभिप्राय व्यक्त करने के लिए सिर, हाथ, आंख, होंठ, कंधे आदि का संचालन करके काम चलाता है तो उसे आंगिक या इंगित भाषा कहते हैं। बिहारी ने लिखा है–

'कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैनन ही सों बात।।

इस प्रकार मनुष्य, द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली प्रत्येक बोली को भाषा की संज्ञा दी गई है। किसी दोष से मुक्त परिमार्जित भाषा या बोली भी भाषा कहलाती है, विभिन्न व्यक्तियों की अपनी निजी विशेषताओं से युक्त बोलियां भी भाषा कहलाने की अधिकारी हैं।

भाषा के इस विशाल स्वरूप को देखते हुए यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि भाषा की परिभाषा क्या हो सकती है? भाषा के लक्षण क्या हैं? वस्तुतः किसी वस्तु को परिभाषित करना बड़ा दुष्कर कार्य है। इसे अव्याप्ति तथा अतिव्याप्ति दोष से मुक्त रखने का प्रयास होता है। पाश्चात्य एवं भारतीय भाषाविज्ञानियों ने अपनी–अपनी दृष्टि से भाषा की परिभाषा दी है।

ब्लाग एवं ट्रेगर की परिभाषा को अधिक स्वीकृत माना गया है। उनके मतानुसार 'भाषा यादृच्छिक ध्वनि–प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से समाज परस्पर विचार–विमर्श करता है। हेनरी स्वीट का मत है कि 'मनुष्य ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा अपने विचार प्रकट करता है। मानव मस्तिष्क वस्तुतः विचार प्रकट करने के लिए ऐसे शब्दों का निरंतर उपयोग करता है। इस प्रकार के कार्य–कलाप को ही भाषा की संज्ञा दी जाती है।' भारतीय भाषाविज्ञानी बाबूराम सक्सेना के मतानुसार 'जिन ध्वनि चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार–विनिमय करता है उसे भाषा कहते हैं'। एक विद्वान सुकुमार सेन ने 'ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा हृद्गत भावों तथा विचारों के प्रकटीकरण को भाषा की संज्ञा दी है'। एक अन्य विद्वान पी.डी. गुणे के शब्दों में 'यह भाषा संकल्पना के रूप में साधारणीकृत होने वाले प्रतीकों के आधार पर प्रचलन में आती है तथा संप्रेषणीय माध्यम से श्रोता को विभिन्न भावों एवं विचारों का बोध कराती है। भाषा को 'यादृच्छिक ध्वनि–प्रतीकों की वह व्यवस्था' माना गया है जो समाज में आपस में विचार–विनिमय के लिए प्रयुक्त होती है।

इस दृष्टि से भाषा प्रतीकात्मक होती है और इसका कार्य संप्रेषण करना होता है। यह जिन प्रतीकों को लेकर चलती है वे संकल्पना के रूप में साधारणीकृत होते हैं और वे संप्रेषण रूप में भावों एवं विचारों का बोध कराते हैं। फर्दीना द सस्यूर ने इसे संकेतित वस्तु, संकेतार्थ और प्रतीक से बने त्रिकोण से समझाया है। इसका अभिप्राय यह है कि प्रतीक का संबंध संकेतित वस्तु (यथार्थ वस्तु) और संकेतार्थ (मानसिक संकल्पना) से होता है। 'संकेतित वस्तु का अर्थ उन भौतिक वस्तुओं के साथ जुड़ा हुआ है जो गैर–भाषायी तथा वास्तविक जगत की होती हैं। उस संकेतित वस्तु का मानव मस्तिष्क में जो बिंब बन जाता है वह संकेतार्थ है। यह संकेतार्थ, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, बौद्धिक, जातीय और परंपरागत परिवेशों से संबद्ध होता है।

* हिन्दी अनुवादक, दिलशाद एक्स., साहिबाबाद

प्रतीक भाषिक ध्वनियों का सार्थक और स्वतंत्र समूह है। प्रतीक के रूप में गृहीत शब्द या वाक्य की संकल्पना उन सभी वस्तुओं या भावों की सामान्यीकृत या मानसिक यथार्थता होती है जो निर्दिष्ट वस्तुओं या भावों को अपने भीतर समेट लेती है। इसे 'भाषिक प्रतीक' कहा जाता है। उदाहरण के लिए हमारे सामने जो संकेतित वस्तु है वह 'फूल' है, इस रूप और आकार की संकल्पना मानव मस्तिष्क में एक बिंब के रूप में बैठ गई है जिसे संकेतार्थ कहते हैं। ध्वनियों के संयोजन से यह 'फूल' भाषिक प्रतीक बन गया है जो ध्वन्यात्मक होता है किन्तु अर्थ के रूप में उसमें संकेतित वस्तु और संकेतार्थ समाविष्ट रहते हैं। 'फूल' कई प्रकार के होते हैं–लाल फूल, पीला फूल, सफेद फूल, गुलाब का फूल, गेंदे का फूल आदि, किंतु उस शब्द 'फूल' के रूप में जो संकल्पना पैदा होती है, वह एक है और वह भी साधारणीकृत तथा सामान्यीकृत होती है। अतः इसमें वस्तु की अपनी विशिष्टता का लोप हो जाता है। यदि किसी विशेष फूल की संकल्पना को लाना होगा तो उसके साथ विशेषण लगाना होगा जैसे–वह पीला फूल देखो, यह गुड़हल का फूल है। यह उल्लेखनीय है कि ये भाषिक प्रतीक मूल रूप में ध्वनिपरक होते हैं जो बाद में लिपिबद्ध हो जाते हैं। इस प्रकार प्रतीक में जातिपरक और विशिष्ट आयाम होते हैं।

'संकेतित वस्तु और प्रतीक का संबंध मानसिक रूप से वास्तविक माना जाता है क्योंकि यह वक्ता और श्रोता के मस्तिष्क में संकल्पना के साथ रहता है लेकिन प्रतीक और यथार्थ वस्तु के बीच जो संकल्पनात्मक संबंध रहता है वह नैसर्गिक या प्राकृतिक न होकर यादृच्छिक होता है। इसलिए विभिन्न भाषाओं में विभिन्न शब्दों का प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए, हिन्दी का शब्द 'कुत्ता', संस्कृत में 'श्वान्', अंग्रेजी में 'डॉग' कहलाता है। इसी प्रकार 'पशु' यदि हिन्दी में जानवर का बोधक है तो 'मलयालम' में 'गाय' का। इस प्रकार संकेतित वस्तु, संकेतार्थ और प्रतीक का संबंध अनिवार्य रूप से स्थानवाची, कालवाची, सामाजिक–सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक कई रूपों में दिखाई देता है। इससे अपने–अपने परिवेश में अर्थ भी बदल जाते हैं। कभी–कभी यथार्थवस्तु नहीं भी होती है और संकल्पना भी प्रतीक का रूप धारण कर लेती है। उदाहरण के लिए, स्वर्ग–नरक, आदि प्रतीक परंपरागत संस्कार सापेक्ष या समाज–संदर्भित होते हैं और इनकी अपनी मानसिक संकल्पना बनी रहती है।

इस प्रकार भाषिक प्रतीकों का अभिप्राय वागेंद्रियों से निस्सृत उन ध्वनियों से है जो समूह रूप सार्थक एवं स्वतंत्र होती हैं। निश्चित या विशिष्ट वस्तुओं के भावों को अपने भीतर समाहित कर गृहीत शब्द, वाक्य की संकल्पना को वस्तुओं या भावों की सामान्यीकृत मानसिक यथार्थता में परिणत करती है। संकेतार्थ और संकेतित वस्तु अर्थ–बोध कराते हैं जिन्हें ध्वनियां व्यक्त करती हैं। संकेतित वस्तु, संकेतार्थ और ध्वनि मिलकर प्रतीक का निर्माण करते हैं। इन ध्वनि प्रतीकों की आंतरिक व्यवस्था होती है। इससे ध्वनिपरक एवं व्याकरणिक इकाइयां एक–दूसरे के साथ व्यवस्थित रूप में जुड़ी रहती हैं जिससे कथ्य व्यक्त होता है। ये भाषिक इकाइयां अपने आप में स्वायत्त न होकर संरचनात्मक संबंधों के प्रकार्य के रूप में कार्य करती हैं, जिसे भाषिक संरचना कहा जाता है।

वस्तुतः भाषिक प्रतीक कथ्य और अभिव्यक्ति का समन्वित रूप है। कथ्य के अभाव में अभिव्यक्ति तथा अभिव्यक्ति के अभाव में कथ्य को प्रतीक की संज्ञा नहीं दी जा सकती। जब प्रतीक के रूप में 'गंगा' शब्द का उच्चारण होता है तो प्राथमिक रूप से श्रोता के मस्तिष्क में उसका कथ्य उभरता है और 'गंगा' का रूप एवं गुण श्रोता के मस्तिष्क में प्रस्तुत हो जाता है। कथ्य और अभिव्यक्ति के अंतर संबंधों के कारण 'गंगा' शब्द अपने–आप में सिद्ध है। यदि यह असिद्ध होता है तो व्यक्ति विशेष या समाज विशेष के लिए। गंगा के पर्यायवाची 'मंदाकिनी', 'जाह्नवी' या 'त्रिपथगा' शब्द का उच्चारण करने से यदि श्रोता 'गंगा' के कथ्य को नहीं पकड़ पाता है तो उसके लिए वह असिद्ध हो जाते हैं। इन्हीं अंतर संबंधों के कारण प्रतीक स्वतः सिद्ध हैं। हर संकेतित वस्तु के लिए हर भाषा का ध्वनि संयोजन अपना–अपना होता है। इसलिए उनके अलग–अलग प्रतीक होते हैं जैसे–हिन्दी में 'छात्र', अंग्रेजी में 'स्टूडेंट', फ्रांसीसी में 'एतुदिआं' प्रतीक हैं। इस दृष्टि से प्रतीकों में यह यादृच्छिकता मिलती है।

हर भाषा में प्रतीकों की एक व्यवस्था होती है और वे एक नियम के अनुसार अपने–अपने स्थान पर

प्रयुक्त होते हैं, जिन्हें वाक्य व्यवस्था भी कहा जाता है। हिन्दी की वाक्य व्यवस्था में कर्ता, कर्म, क्रिया होता है, जैसे–मोहन सेब खाता है। अंग्रेजी कर्ता, क्रिया और कर्म होता है, जैसे 'Mohan eats an apple' इस प्रकार हर भाषा की अपनी संरचनात्मक व्यवस्था होती है।

इस प्रतीक व्यवस्था में कई सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक आदि कई परिवेश और संदर्भ समाहित रहते हैं। उदाहरण के लिए, 'रोटी' प्रतीक में कथ्य–आग से पकाई हुई आटे की एक वस्तु जिसे मनुष्य खाता है, लेकिन विशेष संदर्भ में यही रोटी 'गरीबी' के अर्थ में भी प्रयुक्त होती है। स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद हमारे नेताओं ने देश को संबोधित करते हुए कहा था कि 'हमने कमल की लड़ाई जीत ली है, अब रोटी की लड़ाई लड़नी होगी'। कमल 'स्वतंत्रता' का अर्थ दे रहा है और रोटी 'गरीबी' का अर्थ दे रही है।

सांस्कृतिक संदर्भ में अस्थियों का विसर्जन नदी में प्रवाहित करने के अर्थ में है। यह अभिव्यक्ति भाषा–प्रयोक्ता की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की ओर संकेत कर रही है। इसी प्रकार 'हरिजन' शब्द–भक्तिकाल में भक्तों के लिए प्रयुक्त होता था और गांधी युग में दलित वर्ग के लिए प्रयुक्त होता था। लेकिन आज इस शब्द का प्रयोग समाप्त प्राय है। इन प्रतीकों के माध्यम से समाज परस्पर विचार–विमर्श करता है, क्योंकि यह प्रतीक अपने समाज के सामजिक संदर्भों, सांस्कृतिक रूपों, ऐतिहासिक संदर्भों में प्रयुक्त होता है।

इस प्रकार प्रतीक में कथ्य की अभिव्यक्ति मुख्यतः चार आयाम से हो सकती है, बोधात्मक, संरचनात्मक, सामाजिक और सांस्थानिक आयाम। एक, बोधात्मक अर्थ से तात्पर्य कोशगत अर्थ से है। इससे वस्तु या पदार्थ की जातीय और विशिष्ट संकल्पना मनुष्य के भीतर उभरती है, और वह पदार्थ वस्तु के रूप में दिखाई देती है। उदाहरण के लिए, 'गुलाब' या 'शेर' शब्द से क्रमशः 'फूल' या 'पशु' का भाव निकलता है। दो, संरचनात्मक अर्थ का आधार भाषिक संरचना है। इसमें शब्द या वाक्य की संरचना से अतिरिक्त अर्थ भी निकलता है। उदाहरण के लिए, 'जलज' और 'पंकज' शब्द में जल से उत्पन्न हुआ के भाव से 'कमल' के फूल की जातीय संकल्पना उद्‌भूत होती है, लेकिन 'जलज' शब्द मोह–माया से मुक्त व्यक्ति का अर्थ भी देता है और 'पंकज' शब्द 'गुदड़ी के लाल' या किसी निम्न जाति से उत्पन्न महापुरुष का भाव उत्पन्न करता है। तीन, इसका संबंध सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था अथवा परिवेश से जुड़ा हुआ है। वह यथार्थ वस्तु से भिन्न अर्थ प्रदान करता है जैसे–तू, तुम, आप मध्यम पुरूष सर्वनाम के प्रयोग से वक्ता और श्रोता के सामाजिक संबंधों का परिचय मिलता है। किसी मृत व्यक्ति के 'दाह संस्कार' अथवा 'फूल चुनना' या 'फूल प्रवाहित करना' अभिव्यक्तियों में सांस्कृतिक परिवेश निहित रहता है। चार, सांस्थानिक अर्थ लाक्षणिक और व्यंजनापरक अर्थ है। इसमें ऐसे अर्थ की व्यंजना होती है जिसका समाहार मूल अर्थ में नहीं हो सकता है। उदाहरण के लिए, अरे! रमन का दिमाग बहुत ऊँचा है। इस अभिव्यक्ति में 'ऊँचा' शब्द रमन के अहंकार का अर्थ व्यंजित कर रहा है। इस प्रकार अर्थ का मूल वाच्यार्थ ही होता है जो वास्तविक संकल्पना है। संकेतार्थ में मुख्यतः दो अर्थ निहित रहते हैं। एक बाह्य जगत की वस्तुओं का कोशगत अर्थ या वाच्यार्थ और दूसरा अन्य संदर्भों में अतिरिक्त अर्थ। संकेतित अर्थ इन दोनों अर्थों को अपने भीतर एक साथ समेटे रहता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि भाषा प्रतीकों की आंतरिक व्यवस्था है। इसे भाषिक संरचना भी कहते हैं। इसमें ध्वनिपरक एवं व्याकरणिक इकाइयां एक–दूसरे के साथ व्यवस्थित रूप में जुड़ी रहती हैं जिससे अर्थ का बोधन होता है। ये भाषिक इकाइयां अपने–आप में स्वायत्त न होकर संरचनात्मक संबंधों के प्रकार्य के रूप में कार्य करती हैं। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर यह अज्ञात रूप से या सुसुप्त भाव से पड़े होते हैं। वह अपनी सर्जना शक्ति के द्वारा उन नियमों के आधार पर ऐसे नए वाक्यों का निर्माण करता है जो न कभी पहले बोले गए हों न कभी सुने गए हों। ये वाक्य व्याकरण और अर्थ के धरातल पर समझे जाते हैं। अमरीकी भाषाविज्ञानी नाम चॉम्स्की ने अज्ञान में पड़े इन नियमों को व्यक्ति की भाषिक क्षमता कहा है और व्यवहार के स्तर पर इन नियमों के सामने आने को भाषिक व्यवहार। 'उनके मतानुसार भाषिक व्यवहार परिस्थितिजन्य, व्यक्ति सापेक्ष, और उद्देश्यपूर्ण होने के कारण भाषा का विकृत रूप है इसलिए भाषा के अमूर्त तथा सार्वभौमिक रूप को समझने के लिए भाषिक क्षमता को ही भाषा विश्लेषण का विषय बनाया जाना चाहिए। ❑

हिन्दी वर्तनी संबंधी समस्याएं एवं उनका समाधान

आर.पी. जोशी*

हिन्दी या उसकी वर्तनी के संबंध में चर्चा करने से पूर्व हमें यह जान लेना आवश्यक होगा कि भाषा क्या है क्योंकि हिन्दी और उसकी वर्तनी दोनों ही भाषा का एक अभिन्न अंग हैं।

आम बोलचाल में कहें तो भाषा अभिव्यक्ति का एक माध्यम होती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। हम समाज में रहते हैं और अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक–दूसरे के साथ संप्रेषण करते हैं। संप्रेषण के लिए किसी माध्यम की जरूरत होती है और वह माध्यम बनती है भाषा। दूसरे शब्दों में भाषा अभिव्यक्ति या संप्रेषण का एक माध्यम होती है।

भाषा का आधार ध्वनियां होती हैं और भाषा की सबसे छोटी इकाई 'अक्षर' कहलाती है। अक्षरों का सार्थक समूह 'शब्द' कहलाता है। भाषा के शब्दों को उस भाषा के व्याकरण के अनुसार सही–सही लिख देना उस शब्द की 'वर्तनी' कहलाती है।

ऊपर भाषा की व्याख्या करते हुए यह बताया गया था कि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। भाषा को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा के निम्नलिखित दो रूपों का प्रयोग किया जाता है:–

1 मौखिक भाषा 2 लिखित भाषा

मौखिक भाषा – ध्वनियों के माध्यम से किया जाने वाला सम्प्रेषण मौखिक भाषा कहलाती है। साधारण बोलचाल में कहें तो वक्ता और श्रोता के बीच ध्वनियों के माध्यम से होने वाले संवाद को मौखिक भाषा कहते हैं।

लिखित भाषा–भाषा की ध्वानियों को जब लिपिबद्ध कर दिया जाता है तो वह भाषा का लिखित स्वरूप कहलाता है। हिन्दी जिस लिपि में लिखी जाती है, उसे 'देवनागरी' लिपि कहते हैं।

जैसा कि हमने पहले स्पष्ट किया है कि भाषा की सबसे छोटी इकाई अक्षर कहलाती है और भाषा के

अक्षरों को निम्नानुसार दो समूहों में बांटा जा सकता है:–

1 स्वर 2 व्यंजन

स्वर – स्वर वे ध्वनियां होती हैं जिनका उच्चारण करते समय कोई गतिरोध उत्पन्न नहीं होता।

व्यंजन – व्यंजन वे ध्वनियां होती हैं जिनका उच्चारण करते समय गतिरोध उत्पन्न होता है।

एक अच्छी एवं वैज्ञानिक भाषा का सबसे प्रमुख गुण यह होता है कि वह जैसी बोली जाए वैसी ही लिखी जाए और जैसी लिखी जाए वैसी ही बोली जाए। दूसरे शब्दों में, भाषा का ध्वन्यात्मक होना उसका सबसे बड़ा गुण है। भाषा का लिखित रूप और भाषा का मौखिक रूप एक–दूसरे के जितने करीब होंगे, भाषा उतनी ही अधिक वैज्ञानिक मानी जाएगी। हिन्दी इस कसौटी पर खरी उतरती है जिसे निम्नलिखित उदाहरण से समझा जा सकता है:–

अंग्रेजी के शब्द 'Rama' को हिन्दी में राम, रमा या रामा पढ़ा जा सकता है। दूसरे शब्दों में, अंग्रेजी के एक शब्द को हिन्दी में तीन प्रकार से लिखा जा सकता है जो भाषा की त्रुटि मानी जाती है। हिन्दी जैसी बोली जाती है, वैसी ही लिखी जाती है और जैसी लिखी जाती है, वैसी ही बोली जाती है यानि भाषा के मौखिक एवं लिखित रूप के बीच का अन्तर बहुत कम है।

* पूर्व सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), एअर इंडिया लि., नई दिल्ली

अब प्रश्न यह उठता है कि यदि हिन्दी भाषा के दोनों रूपों में सामंजस्य है तो फिर वर्तनी संबंधी गलतियां क्यों होती हैं। वर्तनी संबंधी गलतियां होने के कई कारण होते हैं जिसमें सबसे पहला है– व्याकरण संबंधी नियमों की जानकारी न होना। आमतौर पर एकवचन के वे शब्द जिनके अन्त में 'दीर्घ इ' आती है, बहुवचन बनाते समय वह 'ह्रस्व इ' में परिवर्तित हो जाती है, जैसे– कर्मचारी–कर्मचारियों, कठिनाई –कठिनाइयां आदि। किन्तु अज्ञानतावश इन शब्दों को 'कर्मचारीयों' या फिर 'कठिनाईया' के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। 'र' के साथ 'ह्रस्व इ, उ' या 'दीर्घ उ' के प्रयोग में अमूमन गलती हो जाती है। 'रुपए' को 'रूपए' और 'रूप' को 'रुप' लिख दिया जाता है। इसी प्रकार 'और' तथा 'ओर' के प्रयोग में भी गलतियां होती हैं। 'ए' और 'ऐ' का मात्रा के रूप में प्रयोग करते समय भी गलती हो जाती है जैसे 'सैनिक' शब्द की ही तरह 'ऐनक' शब्द लिख दिया जाता है, ऐसे ही 'नेक' की तरह ही 'ऐक' लिख दिया जाता है।

'ड' और 'ड़' तथा 'ढ' और 'ढ़' के प्रयोग में भी गलती हो जाती है जैसे 'सड़क' के स्थान पर 'सडक' का प्रयोग होता है। इसी प्रकार 'पढ़ाई' के स्थान पर 'पढाई' शब्द का प्रयोग कर दिया जाता है। यही नही 'ड़' और 'ढ़' को भी एक ही अक्षर मान कर प्रयोग किया जाता है। जैसे 'बड़ी दुकान' जहां बड़ी से तात्पर्य big से है और 'दुकान बढ़ा दी गई 'बढ़ा' से तात्पर्य enlarged से है।

गलत उच्चारण के कारण भी कई शब्दों की वर्तनी गलत हो जाती है जैसे अंग्रेजी के 'केस' को 'केश' लिख दिया जाता है। इसी प्रकार 'शशि' को 'शसि' तथा 'सड़क' को 'सरक' लिखते हुए आपने देखा होगा। 'बादाम' को 'बदाम', 'आगामी' को 'अगामी' तथा 'व्यावसायिक' को 'व्यवसायिक' लिखा जाता है।

संयुक्ताक्षर में 'र' के प्रयोग में भी बहुत गलतियां हो जाती हैं जैसे 'आशीर्वाद' को 'आर्शीवाद' तथा 'परिवर्तन' को 'परिर्वतन' कर दिया जाता है। इसी प्रकार 'क्रम' एवं 'कर्म' में भेद नहीं किया जाता।

सर्वनाम के साथ विभक्तियों को मिलाकर लिखना चाहिए जो अलग–अलग लिख दिए जाते हैं, जैसेः–

मुझ को	मुझको
तुम से	तुमसे
मैं ने	मैंने

हिन्दी में वर्तनी संबंधी गलतियों से बचने का महत्वपूर्ण तरीका यही है कि शब्द का उच्चारण ठीक ढंग से किया जाए। ध्वन्यात्मक भाषा होने के कारण यदि शब्द का उच्चारण गलत किया जाएगा तो उसकी वर्तनी के गलत होने की गुंजाइश अधिक होगी। ❑

बदहाली पर हंसे मत

लघु कथा

बगीचे में खूबसूरत फूल खिला था। उसकी खूबसूरती के क्या कहने ? ठीक उसके पास एक काला पत्थर भी पड़ा था। उस पत्थर को कोई नहीं देखता था। आते–जाते उसे बस ठोकरें ही लगती थीं। जब भी उसे ठोकर लगती तो फूल हंसने लगता था। वह कहता, 'देखो तो, मुझे देख कर लोग कितने खुश होते हैं। वह मुझे देखते ही रहना चाहते हैं। लेकिन तुम्हें तो बस ठोकरें ही लगती है।' ये सुनकर पत्थर बेचारा अपनी किस्मत पर कसमसा कर रह जाता है।

एक दोपहर की एक मूर्तिकार वहां से गुजरा उसने फूल को देखा, फिर पत्थर को। उसने उस पत्थर को उठा लिया और उसे अपने साथ घर ले गया। बाद में उसे तराश कर भगवान की खूबसूरत मूर्ति बना दी। बाद में वह मूर्ति एक मंदिर में स्थापित हो गई। एक दिन कोई बगीचे से गुजरा। उसे मंदिर जाना था। उसे लगा कि चलो फूल तोड़ लेते हैं। मंदिर में चढ़ा देंगे। उसने फूल की उसी मूर्ति के सामने अर्पित कर दिया।

मूर्ति बने पत्थर ने उसे पहचान लिया। फूल ने भी उसे पहचाना। तब मूर्ति ने कहा, 'तब तो तुम मुझ पर हंस रहे थे। आज मेरे चरणों में पड़े हो।'

फूल ने सिर झुका कर कहा, 'अब मैं समझ चुका हूं। जिंदगी को कोई भरोसा नहीं है। कभी किसी की बदहाली को देख कर हंसना नहीं चाहिए। मुझे अपने किए पर पछतावा है।

दुनिया एक खूबसूरत किताब है।

भारोपीय भाषा परिवार और हिंदी

मिश्री लाल मीना*

संस्कृत को विश्व की सभी भाषाओं की जननी कहा गया है, किन्तु भाषा की उत्पत्ति और उसकी जनमानस में ग्राह्यता भाषा–विज्ञान के सूत्रों में समाहित है।

भारतवर्ष में और यूरोपीय महाद्वीप में बोली या प्रयोग की जाने वाली भाषाओं के आपसी मिलान एवं सामंजस्य को देखते हुए एक परिवार का जन्म हुआ जिसे "भारोपीय भाषा–परिवार" कहा जाता है। हम यहाँ कुछ ऐसे हिंदी भाषा तथा अंग्रेजी भाषा के शब्दों को उद्धृत करेंगे जो लगभग उच्चारण एवं वर्तनी प्रयोग में समान हैं:–

- नाम या अंग्रेजी भाषा के name में उच्चारण की समानता है: समान अर्थ भी है।
- अंग्रेजी के two 'टू' और हिंदी के 'दो' में ओष्टक उच्चारण की समानता है।
- अंग्रेजी के 'हसबैण्ड और हिंदी के 'हस्तबध' शब्द की उच्चारणिक तथा शाब्दिक अर्थ 'पति' शब्द से है।
- 'त्री' और three 'थ्री' दोनो में त वर्ण (त, थ, द, ध, न) तथा उच्चारण एवं शाब्दिक अर्थ की समानता है।
- हिंदी के षष्ट तथा अंग्रेजी के सिक्स में स वर्ण (श स ष ह) की समानता है। यही 'सेवन एवं सात में' भी है।
- 'अष्ट' और eight 'ऐट' में उच्चारण एवं अ–वर्ण (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ) की समानता है।
- 'नौ' एवं nine 'नाईन' की उच्चारण के साथ शाब्दिक तथा वर्णनात्मक समानता है।
- new 'न्यू' एवं 'नव' की वार्णिक उच्चारणिक तथा शाब्दिक समानता है।
- हिंदी भाषा का सर्वेक्षण एवं अंग्रेजी भाषा का survey (सर्वे) का एक ही उच्चारण एवं शाब्दिक अर्थ है।
- हिंदी में 'गोदाम' एवं अंग्रेजी के godown गोडाउन का उच्चारण एवं शाब्दिक व वार्णिक 'क, ख, ग, घ' की समानता है।
- अंग्रेजी वर्णमाला के 'ए, बी, सी, डी' से 'अ, ब, स, क' उच्चारण हिंदी वर्णमाला के अनुंसार ही है। जैसे ई से 'ई', एफ से 'एफ', जी से 'ज' (ग), आई से 'आई', जे से 'ज', के से 'क', एल से 'ल', एम से 'म', एन से 'न' ओ से 'ओ', पी से 'प', क्यू से 'क्यू', आर से 'र', एस से 'स' टी से 'ट', यू से 'य', वी से 'व', 'एक्स' तथा वाई से 'य' तथा जेड़ से ज का उच्चारण वार्णिक (वर्तनी) एवं लिपि क्रम के अनुसार ही है।

इसी प्रकार हज़ारों शब्द और उनका उच्चारण हिंदी एवं अंग्रेजी में समान हो सकते हैं जिनके शोध की आवश्यकता है।

यह भी दृष्टव्य है कि जो समानता हिंदी एवं अंग्रेजी की वर्णमाला और उच्चारण में है, वह द्रविड़ परिवार की भाषाओं जैसे कन्नड़, तमिल या मलयालम में नहीं है। वर्तनी की दृष्टि से ये दोनों भाषायें बायें से दाएं एवं शब्द विन्यास की दृष्टि से समान हैं, जैसे कोमा या पूर्ण विराम इत्यादि किन्तु अन्य भाषाओं में इसमें बहुत भिन्नता मिलती है। अतः हम यह कहें कि ये दोनो भाषाएं एक–दूसरे की दुश्मन न होकर एक दूसरे के समानान्तर चलती है और दोनो भाषाओं की जानकारी एवं ज्ञान के बिना संसार में समर्थ एवं योग्य प्रतिभावान व्यक्ति नहीं कहलाया जा सकता।

* उप महाप्रबंधक (निरीक्षण), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

क्या आप?

- स्वयं हिंदी में कार्य करते है और दूसरों को भी प्रेरित करते हैं?
- अपने कार्यस्थल पर हिंदी के प्रति अनुकूल वातावरण बनाए रखते हैं?
- अपने नामपट्ट, विजिटिंग कार्ड, नोटिस बोर्ड पर सूचनाएं हिंदी में भी तैयार करते हैं?
- तिमाही हिंदी प्रगति रिपोर्ट के तथ्यात्मक आंकड़े समय पर प्रस्तुत करते हैं?
- कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करते हैं?

यदि हाँ, तो आप राजभाषा के सच्चे हिमायती हैं।

राजभाषा हिंदी भावनात्मक एकता की प्रतीक है।

मूषक

रवि तिवारी*

चूहा स्तनधारी कषेरूक दण्डी जन्तु है जिनका सम्बन्ध गण रोडन्षिया से है। दाँतो की व्यवस्था और स्वरूप की विशेषताओं की वजह से चूहों को अन्य स्तनधारियों से आसानी से पहचाना जा सकता है। उनके दोनों निचले और ऊपरी जबड़ों में छेनी के आकार के छेदन दॉत जीवन पर्यन्त 25 से0मी0 प्रति वर्ष के हिसाब से निरन्तर विकसित होते रहते है। चूहों का एक अन्य विशेष गुण होता है – न्यूफोबिया अर्थात नई वस्तुओं से दूर रखने का स्वभाव।

चूहों का आर्थिक महत्वः– चूहों का मानव जीवन में अत्यधिक आर्थिक महत्व है क्योंकि यह खाद्य सामग्री को खा जाते है। चूहे न कि केवल खाद्यान्नों को खाते है अपितु उससे 20 गुना से अधिक अनाज अपने मल मूत्र बालों और कभी–कभी अपने मृत शरीर से दूषित कर देते है। पांसे समिति के रिपोर्ट के अनुसार चूहों की वजह से भण्डारण में प्रतिवर्ष लगभग 25 प्रतिशत खाद्यान्नों की क्षति होती है। एक अन्य अनुमान के अनुसार औसतन 6 चूहे मिलकर एक मनुष्य के बराबर खाद्यान्न खाते हैं तथा विश्व में चूहों की जनसंख्या मनुष्य की 6 गुनी है। इस तरह मनुष्यों के बराबर ही चूहे भी खाद्यान्न का उपभोग करते हैं। चूहों की इस विनाशकारी प्रवृत्ति को देखते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने 1975 में चूहों को ''राष्ट्रीय पीड़क (नेशनल पेस्ट)'' तथा ''दुश्मन नं. 1'' घोषित किया था। चूहों को पूर्व–वैदिक काल से ही मानव हेतु विनाशकारी माना जाता रहा है एक श्लोक मिलता है :–

अतिवृष्टि अनावृष्टि मूषिकाः शलभः सुकाः।
प्रत्यासन्नाश्च राजनः षड़ता स्मृता।।

भण्डारगृहों में पाए जाने वाले चूहों की प्रमुख प्रजातियां निम्नवत है :–

1. घरेलू चूहा, 2. चूही अथवा चुहिया, 3. विदेशी चूहा, 4. छोटी घूस 5. बड़ी घूस

मूषक नियन्त्रण :– /प्रबन्धन

मूषक नियन्त्रण हेतु निम्नलिखित निधियां अनुशासित की जाती हैं :–

1. **गैर रसायनिक** 2. **रसायनिक**

गैर–रसायनिक

(क) भौतिक विधियां :–

मूषक अभेधकार्य :– भण्डारगृहों का निर्माण करवाते समय निम्न मूषक अभेध निर्माण कार्य करवाना चाहिए।

1. गोदाम आबादी से बाहर ऊँचाई पर तथा सीमेंट की चिनाई से बना होना चाहिए।

चूहों की विभिन्न प्रजातियाँ

* कनिष्ठ तकनीकी सहायक, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

वैज्ञानिक नाम	चुही या चुहिया	घरेलू चूहा	विदेशी चूहा	छोटी घूस	बड़ी घूस
	मस मस्कुलस *mus musculus*	रैट्स रैट्स *rattus rattus*	रैट्स नावेजीकस *rattus norvegicus*	बेण्डीकोटा वेंगालेसिस *bandicota bengalensis*	बेण्डीकोटा इण्डिका *bandicota idicaa*
बाह्य संरचना बाल तथा शरीर	रंग गहरा भूरा से बालुई भूरा। बाल छोटे और समतल निचले हिस्से का रंग सफेद से हल्का मटमैला।	रंग हल्का धुँधला से काला। पेट पर खुरदुरे बाल।	रंग भूरा, पेट का रंग सफेद। त्वचा नरम।	शरीर मोटा और भद्दा। रंग काले भूरे से काला।	रंग गहरा भूरा से काला फर मोटी खुरदुरी व कॉटेंदार
आवास	मनुष्यों के साथ	मनुष्यों के साथ	मनुष्यों के नजदीक आवास बनाते पर मनुष्यों से दूर रहते है।	मनुष्यों के नजदीक आवास बनाते पर मनुष्यों से दूर रहते है।	मनुष्यों के नजदीक आवास बनाते पर मनुष्यों से दूर रहते है।
वयस्क का वजन	20–30 ग्राम	150–250 ग्राम	200:300 ग्राम	300–350 ग्राम	800–1000 ग्राम
कुल लम्बाई	10–20 से0मी0	35–40 से0मी0	35–40 से0मी0	35–50 से0मी0	50–70 से0मी0
सिर एवं थूथन	नुकीला	लम्बा एवं नोकदार	चौड़ा एवं थोथरा	सुअर जैसा	चौड़ा एवं लम्बा
पूंछ की लम्बाई	सिर एवं शरीर से लम्बी	सिर एवं शरीर से लम्बी	सिर एवं शरीर से छोटी	सिर एवं शरीर से छोटी	सिर एवं शरीर से छोटी
कान	गोल एवं आँखों तक फैले	बड़े–बड़े छितरे एवं बालदार	छोटे फरदार मोटे व अपारदर्शी	बड़े गोल मोटे बिना बालों के अपारदर्शी	छोटे गोल अपारदर्शी मोटे बिना बालों के
मादा में स्तनों की संख्या	8	10	12	12–18	12–20
मेंगनी	बिखरी हुई	बिखरी हुई एवं केले की आकार की	समूह में तकली के आकार की	छितरी व अण्डाकार	छितरी एवं तकली के आकार के।
जीवन चक्र	प्रजनन वर्ष भर रहता है और मादा प्रति वर्ष 8 बार तक बच्चे देती है गर्भाविधि लगभग 19 दिन होती है तथा एक बार में 5 से 6 बच्चे दिये जाते है।	प्रजनन वर्षभर एक बार में 5 से 7 बच्चे देती है। 25 दिनों की गर्भाविधि।	प्रजनन वर्ष भर एक बार में 6 से 14 बार बच्चे देती है। गर्भाविधि 4 सप्ताह, एक बार में लगभग 22 बच्चे देती है।	प्रजनन वर्ष भर एक बार में 5 से 8 बार बच्चे देती है।	प्रजनन वर्ष भर एक बार में 5 से 8 बार बच्चे देती है।
स्वभाव	मुख्यतः निसाचर, घरों में रहना पसन्द करतें है।	मुख्यतः निसाचर, अच्छा तैराक व आरोहक।	गटर, नालों में रहना पसन्द करता है, अच्छा तैराक।	बिल बनाने में विशेषज्ञता, अच्छी तैराक, गुस्सैल व आक्रमणशील।	घनी आबादी, अनाज की मंडियों, गांवों के आस–पास पाया जाता है। मुख्यतः अनाज खाता है।

एक दूसरे का सम्मान और शिष्टाचार ही संस्कृति की आधारशिला है।

2. सभी निकास द्वार जैसे खिड़कियां, रोशनदान आदि 24 गेज 1/4'' (0.6 से0मी0) की धातु की बनी जालियों से बन्द कर देना चाहिए।

3. दरवाजे और फर्श के बीच का फैसला 1/4'' (0.6 से.मी.) से अधिक नही होना चाहिए दरवाजे के निचले हिस्से में 9'' (25 से0मी0) धातु की चादर फिट करवानी चाहिए।

4. पक्की नींव 03 फीट गहरी व प्लेटफार्म जमीन से ऊपर 03 फीट ऊँचा होना चाहिए। स्वचलित दरवाजों का निर्माण करवाना चाहिए।

2 स्वच्छता व सफाई %& चूहों को जीने के लिए दो कारक परम आवश्यक है :–

(1) भोजन (2) सुरक्षा

यदि दोनों में से एक को समाप्त कर दिया जाय तो वो जीवित नहीं रह सकते हैं। समय–समय पर भण्डारगृह का निरीक्षण करना चाहिए, यदि निरीक्षण के समय चूहों के आने–जाने का मार्ग बिल आदि जानकारी में आता है, तो उसे बन्द कर देना चाहिए। गोदाम के अन्दर बाहर किसी प्रकार का कूड़ा करकट इकट्ठा नही होना चाहिए। परिसर के अन्दर छोटी–छोटी झाड़ियाँ एवं गोदामों के ऊपर लटकती हुई पेड़ों के टहनियों की सफाई कर देनी चाहिए ।

यांत्रिक विधियां :–

(1) चूहेदान द्वारा विपाशन या ट्रेपिंग %& चूहों को चूहेदानी में फँसाने की विधि अत्यधिक लोकप्रिय, प्राचीन व सामान्य विधि है यह वास्तव में चूहों की जनसंख्यां कम कर देता है, परन्तु उसके प्रजनन पर नियंत्रण नही कर पाता जिससे चूहों की आबादी पर कोई काबू नही हो पाता। पकड़े गये चूहों की पानी में डुबो कर मार डालना चाहिए तथा उसके पश्चात जमीन में दफन कर देना चाहिए।

चूहेदानी साफ एवं दुर्गन्धहीन होनी चाहिए। चूहेदानी चूहों के आने जाने के स्थाई मार्गों पर तथा दीवारों से समकोण बनाते हुए रखी होनी चाहिए ताकि दोनों ओर से चूहे प्रवेश कर सके। चूहेदानी में चूहों को आकर्षित करने हेतु चूहों को उनका पसंदीदा भोज्यपदार्थ जैसे रोटी का टुकड़ा, मूँगफली का जमा तेल, मछली, पनीर आदि का प्रयोग लुभवाने चारे के रूप में करना चाहिए।

(2) गमबोर्ड द्वारा ट्रेपिंग %&चूहे पकड़ने की यह नवीन पद्धति है। गमबोर्ड ग्लूबोर्ड को बनाने के लिए लकड़ी या कार्ड बोर्ड के ऊपर गोंद का एक पतला लेप लगा दिया जाता है जैसे ही चूहा बोर्ड पर पैर रखता है, बोर्ड से चिपक जाता है और फिर जितना छूटने की कोशिश करता है, उतना ही चिपकता जाता है। इस बोर्ड को चूहे समेत जमीन के अन्दर गाड़ दिया जाता है। गमबोर्ड को प्रयोग आजकल ऑफिसों घरों, रेलवे कोचों आदि के अन्दर चूहा पकड़ने हेतु काफी किया जा रहा है।

(3) अन्य विधियां %&

- डण्डे, झाड़ू या अन्य किसी चीजों से चूहों को मारना है।
- चूहे के बिलों को काँच के टुकड़े एवं रेत के मिश्रण से भरना।

- चीनी की चासनी में डूबे हुए छोटे–छोटे रुई के टुकड़ो को प्रलोभन चारे के रूप में प्रयोग करना।

(ग) संवर्धक %&

- खेतों की गहरी जुताई (4.5 से0मी0) करने से चूहों के अधिकांश बिल नष्ट हो जातें है तथा चूहे बाहर निकलने पर अपने प्राकृतिक शत्रुओं के शिकार हो जाते है।
- खेतों में पानी भर देने से भी चूहों के बिल नष्ट हो जाते हैं।

(घ) जैविकः–

(1) परभक्षीः– इसका प्रयोग केन्द्रीय भण्डारण निगम के गोदामों में तो नही किया जा सकता परन्तु किसानों द्वारा खेती में चूहा नियंत्रण हेतु चूहों के प्राकृतिक शत्रु यथा बिल्ली, कुत्ता, साँप, उल्लू, गरूड़ आदि को प्रशिक्षण प्रदान करके चूहों की आबादी पर नियंत्रण किया जा सकता है।

(2) परजीवी :– साल्मानेला विषाणु द्वारा चूहों की आबादी पर नियंत्रण किया जाना सम्भव है। परन्तु चूहों के अतिरिक्त अन्य जीवों के लिए हानिकारक होने के कारण इनका प्रयोग सामान्य परिस्थितियों में नहीं किया जा सकता है।

(च) रसायनः– ऐसे जैविक जो रसायनिक क्रिया के द्वारा कृन्तक (चूहों) को मार देते हैं। कृन्तकनाशी रसायन कहलाते हैं। क्रिया के आधार पर कृन्तकनाशियों को दो भागों में बाँटा जा सकता है :–

(1) एक खुराकीय विष
(2) बहु खुराकीय विष

1 एक खुराकीय विष :– यह अत्यन्त विषैले रसायन होते हैं जिन्हें केवल एक बार खा लेने से ही चूहों की मृत्यु हो जाती है इसका प्रयोग सुगम आसान एवं कम खर्चीला है, परन्तु इनका दोष यह है कि यह चूहों में इस विष के प्रति सकुंचाहट और चारे के प्रति अरुचि पैदा करते हैं।

प्रयोग की विधिः– चूहे नई वस्तुओं के प्रति बहुत शंकालु होते हैं, अतः उन्हें अभ्यस्त करने हेतु अनुशंसित चारा तैयार कर विष पिलाये बिना ही 2 से 4 दिन तक प्रयोग करते हैं। तत्पश्चात उसी चारे में विष मिलाकर प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार काफी चूहे एक साथ मर जाते हैं। बिना विष पिलाये चारे का प्रयोग को प्रीबेटिंग कहा जाता है। जिंक फास्फाइड, बैरियम कार्वोनेट, रेड सिक्वल और ए.एन.टी.यू. आदि का प्रमुख एक सुराकीय कृन्तकनाशी है।

विषैले चारे का संगठनः–

मोटे घिसे हुए खाद्यान्न	94 प्रतिशत
शक्कर व चीनी	2 प्रतिशत
खाद्य तेल	2 प्रतिशत
जिंक फास्फाइड	2 प्रतिशत

(2) बहुखुराकीय विष :– चूहों को मारने हेतु आंतचन रोधियों (एण्टीकोगुलेंट) का प्रयोग एक आधुनिक विधि है ये हाइड्राक्सी क्यूमेरिन का मिश्रण होते है, जिनका यदि प्रर्याप्त मात्रा में लम्बे समय तक प्रयोग किया जाए तो स्तनधारियों में रक्तस्राव हो जाता है। इनका प्रमुख गुण यह है कि यह अपने प्रति चूहों में संकुचाहट नहीं पैदा करते हैं परन्तु इनको खाने से चूहा तुरन्त नहीं मरता है, अपितु–धीरे–धीरे मरता है।

बहुखुराकीय विष के तीन नुक्से उपलब्ध हैं :–

(1) प्रयोग के लिए तैयार :– बाजार में तुरन्त उपयोग योग्य प्रतिस्कन्ध विष उपलब्ध है, इन्हें जहां आवश्यकता हो उस स्थान पर रखा जाता है। चूहे उन्हें एक ही खुराक में खाकर धीरे–धीरे मरने लगते है।

(2) शुष्क बेट :– प्रतिस्कन्ध विष के शुल्क बेट को निम्न प्रकार से तैयार किया जा सकता हैः–

मोटा पिसा खाद्यान्न	90 ग्राम
खाद्य तेल	02 ग्राम
शकर या चीनी	03 ग्राम
प्रतिस्कन्ध	05 ग्राम

इन चारों को अच्छी तरह से मिलाकर उपरोक्त वर्णित स्थानों पर रखा जाता है, जिनको खाने के बाद चूहे मरने लगते है।

(3) पानी में घुलनशील बेटः– यह बेट निम्न प्रकार से बनाया जाता हैः

प्रतिस्कन्ध विष	1 भाग
पानी	13 भाग

इस विष को प्यालियों में वांछित स्थान पर रखा जाता है।

चूहे के बिलों का उपचार :– बेटिंग द्वारा और प्रधूमन द्वाराः

(1) बेटिंग द्वाराः– बिलों में चूहे पर काबू पाने के लिए किसी प्रीबेटिंग के बिना कागज के पुड़ियो में विशाक्त चारा रखकर चूहों के बिलों में डाल दें। इसको टार्पीडो अथवा होल बेटिंग कहा जाता है।

(2) प्रधूमन द्वाराः– जहरीली गैसों के प्रयोग को प्रधूमन कहते है। चूहे के बिलों को प्रधूमन करने हेतु प्रमुख दो गैसों का प्रयोग किया जाता है।

(1) फास्फीन गैसः– ए0एल0पी0 एल्युमिनियम फास्फाईड का संक्षिप्त नाम है जोकि गोलियों के रूप में बिकता है इन गोलियों में एल्युमिनियम फास्फाईड के अलावा अन्य प्रदार्थ कार्बामेट भी होते है। नम वायु में खुली रहने पर गोली में से जो फास्फाईन, अमोनिया और CO_2 गैस होती है वह खेतों, गोदामों व घर की चारदीवारी के बाहर स्थित बिलों में चूहों पर नियंत्रण रखने हेतु निकलती है। एल्युमिनियम फास्फाईड की 0.6 ग्राम की गोलियां काफी सिद्ध हुई हैं, जब गोली को बिल में रखते हैं तो उसमें से फास्फीन गैस निकलती है, जो बिल में फैल जाती है और चूहों को मार देती है।

(2) साइनो गैस :– कैल्सियम साईनाफाइड को प्रधूमक के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, बिलों में पम्प एप्लीकेटर से 10–20 ग्राम प्रधूमन इस्तेमाल किया जाता है, तत्पश्चात बिलों को अच्छी प्रकार से बन्द कर दिया जाता है।

प्रमुख कृन्तकनाशी रसायनः– सामान्य रूप से आज कल दो कृन्तकनाशीयों का अधिक प्रयोग किया जा रहा है।

(1) जिंक फास्फाईड :– जिंक फास्फाईड का प्रयोग चूहे, घूसों तथा अन्य कृन्तको को लुभा कर मारने के लिए घर के बाहर खेतों में बागों में तथा अन्य आम खुली जगहों मे प्रयोग किया जाता है, जब कोई जन्तु जिंक फास्फाइड निगलता है, तो उसके आमाशय से निकलने वाला हाइड्रोक्लोरिक अम्ल, जिंक फास्फाइड से क्रिया करके फास्फाइन गैस बनाता है। फास्फीन एक बहुत जहरीली गैस है। जो जीव के लिए जीवन नाशक सिद्ध होती है। वास्तव में जिंक फास्फाइड मुँह के रास्ते आमाशय (पेट) में पहुँच कर आमाशय गैस उत्पन्न करता है। फास्फीन गैस आमाशय को पार करके शरीर की कोशिकाओं में पहुँच जाती है तथा कोशिकाओं की उर्जा निर्माण की प्रक्रिया बन्द हो जाने से कोशिकायें समाप्त होने लगती है जिससे जन्तु की मृत्यु हो जाती है। जिंक फास्फाइड शरीर की सभी कोशिकाओं को प्रभावित करता है परन्तु विशेषतः हृदय, फेफड़ा, और यकृत की कोशिकायें इसके प्रमुख लक्ष्य होती है, जिंक फास्फाईड उन वस्तुओं के लिए और अधिक घातक सिद्ध होता है जो उल्टी नहीं कर सकते यथा चूहा, चूही खरगोश आदि।

मात्रा :–

क्रमांक	इस्तेमाल की परिस्थिति	लक्षित जन्तु	अमिष की मात्रा	
			सक्रिय तत्व	टेक्निकल
1	खेत के चूहों के नियंत्रण के लिए	रेट्स–रेट्स आर0 मेहोंडा	1.5 से 2.5	1.875 से 3.125
2	निवासी क्षेत्र	बेडिकोटा नेगलेशिस, टेंटरा इण्डिकामस टारिक्स मरक्युलस मेरिओनस हरिआनेरेट्स नर्विनस संकस कैसलेंस	–	–

विषाक्तता के लक्षण :– जिंक फास्फाइड की विषाक्तता से मितली, उल्टियाँ, अतिसार तीव्र पेट दर्द शुरू हो जाता है। इसके बाद 8 घंटे अथवा इससे अधिक की ऐसी अवधि होती है जिसमे कोई लक्षण दिखाई नही देते है। तदोपरान्त बकायदा विष अन्तर्लपन के लक्षण प्रारम्भ हो जाते है, पुनः मितली आनी शुरू हो जाती है और लम्बे समय तक उल्टियां, दस्त होने लगते हैं, और त्वचा फटने लगती है।

प्राथमिक उपचार :– जिंक फास्फाईड का प्रयोग कर रहे किसी व्यक्ति में उल्टी, पेट दुखना, दम घुटना, कमजोरी महसूस होना आदि लक्षण दिखाई देता है तो तुरन्त डाक्टर से सम्पर्क करना चाहिए। यदि निगल लिया हो तो नमक का सांद्र घोल देकर या गले में उँगली डालकर उल्टी करवाना चाहिए। किसी प्रकार के तेल का प्रयोग नहीं करना चाहिए। व्यक्ति को गरम जगह में लिटाना चाहिए। यदि त्वचा व आँखों के सम्पर्क में आया हो तो साफ पानी से धो देना चाहिए।

प्रतिकारक (एंटीडोट):–

(1) 5000 पोटैशियमपरमैगनेट का घोल इस्तेमाल कर अमाषय वास्तिक्रिया।
(2) क्यूप्रिक सल्फेट (0.2 प्रतिशत) का घोल नमनकारी के रूप में कार्य कर सकता है।
(3) 2 अथवा 3 अंडों की सफेदी को अच्छी तरह से फेंट कर खिलायें।
(4) बीमार को तेल अथवा वसा से परहेज करना चाहिए।

(2) ब्रोमॅाडियालान :– यह एक नया प्रभावशाली एण्टीकोयागुलन्ट चूहा नाशक है। यह केक के रूप में बना बनाया मिलता है। पेस्ट कन्ट्रोल (भारत) प्रा0लि0 'रोबान' तथा बायर इण्डिया प्रा0लि0 'रेक्यूमिन' के ब्राण्ड नाम से केक के रूप में ब्रोमॅाडियालान बनाते है बाजार में मिलने वाले प्रयोग के लिए तैयार केक में 0.005 प्रतिशत सक्रिय तत्व उपस्थित होता है। एंटीकागूलेन्ट शरीर में प्रवेश करने पर विटामिन 'के' के पुनः भ्रमण को रोक देते हैं। रक्त का थक्का बनाने के लिए विटामिन 'के' परम आवश्यक होता है। चूहों द्वारा केक खाने पर खून की नसों पर असर पड़ता है, खून की नसें फटने से खून शरीर में ही बह जाता है और मौत हो जाती है यह देर से असर करता है और 4 से 5 दिनों में चूहों को मारता है। केक को बिल के पास या ऐसी जगह जहां चूहे ज्यादा आते हैं, वहां रखना चाहिए और एक ही बार उपयोग करने से ज्यादा से ज्यादा चूहों का नाश हो जाता है। खाने की चीजें डालकर उन्हें ललचाने की जरूरत नहीं होती।

विषवाधा के लक्षण:– पीठ दर्द, पेट में दर्द, उल्टी होना और नाक से खून बहना। यह लक्षण लम्बे समय तक अपना प्रभाव दिखाते है।

प्राथमिक उपचार :– त्वचा पर लगने पर साबुन और पानी से अच्छी तरह से धोना चाहिए। आँखों में लगने पर स्वच्छ पानी से अच्छी तरह धोना चाहिए। निगल जाने पर उल्टी कराना चाहिए।

प्रतिविषकारक :– मुंह के रास्ते अन्तःशिरा (इन्ट्रावीनस) से विटामिन 'के' देना चाहिए। विटामिन 'के 'बाजार में केपलिन' के ट्रेड नाम से उपलब्ध है। गम्भीर मामलों में शरीर के पूरे रक्त को बदल देना चाहिए।

केन्द्रीय भण्डारण निगम न केवल अपने भण्डारगृहों में संरक्षित खाद्यान्नों को वैज्ञानिक प्रणालियों का पालन करते हुए चूहों से बचा कर देश और मानवता के हित में कार्य कर रहा है, अपितु पेस्ट कन्ट्रोल सेवा के अन्तर्गत अपने ग्राहकों के परिसरों को चूहा मुक्त करने का कार्य भी कर रहा है। कई रेलवे स्टेशन यथा दिल्ली, लखनऊ, वाराणसी, इलाहाबाद आदि में भी चूहा नियंत्रण का कार्य निगम द्वारा कराया जा रहा है। निगम द्वारा कराये जा रहे चूहा नियंत्रण कार्यो की राष्ट्रीय प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया यथा दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, अमर उजाला, टाइम्स आफ इण्डिया आदि ने प्रशंसा की है। टी0वी0 चैनल जी न्यूज ने अपने टी0वी0 सो डी0 एन0 ए0 में दिल्ली रेलवे स्टेशन में निगम द्वारा कराये जा रहे चूहा नियंत्रण कार्य पर अपनी विशेष रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। ❑

निगम के क्षेत्रीय कार्यालय–एक परिचय

इस पत्रिका के पाठकों को क्षेत्रीय कार्यालयों की कार्य विधि एवं इनके अधीन वेअरहाउसों तथा अन्य कार्यकलापों की जानकारी देने के लिए संक्षिप्त परिचय प्रकाशित किया जाता है। पिछले अंकों में क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद, लखनऊ, भोपाल, हैदराबाद, जयपुर एवं गुवाहाटी का संक्षिप्त परिचय दिया गया था। इस अंक में जानिये हमारे क्षेत्रीय कार्यालय– दिल्ली और भुवनेश्वर के बारे में।

क्षेत्रीय कार्यालय–दिल्ली

केंद्रीय भंडारण निगम क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली की स्थापना दिनांक 01.04.1969 को हुई। अप्रैल,1969 में दिल्ली रीजन ने 07 वेअरहाउसों के साथ अपने कामकाज की शुरुआत की। पिछले 48 वर्षों के दौरान केंद्रीय भंडारण निगम, दिल्ली रीजन द्वारा अपनी क्षमता को उत्तरोत्तर बढ़ाया गया जिसके चलते वर्तमान में दिल्ली रीजन 20 वेअरहाउसों में विकसित और विस्तारित हुआ है जिनकी कुल क्षमता 3.94 लाख मीट्रिक टन है।

अपने प्रारंभिक वर्षों में,यह क्षेत्र मुख्य रूप से एफ सी आई व्यवसाय पर ही निर्भर था। बाद में, 80 के दशक के दौरान बाण्डेड वेअरहाउसिंग के आगमन के साथ, बाण्डेड वेअरहाउसों की एक श्रृंखला से इस क्षेत्र की आय और मुनाफे को बढ़ावा मिला ।

सीएफएस का युग 1983 के दौरान शुरू हुआ जब भारत में पहली सीएफएस/आईसीडी ने पटपड़गंज (पूर्वी दिल्ली) में अपना संचालन शुरू किया और आज तक यह आईसीडी, व्यापार और उद्योग को आयात/निर्यात सेवाएं उपलब्ध कराने वाले, देश के प्रमुख एलसीएल केंद्रों में से एक है। इसके अतिरिक्त आईसीडी, लोनी जो क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली के ही क्षेत्राधिकार में आता है, कंटेनरों के गेटवे बंदरगाहों जैसे जे एन पी टी/मुंद्रा/पिपावा तक आवागमन को सुविधाजनक बनाने के लिए, रेलवे साइडिंग से लैस है। जहां ग्राहकों को उनके कार्गो के हैंडलिंग, स्टोरेज से लेकर आईसीडी से गेटवे बंदरगाहों तक आवागमन की सभी सुविधाएं एक ही छत के नीचे मिल जाती हैं।

औद्योगिक भंडारण ने दिल्ली क्षेत्र को नया जीवन दिया। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों अर्थात् एलजी, सैमसंग, होंडा, डीएमआईएल, डाबर इंडिया आदि ने कई स्थानों

पर हमारे वेअरहाउसों का उपयोग शुरू कर संगठन के लिए काफी राजस्व का योगदान दिया। यह क्षेत्र औद्योगिक भंडारण हेतु हमेशा से अपनी भंडारण क्षमता के लिए बड़ी संख्या में घरेलू और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की मांग रहा है।

वेअरहाउसों/आईसीडी/सीएफएस की संख्या, उनकी भंडारण क्षमता एवं उपयोगिता

क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली, दिल्ली सहित उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा राज्यों में स्थित केंद्रीय भंडारगृहों के कार्यकलापों का परिचालन एवं पर्यवेक्षण करता है।

दिल्ली राज्य में क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली के अधीनस्थ वेअरहाउस एवं अंतर्देशीय क्लीयरेंस डिपो (आई सी डी)

क्र.सं.	वेयरहाउस का नाम	भंडारण क्षमता (मीट्रिक टन में)	उपयोगिता (मीट्रिक टन में)
1.	सफदरजंग फ्लाईओवर	2041	2305
2.	पटपड़गंज–आईसीडी	37195	55649
3.	नांगलोई	8074	8399
4.	नरेला	16466	16466
5.	आईजीआई एअरपोर्ट	200	200
6.	कीर्तिनगर	24860	23873
7.	आर.पी. बाग	38153	34780
8.	ओखला–I	6166	9869
9.	ओखला–II	10500	11291

उत्तर प्रदेश राज्य में केंद्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली के अधीनस्थ वेअरहाउसों एवं अंतर्देशीय क्लीयरेंस डिपो (आईसीडी)

क्र. सं.	वेअरहाउस का नाम	भंडारण क्षमता (मीट्रिक टन में)	उपयोगिता (मीट्रिक टन में)
	उत्तर प्रदेश		
1.	ग्रेटर नोएडा–I	28460	28460
2.	ग्रेटर नोएडा–II	6600	6600
3.	कासना	16882	16882
4.	नोएडा	15000	15000
5.	नोएडा (एनएसई जेड)	2667	3015
6.	सूरजपुर (यूपी)–I	23072	–
7.	लोनी – आईसीडी	113407	113407
8.	साहिबाबाद –I (एमएन)	5767	5767
9.	साहिबाबाद –II	20200	7661

हरियाणा राज्य में केंद्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली के अधीनस्थ वेअरहाउसों एवं अंतर्देशीय क्लीयरेंस डिपो (आईसीडी) की सूची

क्र.सं.	वेयरहाउस का नाम	भंडारण क्षमता (मीट्रिक टन में)	उपयोगिता (मीट्रिक टन में)
	हरियाणा		
1.	गुड़गाँव	18000	15022
2.	कुण्डली	–––	–––

वर्तमान में इस क्षेत्र द्वारा दिल्ली सहित उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा राज्यों में चार आईसीडी सहित 20 वेअरहाउसों का परिचालन एवं पर्यवेक्षण का कार्य किया जा रहा है जिनका विवरण निम्न प्रकार है : (30.06.2017 की स्थिति के अनुसार)।

किसान विस्तार सेवा योजना (एफईएसएस)

केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा वर्ष 1978–79 से अपने निगमित सामाजिक दायित्व के एक भाग के रूप में किसान विस्तार सेवा योजना (एफईएसएस) चलाई जा रही है। इस योजना के अधीन तकनीकी कर्मचारी वेअरहाउसों के आसपास के गांवों का दौरा करके किसानों को वैज्ञानिक भण्डारण एवं फार्म स्तर पर खाद्यान्नों के परिरक्षण तकनीकों में प्रशिक्षण प्रदान करने सहित हानिकारक कीटों एवं कृतंकों के नियन्त्रण, छिड़काव तथा प्रधूमन आदि की विधियों के प्रदर्शन के साथ किसानों को पब्लिक वेअरहाउसों के लाभ के बारे में शिक्षित करते हैं तथा नेगोशिएबल वेअरहाउस रसीदों को गिरवी रखकर बैंकों से ऋण लेने में सहायता करते हैं। क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली द्वारा इस योजना को पूरे क्षेत्र में 06 वेअरहाउसों के माध्यम से चलाया जा रहा है। योजना के अन्तर्गत वर्ष 2016–17 के दौरान (30.06.2017 की स्थिति के अनुसार) तकनीकी कर्मचारियों द्वारा 79 गांवों का दौरा कर 2470 किसानों को शिक्षित किया गया।

पैस्ट नियंत्रण सेवाएं

केन्द्रीय भंडारण निगम 1968 से किसानों, ट्रेडर्स, निर्यातकर्ताओं, आयातकर्ताओं तथा शिपिंग एजेंन्टों आदि के हितों के लिए पैस्ट नियंत्रण सेवाएं प्रदान कर रहा है। ये सेवाएं रेलवे कोच, हवाई जहाजों, अस्पतालों, होटलों एवं रेस्टोरेंट्स, जहाजों और कंटेनरों में निर्यात किए जाने वाले प्रधूमन योग्य कार्गो तक भी विस्तारित की गई हैं। दिल्ली क्षेत्र ने इस बिजनेस गतिविधि से वर्ष 2016–17 में (30.06.2017 की स्थिति के अनुसार) 5.47 करोड़ रु. अर्जित किए। रेलवे कोचों का कीटनाशन महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है जिससे वर्ष 2016–17 के दौरान 2,37,259 एसी/नॉन.एसी रेल कोच और पेंट्री कार का कीटनाशन करके इस क्षेत्र ने 2.88 करोड़ रु. का राजस्व अर्जित किया है। इसी प्रकार इस क्षेत्र ने वर्ष के दौरान विभिन्न एअरलाइनों के 3030 विमानों का प्रधूमन एवं कीटनाशन कार्य किया। इसके अतिरिक्त दिल्ली मेट्रो रेल कार्पोरेशन के विभिन्न परिसरों में कीटनाशन सेवाएं प्रदान की जा रहीं हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन

क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली जहां एक ओर अपनी भंडारण गतिविधियों के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रयत्नशील है वहीं दूसरी ओर सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं प्रयोग बढ़ाने हेतु प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं। कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी में काम करने के लिए मार्गदर्शित, प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन तथा विभिन्न अन्य कार्यक्रमों जैसे स्वच्छता अभियान एवं सतर्कता जागरूकता आदि में विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

वर्ष 2016–17 के दौरान राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य के अनुसार हिंदी में पत्राचार बढ़ाने तथा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की समीक्षा हेतु क्षेत्रीय कार्यालय सहित विभिन्न अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गईं। वर्ष 2016–17 के दौरान कार्यालयीन कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देने, हिन्दी में काम करने का अभ्यास करवाने एवं हिन्दी में काम करने में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के उद्देश्य से क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा 04 हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें 18 अधिकारियों तथा 45 कर्मचारियों ने भाग लिया।

राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत निगमित कार्यालय द्वारा वर्ष 2015–16 के दौरान राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली को 'क' क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार निगम द्वारा दिनांक 02 मार्च, 2017 को आयोजित 61वें स्थापना दिवस समारोह में माननीय मंत्री उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, के कर–कमलों से क्षेत्रीय प्रबंधक, दिल्ली द्वारा ग्रहण किया गया।

इसके अतिरिक्त नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में हिन्दी कार्यशालाओं एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी

अधिकारी एवं कर्मचारी बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं तथा विजेताओं को नकद पुरस्कार भी वितरित किए जाते हैं।

अन्य विशेष गतिवधियाँ:

संसदीय राजभाषा समिति, मंत्रालय द्वारा समय–समय पर किए गए राजभाषा निरीक्षण के दौरान इस कार्यालय में हुई राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति पर संतोष व्यक्त किया गया तथा राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य–निष्पादन के लिए मंत्रालय द्वारा भी इस कार्यालय को पुरस्कृत किया जा चुका है।

स्थापना दिवस के अवसर पर निगमित कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली और एलपीआई की टीम के मध्य खेले गए डबल्स बैडमिंटन मैच के विजेता क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली के 02 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली द्वारा दिनांक 14 से 16 जुलाई, 2017 के दौरान प्रदर्शनी/कृषि एक्सपो में भाग लिया गया।

● क्षेत्रीय कार्यालय–भुवनेश्वर ●

1. केन्द्रीय भण्डारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर की स्थापना 23 नवम्बर, 1990 को हुई। वर्तमान समय में भुवनेश्वर क्षेत्र के अधीन ओडिशा राज्य में कुल 20 वेअरहाउस हैं जिसका उपयोग ओडिशा स्टेट सिविल सप्लाई कॉरपोरेशन और भारतीय खाद्य निगम सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत करता है। इसके अतिरिक्त उर्वरक, चिकित्सा और कागज उद्योगों से संबंधित अन्य उपयोगकर्ता हैं।
2. वेअरहाउसवार भण्डारण क्षमता और उपयोगिता (जून 2017 तक) :

क्र. सं.	जिला	केन्द्र के नाम / सैन्ट्रल वेअरहाउस	क्षमता (मी. टन में)	उपयोगिता (जून, 2017 तक)
1	बालासोर	बालासोर	11000	100
2	बरगढ़	बरगढ़	10100	84
3	बरगढ़	केन्दपाली–।	20000	100
4	बरगढ़	केन्दपाली–।।	22500	100
5	भद्रक	बलजीतपडा	10000	100
6	बोलांगीर	बोलांगीर	30000	78
7	कटक	चौद्वार	14650	89
8	कटक	कटक	16400	56
9	गंजाम	ब्रह्मपुर	40000	63
10	गंजाम	आस्का	10000	100
11	जाजपुर	जाजपुर रोड	9000	11
12	कालाहांडी	जुनागढ़	30300	53
13	कालाहांडी	कोकसरा	13000	100
14	केन्द्रापाड़ा	मार्शाघाई	10000	100

क्र. सं.	जिला	केन्द्र के नाम / सैन्ट्रल वेअरहाउस	क्षमता (मी. टन में)	उपयोगिता (जून, 2017 तक)
15	खुरदा	जटनी	15000	100
16	कोरापुट	जेयपुर	17800	41
17	नबरंगपुर	नबरंगपुर	10000	100
18	रायगडा	रायगडा	11400	89
19	संबलपुर	कालामाटी	10000	100
20	सुबर्णपुर	सोनपुर	10000	100
	कुल		**321150**	**80%**

3. किसान विस्तार सेवा योजना :

केन्द्रीय भण्डारण निगम ने सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करने के लिए 1978–79 में विशेषकर कृषक वर्गों के लाभ के लिए किसान विस्तार योजना का आरंभ किया। इस योजना का मुख्य उद्देश्य किसानों में वैज्ञानिक भण्डारण के बारे में जागरुकता लाना, पब्लिक वेअरहाउसों का उपयोग करना जो वेअरहाउस रसीद की गिरवी के सापेक्ष में कृषक वर्ग को लोन लेने में सहायता प्रदान करता है और फसलोपरांत भण्डारण हानि को कम करने में जागरुकता लाना है।

इस योजना के तहत गत वर्षों में ओडिशा राज्य में प्रशिक्षित किए गए किसानों का विवरण निम्नलिखित है:

क्र.सं.	वित्तीय वर्ष	प्रशिक्षित किए गए किसानों की संख्या
1.	2014–15	4547
2.	2015–16	4506
3.	2016–17	5365
4.	2017–18 (जून, 2017 तक)	1276

4. पैस्ट नियंत्रण सेवाएं :

केन्द्रीय भण्डारण निगम किसानों, व्यापारियों, निर्यातकों, आयातकों, पोत अभिकर्ताओं आदि के लाभ हेतु कीटनाशन तथा पैस्ट नियंत्रण सेवाएं (पी.सी.एस.) मुहैया करा रहा है। यह सुविधा रेल के डिब्बों, भोजन यानों, वायुयानों, अस्पतालों, होटलों एवं रेस्तरां सहित आयात–निर्यात कंटेनरों में प्रधूमन एवं पोत प्रधूमन आदि में भी प्रदान की जाती है।

गत वर्षों में पी.सी.एस. का निर्धारित लक्ष्य और प्राप्ति का विवरण निम्नलिखित है:

(रुपये लाख में)

वित्तीय वर्ष	लक्ष्य	प्राप्ति
2014–15	50.00	39.01
2015–16	45.00	26.52
2016–17	45.00	59.94
2017–18 (जून 2017 तक)	50.00	9.47

5. राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विवरण :

- संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम को यथासमय सभी संबंधितों को परिचालित किया जाता है तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में इस पर विस्तार से चर्चा की जाती है।
- प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की जाती है।
- प्रत्येक तिमाही में कार्मिकों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है।

- राजभाषा नियम एवं अधिनियम के समुचित अनुपालन के लिए समय–समय पर वेअरहाउसों का सामान्य निरीक्षण के दौरान राजभाषा निरीक्षण भी किया जाता है।
- कार्मिकों को कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन करने हेतु हिंदी टिप्पण/आलेखन पुरस्कार योजना चलाई जाती है।
- प्रतिवर्ष सितम्बर महीने में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया जाता हैं, जिसमें सभी कार्मियों को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।
- प्रतिवर्ष 14 सितम्बर हिंदी दिवस के रुप में मनाया जाता है।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक में कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख द्वारा भाग लिया जाता है।

विशेष उपलब्धियां :

- निगमित कार्यालय द्वारा चलाई जा रही राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर को वर्ष 2015–16 के लिए "ग" क्षेत्र में राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य–निष्पादन हेतु द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

6. अन्य विशेष गतिविधियां :

- प्रति वर्ष 2 मार्च को निगम का स्थापना दिवस मनाया जाता है ।
- प्रति वर्ष आदेशानुसार सतर्कता जागरुकता सप्ताह का आयोजन किया जाता है ।
- दिनांक 16 मई से 31 मई, 2017 तक क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर एवं इसके अधीनस्थ वेअरहाउसों में स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया । इस दौरान सभी कार्मिकों ने एकजुट होकर कार्यालय के कॉम्प्लेक्स की साफ–सफाई की तथा पुराने फाइलों के छंटाई हेतु आवश्यक कदम उठाए गए ।
- दिनांक 21.06.2017 को क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर सहित इसके सभी वेअरहाउसों में तीसरा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। उपस्थित योग विशेषज्ञ ने दैनिक जीवन में योग के विभिन्न लाभ के बारे में चर्चा की। ❑

राजभाषा संबंधी समितियां

राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन एवं प्रचार-प्रसार की दिशा में राजभाषा संबंधी समितियों का विशेष महत्व है। ये समितियां राजभाषा हिंदी के विकास में ऊर्जा का काम करती हैं।

ये समितियां हैं-

1. केन्द्रीय हिंदी समिति,
2. संसदीय राजभाषा समिति,
3. हिंदी सलाहकार समिति,
4. केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
5. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति और
6. विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति।

अपनेपन से अपनाने की भाषा है- हिंदी।

राजभाषा संविधान की दृष्टि में

जिया लाल*

भारत में राजभषा हिंदी न केवल संघ के सरकारी कामकाज की भाषा है बल्कि अखिल भारतीय स्तर पर संपर्क भाषा भी है। संवैधानिक दृष्टि से 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया था। 1968 में संसदीय संकल्प के द्वारा हिंदी के विकास के लिए एक सघन कार्यक्रम तैयार करने का निर्णय लिया गया, जिसके तहत 1976 में राजभाषा नियम बनाया गया और हिंदी के विकास के लिए देश को तीन भागों में बांट कर अलग–अलग लक्ष्य निर्धारित किए गए जिन्हें **'क', 'ख', 'ग'** क्षेत्र नाम दिया गया।

'क' क्षेत्र के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह तथा दिल्ली के संघ राज्य क्षेत्र को रखा गया है।

'ख' क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्य हैं– गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़ संघराज्य क्षेत्र इसके अतिरिक्त जितने राज्य/संघ राज्य क्षेत्र शेष हैं, वे सब **'ग'** क्षेत्र में रखे गए हैं:

भारतीय संविधान के कुल 9 अनुच्छेद के अंतर्गत राजभाषा संबंधी प्रावधान किए गए हैं, जिनका विवरण निम्नवत है:

अनुच्छेद 343 : देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी भारतीय संघ की राजभाषा होगी तथा अंकों का रूप भारतीय अंको का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप होगा।

अनुच्छेद 344: राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति– एक समिति गठित की जाएगी जो तीस सदस्यों से मिलकर बनेगी जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे और दस राज्य सभा के सदस्य होंगे जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों और राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

अनुच्छेद 345: राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं– अर्थात् अनुच्छेद 346 और अनुच्छेद 347 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, किसी राज्य का विधान–मंडल, विधि द्वारा, उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिंदी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा या भाषाओं के रूप में अंगीकार कर सकेगा

अनुच्छेद 346: एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा से संबंधित है।

अनुच्छेद 347: किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध का उल्लेख किया गया है।

अनुच्छेद 348: उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा के बारे में है।

अनुच्छेद 349: भाषा से संबंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया का उल्लेख है।

अनुच्छेद 350: व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा के बारे में है।

अनुच्छेद 351: हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश है कि संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके ❑

* वेअरहाउस सहायक–I, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के पूर्ण निर्वहन, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा संकल्प एवं समय-समय पर जारी आदेशों/अनुदेशों/नियमों, उपनियमों के अनुपालन को सुनिश्चित करने हेतु संविधान लागू होने के तत्काल बाद से अब तक 9 आदेश राष्ट्रपति जी की ओर से जारी हो चुके हैं।

शहीदों की याद में

रेखा दुबे*

खुशनसीब है वे, जो वतन पे मिट जाते हैं
मरकर भी वे अमर हो जाते हैं
करती हूँ तुम्हें सलाम, वतन पर मिटने वालों
तिरंगे का नसीब है तुमसे, देश प्रेम के मतवालों

आजादी की 70वीं सालगिरह के उपलक्ष्य में मैं भारत माता की आन–बान और शान के लिए न्योछावर सभी जांबाजों और उनके परिवारों के प्रति नतमस्तक होकर दिल से अपनी श्रद्धांजलि और सभी देश वासियों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई देती हूँ। इस जश्न को संपूर्ण राष्ट्र ने हर्षोल्लास के साथ मनाया, लेकिन इसके लिए कई माताओं की गोद व कई बहनों के माथे का सिंदूर और कई बच्चों के सिर से उनके रहनुमा का साया छिन गया। मैंने महसूस किया है कि 15 अगस्त और 26 जनवरी के आते ही देश में देशभक्ति की बहार बहने लगती है। परंपरा के अनुसार माननीय प्रधानमंत्री जी सेना प्रमुखों के साथ अमर जवान ज्योति के समक्ष शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। राष्ट्र एक दिन जश्न मना कर निद्रा देवी की गोद में सो जाता है और हमारे जवानों के लिए राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा ही जश्न है। उनका कार्य 24x7 चलता है, बिना किसी चाह के।

हम आज एक स्वंतत्र राष्ट्र में सम्मान से जी रहे हैं, ये शहीदों की कुरबानियों का ही परिणाम है। इन कुरबानियों का सिलसिला रुका नहीं हैं। आतंकवाद के तांडव ने देश–दुनियां के कई निस्हाय, बेगुनाह लोगों के साथ–साथ कितने सैनिकों की बलि चढ़ा दी, उनकी संख्या दर्ज भी नहीं हुई। कई शहीद तो गुमनामी के अंधेरों में खो गए जिन्हें राष्ट्र ने भावभीनी श्रद्धाजंलि भी नहीं दी। युद्ध ने जहाँ देश के आर्थिक, राजनीतिक, सैन्य और मानसिक स्तर पर प्रहार किया वहीं उन हज़ारों सैनिकों के परिवारों ने जिंदगी और मौत के तांडव को हर पल जिया और जो जांबाज इस युद्ध में शहीद हुए उनके परिवार आज भी कभी खत्म न होने वाले इंतजार की यातना को झेल रहे हैं। हमारे जांबाजों के कारण ही हजारों घुसपैठिये भारतीय सीमा से खदेड़े जाते हैं। जरा सोचिए..... यदि ये घुसपैठिये हमारी सीमा में होते तो क्या आज हमारा देश सुकून की सांस ले पाता।

हमारा विजय दिवस हर वर्ष हर्षोल्लास से मनाया जाएगा, लेकिन उन परिवारों के आंसू न आज तक सूखे हैं और न सूखेंगे। आजादी से लेकर आज तक भारत माता के लिए शहीद होने वाले जांबाजो का इतिहास इतना विशाल है कि शायद शब्दों की कमी पड़ जाए। देश के लिए शहीद हुए हर जवान ने सार्थक किया है कि :–

आंधियों में भी जैसे कुछ चिराग जला करते हैं
इतनी ही हिम्मत–ए हौसला हम भी रखा करते हैं
माना अभी दूर है हमारी मंजिलें
चांद सितारे तो हमें राहों में मिला करते हैं

क्या ये सही है कि केवल स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, शहीदी दिवस विजय दिवस मनाकर सरकार शहीदों के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करें। मेरी राय में नहीं। आवश्यकता इस बात की है कि सरकार द्वारा

* सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

उनके परिवार को समुचित मान–सम्मान और निर्धारित आर्थिक सहायता प्राप्त हो। हालांकि उनका परिवार जो खो चुका है वह हम देने के काबिल नहीं लेकिन कई परिवार ऐसे हैं जिनका भरण–पोषण उसी सैनिक के वेतन से होता था। ऐसे में आर्थिक सहायता उस परिवार का संबंल बन सकती है। इन परिवारों को भावनात्मक लगाव की भी आवश्कयता है, वो यदि उन्हें समाज से मिल सके तो कुछ सीमा तक उनकी आंखों की नमी में कमी आएगी। प्रशासन यह जानने का प्रयत्न करे कि हर संभव सहायता और निर्धारित राशी कागज़ों में न रहकर पीड़ित परिवार तक तत्परता से पहुंचे।

जवान हमारे लिए केवल तब तक हीरो नहीं जब तक युद्ध है और युद्ध समाप्ति के बाद हम उन्हें भूल जाएं। हम फिल्मी हस्तियों को हीरो मानते हैं। मेरा मानना है कि देश के असली हीरो तो हमारे सैनिक हैं। मैंने सुना है कि ताज ग्रुप के होटल्स सैनिकों को दिसकांउट देते हैं, वाकई में अच्छी और सच्ची पहल है, देश के सच्चे सेवकों के लिए। अपनी स्वतंत्रता को "फार ग्रांटेड" न लें शहादत कभी व्यर्थ न जाए। शहीदों के लिए हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि केवल उनकी मूर्ति लगा देने से या एक दिन के राजकीय सम्मान से मां का सूना आँचल, पत्नी की सूनी मांग, बहन–बेटी की सूनी आंखें नहीं सजेंगी। हमें सहारा देना होगा उन सभी परिवारों को, जिन्होंने अपने लाल इस देश को अर्पित किये हैं।

हमारा इतिहास गवाह है कि हमने दुश्मन को भी गले लगाया है। फिर आज देश पर मर–मिटने वालों के लिए हमारे संवेदनशून्य व्यवहार से हर शहीद की आत्मा यही पुकारेगी कि

कुछ हाथ से उनके फिसल गया,
वह पलक झपक कर निकल गया,
फिर लाशें बिछ गई लाखों की,
सब पलक झपक कर बदल गया।
जब रिश्ते राख में बदल गए,
इंसानों का दिल दहल गया,
मैं पूछ–पूछ कर थक गया,
क्यों मेरा भारत बदल गया।।

हिंदी दिवस की बधाई

सच्चिदानन्द राय*

आज हिंदी दिवस की बधाई हो।
भारत के सभी प्रदेशों को बधाई हो।।
सभी प्रदेशों में हिंदी भी एक भाषा है।
लोगों के नजरिया में बदली आशा है।।

आखिर हिंदी किधर खो गई है?
कार्यालय के अधिकार में गुम हो गई है।।
अपनी व्यक्तिगत जवाबदेही से दूर।
एक दूसरे से अलग हो कर मजबूर।।

कार्यक्रम में आयोजित हो कर।
पुरस्कारों की दौड़ में घिर कर।।
वास्तविकता से कोसों दूर रह कर ।
समर्थ रह कर भी मजबूर हो कर।।

एकता की यह नींव है यह भाषा।
हम हिन्दुस्तानियों की समर्थ आशा।।
आइए, हम सब मिलकर संकल्प करें।
हिंदी और सिर्फ हिंदी ही विकल्प करें।।

हिंदी, हिन्दू और हिन्दुस्तान।
हो भारत की बस पहचान।।
अपनी बात सिर्फ हिंदी में।
काम शुरू करना हिंदी में।।

* अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई

जीवन का मकसद

सागरिका दत्ता*

न जाने तुम क्या बन कर आए थे जिंदगी में मेरे
पर इतना जानती हूँ,
कुछ मकसद होता है सभी हादसों के पीछे ।।
मिलना–बिछड़ना, बिछड़कर मिलना,
यह तो वक्त का खेल है
जीवन मे घटी हर घटना का,
एक कहानी होती जरूर है,
उसको समझो तो सीख दे जाती है,
न समझो दो गम के रंग में रंग जाती है ।।।

मार्च का महीना था। करीब शाम के 6.00 बजे टेलीफोन की घंटी बजी और आवाज सुन मैं स्तब्ध रह गई। मेरे हाथ–पैर कांपने लगे थे, क्या करूँ कुछ समझ नहीं आ रहा था। किसी तरह गाड़ी निकाली और तुम्हें फोन मिलाया, क्योंकि शायद तुम्हारा घर उस रास्ते में ही पड़ता था। मेरे एक करीबी दोस्त की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी। पर जब तक मैं पहुँची उसके शव को सरकारी अस्पताल ले गए थे।

हमारे मिलने का तरीका भी बड़ा अजीब था, एक हादसे ने मिलवाया और हमारी कहानी भी एक हादसा बनकर ही खत्म हो गयी। हादसों को लोग अक्सर तब तक ही याद रखते है जब तक वह चर्चा में बनी रहती है। फिर चर्चा खत्म और नित्य नई–नई घटना घटती रहती है। समय बीतता गया और हमारा रिश्ता भी मजबूत होता गया। लोग किसी भी रिश्ते में ऐसा क्यों चाहते हैं कि, जिसे वे खुद से ज्यादा प्यार करते हैं, वह हमेशा सिर्फ उनके साथ ही रहे। पर जीवन में कई रिश्ते ऐसे होते हैं जिसे समानता से निभाने की जरूरत होती है। एक पति या बेटा सिर्फ अपनी पत्नी या माँ का नहीं होता, वो किसी का बेटा या पति भी होता है। पर शायद उनसे बहुत अधिक प्यार होने के कारण उनका किसी और काम में या किसी दूसरे रिश्ते में अधिक व्यस्त रहना दिल को खटकता है। अब दिल को कौन समझाए, कहते हैं न दिल तो बच्चा है जी .....अपनी जिद आसानी से नहीं छोड़ता।

मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था..... तुम्हारा किसी और के लिए अधिक लगाव होना – वो काम या कोई व्यक्ति ही क्यों न हो, कुछ चिढ़ सी मच जाती थी। उसे मोहब्बत कहें या ईर्ष्या मालूम नहीं। शायद मुझमें ही कहीं बदलाव आया था, मैं इस रिश्ते को कुछ ज्यादा ही अपना मान बैठी थी। हमारे बीच कई तकरार हुए, लड़ते–झगड़ते फिर खुद ही सब सुलझाते। पर आप किसी भी घाव पर कितना मरहम लगाएंगे, जब आपको ज्ञात है कि वो घाव जानलेवा है, कभी ठीक नहीं हो सकता। फिर भी आदमी तब तक कोशिश करता है, जब तक उसमें उससे लड़ने की ताकत व हौसला होता है। हमारा रिश्ता भी उस घाव की तरह ही बन गया था जो ठीक होने का नाम ही नहीं ले रहा था। एक समय ऐसा आया कि मेरा तुमसे कुछ भी सवाल करना या सलाह देना भी तुम्हें अखरने लगा था।

बदले में तुम मुझे जवाब देते – मुझे मेरे घर वाले ही सवाल नहीं करते फिर तुम कौन होती हो। एक पल में ही तुमने मुझे पराया कर डाला। यह तो प्यार का हिस्सा नहीं हो सकता। यह सब सुनकर मैं खुद के लिए ही सवाल बन बैठी, मेरे शब्द मानो मुँह ने निगल लिए हो, होंठ मानो किसी ने सिल दिये हो, और आसूँ तो बिना बंद हुई बारिश की तरह बहने लगे.... ऐसा लग रहा था मानो मैं गूंगी हो गई हूँ। क्या रिश्तों में सवाल करना या सलाह देना किसी की आजादी छीन लेने के समान होता है। किसी को जानने या समझने में कभी–कभी पूरी उम्र निकल जाती हैं तो कभी एक दिन, एक हफ्ते या एक साल भी काफी होता है कि आप जान जाते हों वो इंसान कैसा होता है। मेरा मानना है कि किसी भी रिश्ते को अगर आप दिल से इज्जत न दें तो वे चिरस्थायी नहीं रहते हैं।

मैंने तो सिर्फ कुछ पल मांगे थे, इतना चाहा था कि मेरे अकेलेपन को, सूनेपन को तुम अपने प्यार से भर दो। गलती इतनी सी थी कि तुम्हें अपना अस्तित्व माना,

* हिन्दी अनुवादक, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

खुद से ज्यादा चाहा। भूल तो हो गई, अब सुधारने की जरूरत थी –

दिल पूँछता है कि
प्यार को तू गलती का नाम क्यूँ दे रही ???
बोझ समझो तो घुटन होने लगती है,
शिद्दत से निभाओ तो जीने की वजह मिल जाती है।।।

प्यार करने और निभाने में बहुत फर्क होता है। इस राह पर चलने से जितना सुकून मिलता है, उतने ही काटें भी बिछे होते हैं, जिसे पार कर मंजिल तक पहुँच जाएं तो जीवन स्वर्ग बन जाता है। शायद हमारे प्यार का समय यहीं तक था। उस दिन मन में बस एक ही ख्याल आया कि जिंदगी में किसी का मिलना या बिछड़ना एक संजोग नहीं होता, उसमें कुछ न कुछ रहस्य अवश्य छिपा होता है। उस मकसद को यदि हम पहचान जाएं तो जीवन जीने में आसान हो जाता है। जीवन में घटी सभी घटनाओं की हर एक कड़ी तुम्हें कुछ न कुछ अवश्य सिखा जाती है। यह सीख तुम्हें जीवन में आई किसी भी कठिनाई या मुसीबत से लड़ने का हौसला पैदा कर देती है।

हमारी कहानी का अंत तो हो गया पर इस अंत के साथ–साथ मेरे अंदर एक ऐसी ऊर्जा का उद्भव हुआ जिससे मैं अपने शत्रुओं से, लोभ से ,माया से, अहंकार से, ईर्ष्या से, हर एक बाधाओं से लड़ने के लिए सक्षम हो गई। अब मुझे किसी का डर नहीं – न मृत्यु का न ही किसी को खोने का। मैं यह नहीं सोचती कि लोग मेरे साथ कैसे पेश आते है,कैसा व्यवहार करते हैं। बस जब तक यह जीवन है सभी से अच्छे संबंध बनाती रहूँ। क्योंकि जीवन में – मोह–माया, लोभ, ईर्ष्या, अहंकार सब मिथ्या है, सत्य तो केवल एक ईश्वर है, जिसे हम भिन्न–भिन्न रूप से पूजते हैं। अब मुझे ज्ञात हो गया कि मेरे जीवन का मकसद क्या है। ❑

मैं भारत हूँ

खुरशीद रजा*

मैं हूँ भारत मेरा पैगाम है सब से उल्फत
अम्न से मुझको मोहब्ब है तो शर से नफरत
मेरी नज़रों में है हर एहले वतन की इज्जत
मेरे कदमों पे निछावर है जहाँ की दौलत।
दिल के टुकड़े हैं सभी हिन्दू मुसलमान मेरे
मुनहसिर इनकी ही खुशियों पे हैं अरमान मेरे।
शंख का शोर अजानों की सदा भाती है
और कश्मीर की वादी भी मेरा गुन गाती है
अम्न की भीनी हवाओं में ही नींद आती है
शर की नागिन मेरी सूरत ही से घबराती है
अज्म की आग से लोहे को गला सकता हूँ
हौसला जुल्म का मिट्टी में मिला सकता हूँ।
है हिमालय मेरा गंगा की रवानी मेरी
सुबह रौशन मेरी और शाम सुहानी मेरी
मेरी अजमत की है बे मिस्ले निशानी मेरी
सारी दुनिया की जबान पर है कहानी मेरी।
प्रेम स्नेह का तहजीब का गहवारा हूँ
अपने दुश्मन के लिए मौत का नक्कारा हूँ।

बोस, आजाद, भगत, गाँधी, जवाहर मेरे
सूर, तुलसी, मेरे गालिब मेरे, जौहर मेरे
इल्म और ज्ञान के बहते हुये सागर मेरे
त्याग, बलिदान के हिम्मत के ये पैकर।
मेरी अजमत का तिरंगा न झुका पायेगा
कोई दुश्मन, मेरी हस्ती न मिटा पायेगा।
वादिये अम्न को शालों से बचाने निकलो
फूल हर सिम्त मोहब्बत के खिलाने निकलो
प्रेम से मोम को फौलाद बनाने निकलो
जुल्म आतंक को मिट्टी में मिलाने निकलो।
कह दो दुश्मन से वोह नुकसान न कर पायेगा
मेरा जन्नत–सा ये भारत न बिखर पायेगा।
अपने दुश्मन को भी सीने से लगाया मैंने
और कदमों पर सिकन्दर को झुकाया मैंने
विश्व को पाठ मोहब्बत का पढ़ाया मैंने
जुर्म है जुल्म यही सबको बताया मैंने।
बेल आतंक की परवान न चढ़ने दूँगा
हश्र तक प्रेम का खुरशीद न ढलने दूँगा।

* अधीक्षक, सैंट्रल वेअरहाउस, लखनऊ–प्रथम

जिसके पास उम्मीद है, उसके पास सब कुछ है।

हींगवाला

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने रचना कर्म से जन–मन तक पहुंचाने का काम निर्भयता से किया। उन्होंने झांसी की रानी, वीरों का कैसा हो वसंत जैसी अमर और सदाबहार कविताओं के माध्यम से स्वतंत्रता के महत्व को व्यक्त किया। देशभक्ति की निर्भीक अभिव्यक्ति से साहित्य और राजनीति में खास जगह बनाने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त, 1904 को निहालपुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में क्षत्रीय परिवार में हुआ था।
सुभद्रा कुमारी की रचनाओं में कविता संकलन– मुकुल, नक्षत्र, त्रिधारा, सभा का खेल तथा कहानी संग्रह में– बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे–साधे चित्र हैं।

लगभग 35 साल का एक खान आंगन में आकर रुक गया। हमेशा की तरह उसकी आवाज सुनाई दी –''अम्मा... हींग लोगी?''

पीठ पर बँधे हुए पीपे को खोलकर उसने, नीचे रख दिया और मौलसिरी के नीचे बने हुए चबूतरे पर बैठ गया । भीतर बरामदे से नौ – दस वर्ष के एक बालक ने बाहर निकलकर उत्तर दिया – ''अभी कुछ नहीं लेना है, जाओ!''

पर खान भला क्यों जाने लगा? जरा आराम से बैठ गया और अपने साफे के छोर से हवा करता हुआ बोला–''अम्मा, हींग ले लो, अम्मां! हम अपने देश जाता हैं, बहुत दिनों में लौटेगा।'' सावित्री रसोईघर से हाथ धोकर बाहर आई और बोली – ''हींग तो बहुत–सी ले रखी है खान! अभी पंद्रह दिन हुए नहीं, तुमसे ही तो ली थी।''

वह उसी स्वर में फिर बोला–''हेरा हींग है मां, हमको तुम्हारे हाथ की बोहनी लगती है । एक ही तोला ले लो, पर लो जरूर।'' इतना कहकर फौरन एक डिब्बा सावित्री के सामने सरकाते हुए कहा– ''तुम और कुछ मत देखो मां, यह हींग एक नंबर है, हम तुम्हें धोखा नहीं देगा।''

सावित्री बोली– ''पर हींग लेकर करूंगी क्या? ढेर–सी तो रखी है।'' खान ने कहा– ''कुछ भी ले लो अम्मां! हम देने के लिए आया है, घर में पड़ी रहेगी। हम अपने देश कूं जाता है। खुदा जाने, कब लौटेगा?'' और खान बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए हींग तोलने लगा। इस पर सावित्री के बच्चे नाराज हुए। सभी बोल उठे–''मत लेना मां, तुम कभी न लेना। जबरदस्ती तोले जा रहा है।'' सावित्री ने किसी की बात का उत्तर न देकर, हींग की पुड़िया ले ली। पूछा–''कितने पैसे हुए खान?''

''पैंतीस पैसे अम्मां!'' खान ने उत्तर दिया। सावित्री ने सात पैसे तोले के भाव से पांच तोले का दाम, पैंतीस पैसे लाकर खान को दे दिए। खान सलाम करके चला गया। पर बच्चों को मां की यह बात अच्छी न लगीं।

बड़े लड़के ने कहा– ''मां, तुमने खान को वैसे ही पैंतीस पैसे दे दिए। हींग की कुछ जरूरत नहीं थी।'' छोटा मां से चिढ़कर बोला–''दो मां, पैंतीस पैसे हमको भी दो। हम बिना लिए न रहेंगे।'' लड़की जिसकी उम्र आठ साल की थी, बड़े गंभीर स्वर में बोली–''तुम मां

से पैसा न मांगो। वह तुम्हें न देंगी। उनका बेटा वही खान है।'' सावित्री को बच्चों की बातों पर हँसी आ रही थी। उसने अपनी हँसी दबाकर बनावटी क्रोध से कहा– ''चलो–चलो, बड़ी बातें बनाने लग गए हो। खाना तैयार है, खाओ।''

छोटा बोला–''पहले पैसे दो। तुमने खान को दिए हैं।''

सावित्री ने कहा– ''खान ने पैसे के बदले में हींग दी है। तुम क्या दोगे?'' छोटा बोला– ''मिट्टी देंगे।'' सावित्री हँस पड़ी– ''अच्छा चलो, पहले खाना खा लो, फिर मैं रुपया तुड़वाकर तीनों को पैसे दूंगी।''

खाना खाते–खाते हिसाब लगाया। तीनों में बराबर पैसे कैसे बंटे? छोटा कुछ पैसे कम लेने की बात पर बिगड़ पड़ा– ''कभी नहीं, मैं कम पैसे नहीं लूंगा!'' दोनों में मारपीट हो चुकी होती, यदि मुन्नी थोड़े कम पैसे स्वयं लेना स्वीकार न कर लेती।

कई महीने बीत गए। सावित्री की सब हींग खत्म हो गई। इस बीच होली आई। होली के अवसर पर शहर में खासी मारपीट हो गई थी। सावित्री कभी– कभी सोचती, हींग वाला खान तो नहीं मार डाला गया? न जाने क्यों, उस हींग वाले खान की याद उसे प्रायः आ जाया करती थी। एक दिन सवेरे–सवेरे सावित्री उसी मौलसिरी के पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठी कुछ बुन रही थी। उसने सुना, उसके पति किसी से कड़े स्वर में कह रहे हैं– ''क्या काम है?' भीतर मत जाओ। यहाँ आओ।'' उत्तर मिला– ''हींग है, हेरा हींग।'' और खान तब तक आंगन मैं सावित्री के सामने पहुँच चुका था। खान को देखते ही सावित्री ने कहा– ''बहुत दिनों में आए खान! हींग तो कब की खत्म हो गई।''

खान बोला– ''अपने देश गया था अम्मां, परसों ही तो लौटा हूँ। ''सावित्री ने कहा– ''यहाँ तो बहुत जोरों का दंगा हो गया है।'' खान बोला– ''सुना, समझ नहीं है लड़ने वालों में।''

सावित्री बोली– ''खान, तुम हमारे घर चले आए। तुम्हें डर नहीं लगा?''

दोनों कानों पर हाथ रखते हुए खान बोला– ''ऐसी बात मत करो अम्मां। बेटे को भी क्या मां से डर हुआ है, जो मुझे होता?'' और इसके बाद ही उसने अपना डिब्बा खोला और एक छटांक हींग तोलकर सावित्री को दे दी। रेजगारी दोनों में से किसी के पास नहीं थी। खान ने कहा कि वह पैसा फिर आकर ले जाएगा। सावित्री को सलाम करके वह चला गया।

इस बार लोग दशहरा दूने उत्साह के साथ मनाने की तैयारी में थे। चार बजे शाम को मां काली का जुलूस निकलने वाला था। पुलिस का काफी प्रबंध था। सावित्री के बच्चों ने कहा– 'हम भी काली का जुलूस देखने जाएंगे।'

सावित्री के पति शहर से बाहर गए थे। सावित्री स्वभाव से भीरु थी। उसने बच्चों को पैसों का, खिलौनों का, सिनेमा का, न जाने कितने प्रलोभन दिए पर बच्चे न माने, सो न माने। नौकर रामू भी जुलूस देखने को बहुत उत्सुक हो रहा था। उसने कहा– 'भेज दो न मां जी, मैं अभी दिखाकर लिए आता हूँ।' लाचार होकर सावित्री को जुलूस देखने के लिए बच्चों को बाहर भेजना पड़ा। उसने बार–बार रामू को ताकीद की कि दिन रहते ही वह बच्चों को लेकर लौट आए।

बच्चों को भेजने के साथ ही सावित्री लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। देखते–ही–देखते दिन ढल चला। अंधेरा भी बढ़ने लगा, पर बच्चे न लौटे अब सावित्री को न भीतर चौन था, न बाहर। इतने में उसे –कुछ आदमी सड़क पर भागते हुए जान पड़े। वह दौड़कर बाहर आई, पूछा– ''ऐसे भागे क्यों जा रहे हो? जुलूस तो निकल गया न।''

एक आदमी बोला– ''दंगा हो गया जी, बड़ा भारी दंगा!'' सावित्री के हाथ–पैर ठंढे पड़ गए। तभी कुछ लोग तेजी से आते हुए दिखे। सावित्री ने उन्हें भी रोका। उन्होंने भी कहा– ''दंगा हो गया है!''

अब सावित्री क्या करे? उन्हीं में से एक से कहा– ''भाई, तुम मेरे बच्चों की खबर ला दो। दो लड़के हैं, एक लड़की। मैं तुम्हें मुंह मांगा इनाम दूंगी।'' एक देहाती ने जवाब दिया– ''क्या हम तुम्हारे बच्चों को पहचानते हैं मां जी?'' यह कहकर वह चला गया।

सावित्री सोचने लगी, सच तो है, इतनी भीड़ में भला कोई मेरे बच्चों को खोजे भी कैसे? पर अब वह

भी करें, तो क्या करें? उसे रह–रहकर अपने पर क्रोध आ रहा था। आखिर उसने बच्चों को भेजा ही क्यों? वे तो बच्चे ठहरे, जिद तो करते ही, पर भेजना उसके हाथ की बात थी। सावित्री पागल–सी हो गई। बच्चों की मंगल–कामना के लिए उसने सभी देवी–देवता मना डाले। शोरगुल बढ़कर शांत हो गया। रात के साथ–साथ नीरवता बढ़ चली। पर उसके बच्चे लौटकर न आए। सावित्री हताश हो गई और फूट–फूटकर रोने लगी। उसी समय उसे वही चिर परिचित स्वर सुनाई पड़ा–'अम्मा!'

सावित्री दौड़कर बाहर आई उसने देखा, उसके तीनों बच्चे खान के साथ सकुशल लौट आए हैं। खान ने सावित्री को देखते ही कहा– ''वक्त अच्छा नहीं हैं अम्मां! बच्चों को ऐसी भीड़–भाड़ में बाहर न भेजा करो।'' बच्चे दौड़कर मां से लिपट गए। ❑

बीती ताही बिसार दे, आगे की सुध ले

मीनाक्षी गुप्ता*

इस लोकोक्ति का शाब्दिक अर्थ है जो बीत गया उसे भूल जा और अपने आने वाले समय को संभाल ले, संवार ले। समय चाहे जो भी रहे इसका अर्थ सदा हमारा पथ प्रदर्शन करता रहेगा।

ईश्वर प्रदत्त शक्तियों में से दो शक्तियां बहुत उपयोगी हैं। वे हैं भूलने की तथा माफ करने की शक्ति। इन शक्तियों का प्रयोग करना हम छोड़ते जा रहे हैं। यदि इन दोनों शक्तियों का समावेश हम अपनी दैनिक आदतों में कर लेंगे तो हमारा जीवन आसान, हल्का तथा सुकून भरा रहेगा। जिस तरह बहते पानी को वापिस नहीं लाया जा सकता, उसी प्रकार से भूतकाल में की गई गलतियों को ठीक नहीं किया जा सकता। उसे सिर्फ भूलकर तथा यथासंभव माफ करके ही ठीक करने का प्रयास किया जा सकता है जिसमें विशेष योगदान हमारी वाणी तथा व्यवहार का है।

"वाणी ऐसी बोलिये मन का आपा खोय, दूजों को शीतल करे आपो शीतल होय।"

इंसान गुड़ न दे, गुड़ जैसी बात तो करे।

मन बीती बातों में भटकता रहता है तथा पुरानी बातों को भूलने नहीं देता। अतीत की स्मृतियां हमारे वर्तमान को तो निरर्थक बनती ही है साथ ही साथ भविष्य पर भी इसका दुष्प्रभाव पड़ता है क्योंकि भविष्य वर्तमान की ही परछाई है। वर्तमान में ही जीना और वर्तमान में ही अपने को शांत प्रशांत बनाने का प्रयास करना ही जीने की सर्वश्रेष्ठ कला है। जिस प्रकार :

सहज मिले तो दुग्ध बराबर, मांग लिया सो पानी,
छईन लिया सो रक्त बराबर, कह गए गोरख वाणी।

* प्रधान निजी सचिव, डब्ल्यूडीआरए, नई दिल्ली

हिंदी भाषा के बारे में...

किसी भी भाषा को सीखने के लिए उस भाषा को लिखना (लिपि), पढ़ना और वार्तालाप जरूरी है। हिंदी की लिपि देवनागरी है जो सरल और वैज्ञानिक लिपि है। इसकी वर्णमाला में इतने स्वर और व्यंजन हैं जिन्हें मुंह से निकाली गई सभी ध्वनियों में लिखा जा सकता है। इसके अलावा देवनागरी लिपि बहुत ही आसान है जिसे मामूली अभ्यास से कुछ दिनों में ही सीखा जा सकता है।

कठिनाइयां मनुष्य को जीतना सिखाती है, उतना कोई भी नहीं सिखा सकता।

कर्मयोगी की सेवानिवृत्ति

एस.के. दत्ता*

आज सुबह 10 बजे ऑफिस में काम शुरू करने से पहले ही रामनाथ अपने साहब को रिसीव करने के लिए ऑफिस गेट पर खड़ा हो गया। रामनाथ के लिए आज एक विशेष दिन है। रामनाथ के साहब श्री प्रकाश जी आज सेवानिवृत्त हो रहे हैं। हर रोज की तरह प्रकाश जी आज भी ठीक 10 बजे ऑफिस आ पहुंचे और हर दिन की तरह सब से हाथ मिलाते हुए लिफ्ट की ओर चल पड़े। प्रकाश जी का दफ्तर आठवीं मंजिल पर था। अपने केबिन में पहुंचने के बाद प्रकाश जी ने रामनाथ से हाल–चाल पूछा और चाय बनाने को कहा है। इस बीच वे अपने अनुभाग में भी एक बार घूम कर सबसे मिलकर आए। हर दिन की ही तरह उनका पी.ए. डिक्टेशन लेने के लिए आया। सर को अभिवादन करते हुए उनका हालचाल पूछने लगा। सेवानिवृत्ति के बाद वे कैसे समय बिताएंगे? इस बारे में चर्चा करने लगा। इसी बीच दूसरे अनुभागों से भी ऑफिसर एवं स्टाफ प्रकाशजी के केबिन में आकर उनका अभिवादन करने लगे एवं उनको शुभकामनाएं देने लगे। प्रकाश जी आज बहुत खुश थे। उनका पूरा जीवन ऑफिस में बीता था, सभी सहकर्मियों के साथ उनका एक रिश्ता बन गया था।

उन लोगों को छोड़कर कल से घर में अकेले कैसे समय बिताऊंगा, यह सोचकर वह थोड़ा विचलित महसूस करने लगे। एक अर्जेंट पत्र का डिक्टेशन दिया और टेबल पर जमा फाइलों को निपटाने लगे। रामनाथ इस बीच चाय लेकर आया। फाइलें निपटाते–निपटाते करीब 2 बज गये। उन्होंने रामनाथ को खाना लगाने के लिए कहा। दूसरे अनुभाग के एक साथी अधिकारी को साथ में खाना खाने के लिए बुला लिया। क्रय अनुभाग में उनके एक खास दोस्त थे– रस्तोगी जी। वे भी खाना खाने के लिए प्रकाश जी के पास आ गए। सभी साथ मिलकर पुराने दिनों की याद ताजा करते हुए खाना खाने लगे। प्रकाश जी को मालूम था कि ऑफिस में यह उनका आखिरी खाना था। कल से घर में अकेले ही खाना खाना होगा। खाना खाकर सभी साथियों ने अपने–अपने केबिन में प्रस्थान किया। प्रकाशजी थोड़ा आराम करते हुए अपनी कुर्सी खिड़की के पास ले आए और खिड़की से आसमान की तरफ देखने लगे। दिल्ली का सन्तनगर एरिया काफी फैला हुआ है। बिल्डिंग भी ज्यादा ऊंची–ऊंची नहीं है, इसीलिए खिड़की से नीला आसमान साफ–साफ दिखाई दे रहा था। आसमान में कबूतर उड़ रहे थे। सब देखकर प्रकाश जी भावुक हो उठे और सोचने लगे कि कल से उन्हें भी कोई बंधन नहीं होगा। सभी दायित्वों से मुक्ति, आजादी। कल से कोई मीटिंग नहीं, टारगेट नहीं, शिकायत नहीं, निरीक्षण नहीं, इस समय उन्हें शुरू–शुरू के दिनों की याद आ रही थी। कॉलेज की पढ़ाई खत्म करके मात्र 22 साल की उम्र में कर्म जीवन में प्रवेश किया था

प्रकाश जी एक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार से थे और पिताजी को आर्थिक मदद करना उनकी बड़ी जिम्मेदारी थी। नौकरी शुरू करने से लेकर आज तक 35 साल की लंबी दौड़ में निगम की सेवा में अपने आप को उन्होंने बखूबी सांप दिया था। इस बीच उन्हें घर के साथ–साथ ऑफिस में भी बहुत सारी जिम्मेदारी निभानी पड़ीं। आज उनको एक सफल ऑफिसर माना जाता है। उनके कार्यकाल में ऑफिस नई–नई ऊंचाइयां छूता गया और प्रकाश जी ने इन ऊँचाईयों को छूने के लिए कठोर परिश्रम कर सहयोग दिया। प्रकाश जी ने एक सत्य एवं संतुलित जीवन बिताया अपने सांसारिक जीवन में भी काफी सफल रहे। बेटा इंजीनियर है और आस्ट्रेलिया में सेटल है। बेटी ने सी.ए. किया एवं शादी होने के बाद पति के साथ दिल्ली में अपनी कंपनी शुरू की। प्रकाशजी ने मन ही मन निगम का आभार माना। कुछ समय ऐसे ही खामोशी से बीत गया। सर को पार्टी के लिए रामनाथ बुलाने आया। उसके बाद प्रकाशजी ने अपनी कुर्सी की तरफ एक बार देखा और धीरे–धीरे नीचे हॉल में पहुंचे।

हाल में सभी ने फूल–मालाओं के साथ उनका जोरदार स्वागत किया। बहुत सारे अधिकारियों ने प्रकाशजी के कामकाज, उनकी महानता के बारे में

* भण्डारण एवं निरीक्षण अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई

भाषण दिया, प्रकाशजी सुनते रहे, मुस्कुराते रहे। आखिर में संचालक ने प्रकाशजी को उनकी उपलब्धियों के बारे में बताने का अनुरोध किया। प्रकाशजी सुवक्ता थे, लेकिन आज उनका मन इतना भावुक हो गया था कि कुछ बोलने का उनका मन नहीं कर रहा था। फिर भी सभी का अभिवादन करते हुए उन्होंने अपनी सफलता का राज सबके सामने बताया और कहा कि उन्होंने अपने जीवन में कर्म को ही धर्म माना और उसी की पूजा की। सत्य और निष्ठा से किया गया कर्म कभी विफलता नहीं लाता। आज का काम, आज ही निपटाना चाहिए। कर्म ही ईश्वर द्वारा निर्दिष्ट है। उसे सही ढंग एवं सेवा भाव से करने से ईश्वर भी प्रसन्न होता है और हमारा जीवन सुख–शांति से भर जाता है। हमें दायित्व से कभी भागना या घबराना नहीं चाहिए। दायित्व उन्हीं को दिया जाता है जिनका कंधा मजबूत इच्छाशक्ति और कर्मठता से परिपूर्ण होता है। मेरा नई पीढ़ी से यही अनुरोध है कि ऐसी दृष्टि अपनाकर चलें और हमारे निगम को दिन–प्रतिदिन नई ऊंचाइयों को छूने में अपना पूर्ण सहयोग करें। इतना कहने के बाद उनका गला अवरुद्ध हो गया। करतल ध्वनियों के बीच मंच से उतरते हुए उन्होंने सभी के साथ हाथ मिलाया, गले मिले और धीरे–धीरे ऑफिस के मेन गेट तक प्रस्थान किया। रामनाथ साहब का बैग लेकर पीछे–पीछे गया और साहब के अंतिम बार चरण छूते हुए रो पड़ा। ❑

आज क्यों मानव बधिर है

वरूण भारद्वाज*

आज मानव बधिर है परमार्थ के नाम से।
जागती है उसकी मेघा, स्वार्थ के ही नाम से।।
दूसरों के दुख से सुखी हो, कैसा पुलकित हो रहा।
दूसरों के आंसुओं से, खेल सिंचित उसका हो रहा।
हर किसी की आह पर, वह वाह! कह कर हँस रहा।
दूसरों की मजबूरियों से, राज उसका चल रहा।।
धर्म के पथ पर है पंगु, अधर्मी जग का सरताज है।
सुर के आगे आ लगाकर नित्य करता पान है।।
करुणा, श्रद्धा, प्रेम से, स्वयं हटकर चल रहा।
ईर्ष्या–बैरी भाव से, श्रृंगार अपना कर रहा।।
आज क्यों मानव बधिर है, परमार्थ के नाम से।
भागता है दूर क्यों, इस जगत कल्याण से।।
भूल क्यों जाता है मानव, प्रेम, श्रद्धा, दान तू।
इन सबसे ही होगा तेरा, इस जगत में नाम है।।
त्याग अस्थि कर दधीचि, देते सुरों को दान हैं।
भोले शंकर सृष्टि हेतु, करते हलाहल पान हैं।
वीर राजा राज्य तजकर, करते तपस्या ध्यान है।
मस्त हाथी भी उन्हें करे बारंबार प्रणाम हैं।।
आज फिर तू क्यों बधिर है, परमार्थ के नाम से।
जान ले हे मनुष्य! यह जगत है परमार्थ से।।

* हिंदी अनुवादक, क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

बार–बार कहने से झूठ सच नहीं हो जाता।

गाँवों से शहरों की ओर पलायनः बढ़ता खतरा

परिमल मिस्त्री*

पता नहीं लोग यह क्यों नहीं समझना चाहते कि जब गाँव जागृत होगा तभी पूरा देश जागृत होगा, क्योंकि देश की दो तिहाई जनसंख्या गाँवों में रहती। नगरीय संस्कृति में कई बार अपनों की भी पहचान नहीं रह पाती है। शहर में तो कई बार लोग अपने रिश्तों को भी किस्तों में जीने लगते हैं और रिश्तों में भी जीवन बहुत कम रह पाता है। जीवन में रिश्ते तो बहुत मिल जाते हैं पर रिश्तों में जीवन गाँव में ही संभव है। इतना ताकतवर होते हुए भी गाँव आज सबसे उपेक्षित है, गाँव का विकास ही देश के समग्र विकास की आधारशिला है।

गाँव का सही विकास इसमें है कि शिक्षा, स्वास्थ्य, जल प्रबंधन, विद्युत प्रबंधन और आस–पास के क्षेत्र को और ज्यादा हरित किया जाय और ज्यादा गुणवत्तापरक फसलों को आगे बढ़वाया जाए। ग्रामीण अपने गाँव के लिए चिंतित हों, किसान ऐसी फसलें बोएं जो जैविक खेती से, जैविक खाद से आगे निकल जाएं। रासायनिक खादों के प्रयोग से परिणाम तो जल्दी आ जाता है लेकिन अंतिम परिणाम हमारे स्वास्थ्य का नकसान है। गाँव का स्वास्थ्य ठीक रहेगा तो हमारे शहरों का स्वास्थ्य ठीक रहेगा, गाँव का स्वास्थ्य ठीक है तो हमारे देश का भी स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

गाँव और शहर की अर्थव्यवस्था में मूल संरचनात्मक अतंर है। गाँव एक उत्पादनकर्ता है जो नगर के लोगों के जीवन का आधार है, किन्तु जो अन्न उसके हाथ से निकल जाता है, उसे पुनः खरीदना उसकी क्षमता से बाहर होता है, क्योंकि उसका मूल्य निंरतर बढ़ता ही जाता है। इस प्रकार उसे पुनः खरीद पाना उसके लिए संभव नहीं है। यही कारण है कि उसे वर्ष भर के लिए अनाज स्टॉक करने की क्षमता विकसित करनी पड़ती है। दूसरी और नगर में लोगों के पास स्टॉक करने की सुविधा नगण्य होती है, किसी को पांच किलो आटे का पैकेट लाते हुए देखना एक आम बात है। पानी भी निश्चित समय पर सीमित अतंरालों में आता है, जरा सा चूके और पानी का संकट आया। आपातकालीन स्थितियों में नगरीये परिवेशे में घरों में एक बाल्टी पानी तक नहीं निकलता।

नगरीय व्यवस्था में ट्रांसपोर्टेशन का बहुत योगदान है। कई बार नगरों की पहचान ही इससे होती है। फिर भी शहर में कम से कम एक दिन बासी सब्जी तो मिलती ही है और अधिक भी हो सकती है पर गाँव में ऐसा नहीं होता। हाँ एक मामले में बड़े शहर अवश्य गावों से आगे हैं, वह है चिकित्सा व्यवस्था, गाँव में आजकल डॉक्टर जाना भी नहीं चाहते हैं।

वास्तव में वर्तमान पढ़ाई और लिखाई का कृषि संबंधी कार्य, हस्तकारी और ग्रामीण जीवन से जुड़े मुद्दों से कोई संबंध नहीं है, तथा शिक्षित व्यक्ति गाँवों में स्वंय को बेकार महसूस करता है और वह शहर की राह पकड़ लेता है। आज ग्रामीण यह सोचने लगे हैं कि जब हर कार्य के लिए शहर ही जाना पड़ता है तो क्यों न शहर में ही बसा जाए और मजबूरी में विकसित हुई इसी सोच के चलते गाँवों से शहरों की ओर पलायन का काम चल रहा है। सच तो यह कि गाँवों से शहरों की ओर आबादी का पलायन देश के विकास और पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा है। ❑

* अधीक्षक, आईसीपी, पैट्रापोल, कोलकाता क्षेत्र

राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए ....

राजभाषा अधिनियम-1963 की धारा 3(3) का अनुपालन, राजभाषा नियम-1976 का अनुपालन, नियम 10(4) के अधीन कार्यालय को अधिसूचित करना, हिंदी दिवस एवं हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन, पत्र-पत्रिकाओं का हिंदी में प्रकाशन, संसदीय आश्वासनों की पूर्ति एवं राजभाषा नियम-12 के अनुसार अनुपालन का उत्तरदायित्व आदि महत्वपूर्ण हैं।

तानाशाह

- सुखबीर कुमार भारद्वाज*

सुबह बस से उतरते ही खुशी–खुशी मन में एक फिल्मी धुन गुनगुनाते हुए हम अपने ऑफिस की तरफ चल दिये। आजकल हम उन खुशनसीबों की लिस्ट में अपना नाम देखते हैं जो किसी न किसी सरकारी या अर्ध सरकारी दफ्तर में कार्य करते हैं। खुदा की फजल से मुझे भी एक प्राइवेट कैमिकल कम्पनी में नौकरी मिल गई। नौकरी अस्थाई थी मगर आठ दस महीने बाद पक्की होने की उम्मीद थी। इस नये दफ्तर में अभी मुझे चार ही महीने हुए थे। हम अपने आप को हमेशा इस प्रयत्न में लगाये रहते थे कि किस तरह सुपरवाइजर को खुश रख सकें ताकि हम अपनी तरक्की के मार्ग में आई तमाम विघ्न–बाधाओं को आसानी से पार कर सकें। इन चार महीनों में हमने अपने साहब को किसी तरह की शिकायत का मौका नहीं दिया था। हमें जितना भी कार्य मिलता उसे शाम से पहले ही निबटा देते और फाईलों के इन्तजार में अपने आप को बैठा पाते। कुछ महीनें ऐसे ही आराम से गुजर गये। मेरा कार्य अच्छी तरह से चल रहा था।

आज भी इसी तरह की उम्मीद लिये मैं दफ्तर में दाखिल हुआ। सामने से आते हुये सुपरवाइजर साहब के दर्शन हो गये। मुझे गौर से देखते हुये वे अपने कमरे में दाखिल हो गये। मैं भी जेब से पैन निकाल उनके साथ कमरे में दाखिल हो गया, दैनिक हाजिरी के लिये उनके ही कमरे में जाना होता था। जब हाजिरी दर्ज करके मैं बाहर आने लगा तो पीछे से सुपरवाइजर साहब की कड़कती आवाज सुनाई दी। मिस्टर उदय, जरा रुकना। मैं सहमा–सा सुपरवाइजर के सामने जा खड़ा हुआ और आने वाली मुसीबत के बारे में मन में अन्दाजा लगा–लगाकर परेशान हो गया। लाख सोचने पर दिमाग में कुछ भी न आया कि मैंने क्या गलती कर दी जो सवेरे–सवेरे लाईन हाजिर होना पडा। आज न जाने किस मनहूस का चेहरा देखने को मिला था। मेरे होठों से धीरे–धीरे संकटमोचन का जाप निकल रहा था। लगभग आधे घण्टे तक वे दर्जनों जगह फोन कर–करके गुड मार्निंग 'पाय लागू साहब' आपका बच्चा बोल रहा हूँ, साहब जैसे शब्द बोलकर अपने सीनियरर्स को मक्खन लगाते रहे।

जब उनका यह दैनिक कार्य निबट गया तो वे मुझसे मुखातिब हुये। कुछ समय सुपरवाइजर साहब की पैनी नजरें मेरे चेहरे के ईद–गिर्द कुछ तलाशती रहीं फिर बर्फ जैसे सर्द लहजे में बोले मिस्टर उदय, कुछ दिन से तुम्हारी सीट पर फाईलों के ढेर लगे हैं। क्या आजकल काम नहीं करते, पहले तो आपने बहुत अच्छा कार्य किया, अब क्या हुआ। क्या अब नौकरी की जरूरत पूरी हो गई है। जहां नौकरी का सवाल आया, मैं कुछ ज्यादा ही डर गया। डर के मारे शरीर में सिरहन–सी दौड़ गई। सारे शरीर में चीटियाँ–सी रेंगने लगी। मैंने कुछ हिम्मत बटोरकर सुपरवाइजर जी से कहा, नहीं साहब, मेरी सीट के साथ जो स्टाफ हैं, उनका काम भी मुझे दिया जा रहा है। इसीलिए काम कुछ ज्यादा होने के कारण रह जाता हैं। वैसे कार्य तो मैं पहले से भी ज्यादा लगन और मेहनत से करता हूँ।

इतना सुनना था कि उनका हाथ घण्टी के बटन की तरफ सरक गया और कहीं दूर घण्टी का धीमा–सा स्वर सुनाई दिया। कुछ समय बाद एक चपरासी भागता हुआ कैबिन में आया तो सुपरवाइजर जी ने उसे यह कहकर उल्टे पांव लौटा दिया कि जाकर साहबजादे की सीट पर पड़ी फाईलों को गिनकर तो आना। जरा जल्दी करना, फिर चाय का भी वक्त होता जा रहा है। मेरे मन में बार–बार ख्याल आ रहा था कि आज मैं किस मनहूस का चेहरा देखकर दफ्तर चला था। ''हाय, वह मुझसे कुछ बात भी कर लेता तो मुझे अवश्य

* वरिष्ठ निजी सहायक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

मालूम हो जाता कि किस ने मुझे सुबह–सुबह अपना मनहूस चेहरा दिखाया है तो आज शाम ही वह पड़ोस छोड़कर कहीं दूर मकान ले लेता।'' इसी उधेड़बुन में मुझे ध्यान ही नहीं रहा कि कब चपरासी आकर चला गया। चपरासी ने आकर बताया है कि तुम्हारी सीट पर 27 फाईलें हैं। फाईलें ज्यादा बड़े मैटर की भी नहीं हैं, अतः तुम एक फाईल को 15 मिनट में निपटाते हो तो मेरे ख्याल से आज शाम तक सारी फाईलें हो जानी चाहिये। अगर आज तुम लन्च न भी लो तो कोई बात नहीं। लन्च में भी तुम कम–से–कम चार–पांच फाईलें निकाल सकते हो। तुम्हें ज्यादा ही भूख लग जाये तो शाम को घर जाते वक्त केन्टीन में जाकर लन्च कर आना और हां, मेरी पी.ए. की सीट पर ज्यादा फाईलें मत आने दिया करो। जहां तक हो सकें। तुम उसके भी पी.ए. बनने की कोशिश करो।

हम उस कैबिन से उतरा चेहरा लिये बाहर हुये। बाहर टेलीफोन पर मेरी पुकार हो रही है। भाभी का फोन था, कल छुटटी लेने को कहा था क्योंकि बड़े भाई के साले साहब जो आजकल रोम में रह रहे हैं, कल की फ्लाइट से दिल्ली आ रहे हैं। भाभी ने बड़े आदेशात्मक लहजे में मुझे अपना आदेश सुनाकर फोन रख दिया। मगर उस बेचारी को क्या मालूम कि यहां पर मेरे ऊपर क्या गुजर रही है। मेरी नन्हीं–सी जान के पीछे मेरा रंगीन बालों वाला साहब हाथ में चाकू लिये घूम रहा है।

छुटटी की अर्जी लेकर साहब के कमरे में मुझे फिर से जाना पड़ा। मुझे दोबारा आते देखा तो सुपरवाइजर साहब संभल कर बैठ गये। एकटक मेरे चेहरे को ताकते रहे, फिर खीजने वाले अन्दाज में चीख उठे, अब क्या हुआ। मैंने डरते हुये अपनी दो दिन की छुटटी की अर्जी उनके सामने सरका दी। मेरी अर्जी को गौर से देखते रहे। फिर उन्होंने जेब से रूमाल निकाल कर अपना नाक पौंछा, गुटके की पन्नी फाड़ उसे अपने मुंह में उड़ेला, रूमाल से मुंह के बाहर लगे पाउडर को पौंछा, फिर अचानक धड़ाम से अपना सीधा हाथ सामने बिछी मेज पर दे मारा। क्या खाक छुट्टी मंजूर करूं, काम–वाम तो कुछ करते नहीं। सुबह से सारा काम तो वैसे ही पड़ा है। न ही तुम मेरी पी.ए. की फाईलें लेकर टाईप करते हो। बेचारी सुबह से चार बार मेरे केबिन में आकर फूट–फूटकर रोकर गई हैं कि उसके पास आज कुछ ज्यादा ही फाईलें आ गई हैं। अपनी कटोरी जैसी आंखों में आसूं भरकर कह रही थी कि उसकी फाईलें किसी और को दे दीजिए, सो, तुमसे सुबह भी कहा था कि उसकी सीट पर नजर मार लिया करो और उसकी फाईलें अपनी तरफ सरका लिया करो। मगर कान पर जूं नहीं रेंगती। तू मेरा बिरादरी भाई हैं, इसलिए तेरे से पहले भी कहा था और अब भी कह रहा हूँ, तेरी भलाई इसी में हैं कि तू उसका भी काम कर दिया कर और काम करने के बाद फाईलें उसकी सीट की तरफ सरका दिया करो ताकि कहने वालों के मुंह बंद हो जायें कि मैं अपनी निजी सहायक से भी काम करवा लेता हूँ, वे भी देख लें कि मैडम भी काम करना जानती हैं और यह काम उसने ही किया है।

मैंने थूक सटक कर अपनी सफाई पेश की, साहब जी, आपने तो अब कहा है मगर वो तो पिछले तीन महीने से अपनी सारी फाईलें अभी तक आपका नाम ले–लेकर मुझसे ही तो करवाती रही हैं कि अर्जेन्ट है, साहब ने कहा है, इन्हें पहले कर दो। अपने आप तो सारा दिन सूट–सलवार में हाथ से की सिलाई तो कभी तिरपाई करती रहती हैं। उसका काम न करूं तो आपसे कहने की धमकी देती हैं।

इतना सुनना था, कि वे चीख उठे, वो चाहे यहां कुछ भी करे, वह मेरी निजी हैं मेरा मतलब निजी सैक्रेटरी हैं। तुझे क्यों मिर्चें लग रही हैं। अब चुपचाप निकल जा यहां से, मैंने जो कहना था, सो कह दिया, तुझे ही उसकी सारी फाईलें निकालनी होंगी, समझे। उसकी क्या अब तो पूरे विभाग की निकालनी होंगी। अभी मीटिंग बुलाकर सबसे कहला देता हूँ। विभाग में कोई भी टाईपिंग का कार्य आये तो उसे सीधा तेरे पास भिजवा दें। बिरादरी का कुछ ज्यादा ही फायदा उठा कर मेरे सिर पर चढ़ा जा रहा है। मैं मिमियाता हुआ कह उठा, लेकिन सर, मेरे पास पहले से ही कुछ ज्यादा काम है। यहां तो चाय भी पीना छोड़

दिया है और आज आपने लंच लेने से भी मना कर दिया है। इतना सुनना था कि सुपरवाइजर साहब ने दहाड़ते हुये अपना हाथ धड़ाम से मेज पर दे मारा। वे बार–बार आदत के मुताबिक ऐसा कर रहे थे। अब शायद मेज के सब्र का प्याला भर चुका था। सो, साईड में रखी फाईल पर रखा पेपरवेट लुढ़क कर मेज के बीच आ रुका। सुपरवाइजर को इसकी जरा भी भनक न लगी। मेरी किसी बात से भड़क कर उन्होंने फिर मेज फर हाथ दे मारा। अगले ही पल कमरे में एक दर्द भरी चीख गूंज गई। साहब ने अपना जख्मी हाथ दूसरे हाथ में लेकर दबा लिया। वे टेबल के मध्य पड़े पेपरवेट को इस तरह निहार रहे थे जैसे उसे मैं अपने साथ लाया था और उनकी नजरें बचाकर मेज के बीच रख दिया था। वह कभी उसे तो कभी मुझे देख रहे थे। उनकी कमजोर और बूढ़ी आँखों में आँसू भर आये। अपने आसुँओं को छुपाने हेतु उन्होंने मेरी तरफ पीठ मोड़ ली और हाथ के इशारे से मुझे बाहर निकल जाने को कहा। मैं अपनी अर्जी उनकी मेज पर उसी खूनी पेपरवेट के नीचे रख कर बाहर निकल आया। वे मेरे साथ दरवाजे तक आये और पीछे से दरवाजा बन्द करके वापस अपनी सीट पर जाकर बैठ गये और अपनी कुर्सी के पुस्त पर पड़े तौलिये को लेकर फूट–फूटकर रोने लगे। उनसे जहां तक हो सका वे इस प्रयास में थे कि उनकी आवाज कमरे से बाहर न जा सके।

मेरा सिर दर्द से बुरा हाल था। सो आगे वाली मेज पर कार्य करने वाले एक सज्जन से, जो साऊथ से आये थे, यह कह कर कैन्टीन चला गया कि चाय पीने की इच्छा हो रही है। सुबह–सुबह सिर में दर्द हो चला था। उस समय मुझे चाय की सख्त जरूरत थी, जिसके न मिलने पर मेरा पागल हो जाना निश्चित था। कोई आधा घंटे बाद जब मैं अपने कमरे मे आया तो पाया कि सारा स्टाफ एक जगह इकट्ठा जमा है जिससे बहुत शोर हो रहा था। मैंने कांपते–कांपते कमरे में कदम रखा। सभी मेरी तरफ अजीब–अजीब नजरों से देख रहे थे। वे सज्जन जिनसे मैं कह कर बाहर गया था, उनके पास जाकर मैंने इस शोर का कारण पूछा तो मालूम हुआ कि बूढ़ा अपने कैबिन से चार–पांच बार बाहर आ चुका है। बार–बार तुम्हें बुलाने को कहता है। न जाने क्या बात है, बड़े गुस्से में है। उनके बायें हाथ पर पटटी भी बंधी है। आपके साथ उनकी लड़ाई हो गई, क्या? क्योंकि जब वे सुबह आये थे तो वे सही सलामत थे। उसके बाद जब वे बाहर आये तो उनके हाथ में पट्टी बंधी थी। बार–बार बाहर आकर कह रहे थे कि इस उदय के बच्चे का हिसाब न कर दिया तो मेरा भी नाम नहीं। कई कर्मचारियों को तुम्हारी तलाश में दौड़ाया गया है।

अचानक ही सुपरवाइजर साहब के केबिन का दरवाजा खुला। उस बूढ़े, सुपरवाइजर की चहेती, कैबिन से निकल रही थी। उसने अपनी अजगर जैसी आंखों से मुझे घूरा और फिर से सुपरवाइजर के कैबिन में जा समाई। उसके अन्दर जाते ही तुरन्त चपरासी बाहर आया और बड़े अजीब अंदाज से मुस्कुराकर मुझसे बोला, चलो, सुपरवाइजर साहब ने तुम्हें अभी तलब किया हैं, अभी चलो।'' मैं चपरासी के साथ केबिन की तरफ चला। मेरा पड़ोसी कर्मचारी मुझे दया भरी दृष्टि से निहार रहा था। वह जिस तरह मुझे देख रहा था उससे ऐसा लगता था कि मैं केबिन में सुपरवाइजर से मिलने नहीं, फांसी के तख्ते पर चढ़ने जा रहा हूँ। मेरे साथ–साथ उसका दिल भी बैठा जा रहा था और मुझे यकीन हो चला था कि इस कार्यालय में आज कोई अहम फैसला होने वाला है।

चपरासी को बाहर खड़ा करके जब मैं अन्दर गया तो पाया कि सुपरवाइजर साहब हीटर पर अपना जख्मी पंजा टिकाये उसे सेंक रहे थे। उनकी चहेती उनके साथ सोफे पर बैठी थी। मुझे देखते ही उनकी आँखों में खून तैर आया और वे संभल कर बैठ गये। कुछ देर तो वे मुझे बड़े गौर से देखते रहे, शायद समझने की कोशिश कर रहे हों कि में वास्तव मैं क्या बला हूँ। फिर बड़े प्यार से बोले, ''मिस्टर उदय, तुम यहां नहीं टिक सकते, तुम किसी काम के नहीं हो। देहाती हो, आफिस के भी कुछ नियम कानून होते हैं, जिनको तुम हरियाणवी जीव नहीं समझ सकते, मैंने सोचा तुम्हारा हिसाब कर दूं क्योंकि मैंने तुम्हें नौकरी देकर बहुत गलत किया है।

तुम वाकई में बेहद निक्कमे हो।'' मैं हिम्मत करके बोला, ''लेकिन सर...।'' वे मेरे से भी दुगुनी तेजी से कुर्सी से उठकर दहाड़े, ''वॉट सर, मैं कह चुका कि तुम यहां नहीं टिक सकते। अब तो बेटा या तो इस ऑफिस में तुम रहोगे या फिर मैं। मैंने तो लगभग अपनी नौकरी पूरी कर ली है, रिटायरमेंट पर हूँ, मेरी नौकरी कल जाती हो तो आज चली जाये, मगर अब तुझे यहां नहीं टिकने दूंगा।'' लगातार चल रहे वार्तालाप से उन्हें फिर गुस्सा चढ़ आया था।

मगर हाय, अपनी आदत से मजबूर, जिस हाथ में चोट लगी थी, उसे दोबारा पूरी ताकत के साथ धड़ाम से मेज पर दे मारा और उस खूनी पेपरवेट ने, जो अभी तक मेज के मध्य पड़ा था, उनके हाथ को लपक कर खुशी से चूम लिया। उस पर हाथ पड़ते ही उनकी हृदय विदारक चीख से उनका कमरा क्या, सारा दफ्तर दहल उठा। वे अपने दूसरे हाथ में अपना जख्मी हाथ लेकर कमरे में नाचने लगे। जिस हाथ पर चोट लगी थी, उस हाथ को वे इस तरह ऊपर उठाये हुये थे, जैसे उसे छत से ट्च करना चाहते हों। उनकी चीख सुनकर सुपरवाइजर के कैबिन के बाहर बैठा चपरासी झटपट अन्दर आया और उसी वक्त बाहर हो गया। उनकी चीख से सारा स्टाफ केबिन के दरवाजे पर आ जमा। सभी की निगाहें मेरे दोनों हाथों पर टिकी थीं, उनका ख्याल था कि शायद जिस हथियार से मैंने उनके साहब पर हमला किया है, उन पर भी हमला कर सकता हूँ। मैं सुपरवाइजर साहब को रोता–बिलखता छोड़, केबिन का दरवाजा खोल बाहर निकल आया।

मेरे सीट पर बैठते ही सारा स्टाफ मुझे घेर कर यह जानने की कोशिश करने लगा कि अन्दर साहब क्यों रो रहे हैं। क्या तुम्हारी उनसे हाथापाई हो गई है। जितने मुंह थे, उतनी बातें बनाकर वे मुझ पर थोप रहे थे। सभी को एकतरफ कर मैंने टाईपराइटर पर सर रखकर आंखे बंद कर लीं। बार–बार यही ख्याल आ रहा था कि आज तो बच्चू मेरी नौकरी गई। इस कशमकश में मेरा पूरा दिन बीत गया।

दूसरे दिन सुबह मुझे दफ्तर आना पड़ा क्योंकि छुट्टी नहीं मिली थी। आते ही पैन लेकर सुपरवाइजर साहब के कैबिन में गया तो उनकी सीट खाली पड़ी थी। दैनिक हाजिरी रजिस्टर में हस्ताक्षर किये और अपनी सीट पर आकर बैठ गया। उसी समय चपरासी ने मुझे एक बेहद ही खूबसूरत लिफाफा लाकर दिया जिसके बदले पीयनबुक में मेरे हस्ताक्षर लेकर चला गया। मैं हैरान था, न जाने कहां से खत आ गया। मैंने लिफाफा खोलकर देखा। उसके अन्दर सुपरवाइजर साहब की तरफ से मुझे मीमो दिया गया था, जिसमें मुझ पर ढ़ेर सारे आरोप लगाये गये थे तथा उनका जवाब मुझे तीन दिन के अन्दर देना था। मुझ पर लगाये गये आरोप यदि निराधार पाये जाते हैं तो मुझे तत्काल क्षेत्रीय कार्यालय, कलकत्ता में अपना कार्यभार संभालना था क्योंकि इस कार्यालय में इस समय मेरे हेतु कोई पद खाली नहीं था। अगर मैं वहां जाने से इन्कार करता हूँ तो कार्यालय को अधिकार है कि वे मेरी सेवा को तत्काल निरस्त कर दे।

मैंने अपना माथा पीट लिया। सिर के बाल नोच डाले। मीमो फाड़ कर उसी चपरासी को दे दिया। क्या करता, चिड़ियां तो उड़ चुकी थी यानि बूढ़ा तो एक महीने की छुट्टी लेकर कहीं दूर किसी हॉलिडे रिर्सोट में चला गया था। जाते–जाते वह मेरे ऊपर ऐसी मिसाईल दाग गया था जिससे मेरा इतना नुकसान हुआ जितना कभी जापान का हुआ था और जिसकी आज तक भरपाई नहीं हो पाई। बूढ़े ने मुझ पर ऐसे–ऐसे इल्जाम लगाये थे कि जिनसे बच पाना मेरे लिये आसान न था। सात–आठ हजार रुपये कहीं से कर्जा उठाकर, किसी के कहने पर गठित कमेटी को खिलाये गये मगर वे कुछ काम न आये। उसे भी हराम का माल समझ कर डकार गये। करीब महीने भर तक यह नाटक होता रहा।

मुझे वहां से हटा दिया गया। हाथ में तीन महीने का नोटिस लिये जैसे ही मैं ऑफिस से बाहर आया तभी सुपरवाइजर की एम्बेसडर कार सामने से आती नजर आई। वे उसमें इस तरह बैठे थे जैसे कोई युद्ध जीत कर आ रहे हों। मेरे हाथ में नोटिस के चेक का लिफाफा देखकर उनके चेहरे पर खुशी छा गई। ❑

समय से पहले और भाग्य से अधिक कुछ नहीं मिलता।

अतिथि देवो भवः

शशि बाला*

अतिथि यानि मेहमान। भारत में अतिथि को भगवान का रूप माना जाता है। भारतीय संस्कृति की यह विशेषता है कि यहाँ के लोग मेहमान की मेहमाननवाजी, उसकी सेवा करने में कोई कसर नहीं छोड़ते। हमारे देश के लोगों में अपनेपन की भावना है, वे रिश्तों का मान रखते हैं परन्तु आजकल शहरों में लोगों के पास समय का इतना अभाव रहता है कि वे बड़ी मुशिकल से समय बचा पाते हैं। ऐसे में वे चाहते हैं कि वे उस समय को अपने ऊपर ही खर्च करें। शहरों की भागदौड़ भरी जिंदगी में कुछ लोग नहीं चाहते कि मेहमान उनके घर आयें। ऐसे में जब कोई मेहमान उनके घर आता है तो वे बेमन से उनका स्वागत–सत्कार करते हैं और चाहते हैं कि मेहमान जल्दी चले जाएं जिससे वे अपनी रूटीन लाईफ में वापस आ सकें और अपनी पसंद का काम कर सकें।

इसके विपरीत कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो चाहते हैं कि उनके घर मेहमान आयें और बच्चे भी जानें कि 'अतिथि देवो भवः' क्या होता है? कैसे मेहमानों का स्वागत–सत्कार किया जाता है और कैसा महसूस होता है जब हम अपने रिश्तेदारों से मिलते हैं। कुछ पुरानी यादें ताजा होती हैं और नई यादें बनती हैं। हमें यह महसूस करना चाहिए कि जो व्यक्ति अपना काम–काज छोड़कर हमारे लिए समय निकालकर हमसे मिलने आते हैं, कुछ अतिथि तो ऐसे होते हैं जिनसे कई वर्षों बाद मिलना होता है, तो ऐसे मेहमानों को हमें भी उसी मन से अपनाना चाहिए और दिल से उनकी मेहमाननवाजी करनी चाहिए।

इसके विपरीत मैं कुछ ऐसे मेहमानों का जिक्र करना चाहूंगी जो ज्यादा दिन के लिए रहने लगते हैं और हमें बोझ से लगने लगते हैं। पिछले दिनों मैं अपनी सहेली से बात कर रही थी तो उसने बताया कि 'उनके घर एक मेहमान आयी है जो उनके दूर के रिश्तेदार की बेटी है। कुछ दिन रहेगी और चली जाएगी पर आज 20 दिन हो गए हैं और वो जाने का नाम नहीं ले रही है। उसके घर भी फोन किया कि इसकी तबीयत ठीक नहीं है कृपया इसे ले जाएं और इसका इलाज कराएं। परन्तु इसके जबाब में उसे सुनने को मिला कि 'क्या तुम इसका इलाज नहीं करा सकतीं।' अब देखिए कि आजकल के जमाने में जहाँ एक मध्यमवर्गीय परिवार को खुद का खर्चा चलाना मुश्किल होता है और वे इतने लम्बे समय तक मेहमान को अफोर्ड नहीं कर सकते। मेहमान कुछ दिनों तक ही अच्छे लगते हैं, फिर बोझ लगने लगते हैं, इससे रिश्तों में दरार आती है। अतः मेहमानों को भी सोचना चाहिए कि वे अतिथि की गरिमा का ध्यान रखें, किसी की निजी जिंदगी में दखल न दें, इससे रिश्तों कि मिठास कम होने लगती है। एक और घटना बताना चाहती हूं, हमारे फैमिली फ्रैंड के यहां उनके दोस्त का बेटा अपने एडमिशन के काम से कुछ दिनों के लिए रहने आया, यही कोई 22–23 वर्ष का रहा होगा। उसके लिए उन्होंने उसे अपने बेटे का कमरा रहने के लिए दे दिया। कुछ दिन तो सब कुछ ठीक रहा लेकिन बाद में जगह–जगह उसके कपड़े, किताबें आदि बिखरी पड़ी रहती थीं, खाना खाकर बर्तन छोड़ देना, दोस्तों का आना–जाना कुछ ज्यादा ही हो गया था। अब ऐसे मेहमानों से कौन पीछा छुड़ाना नहीं चाहेगा।

एक घटना कुछ अच्छे मेहमानों कि बताना चाहती हूं। अभी कुछ दिनों पहले हमारे दूर के चाचाजी गाँव से हमसे मिलने आये, वे अपने बेटे का शादी का कार्ड देने आये थे। उनके बहुत से रिश्तेदार दिल्ली में रहते थे। हमने उनसे कहा कि कुछ दिन यहाँ रहिए और सभी रिश्तेदारों को कार्ड, शादी की शॉपिंग वगैरह–वगैरह काम भी निपटा लीजिए। हमारे काफी कहने पर वे मान गए। हमें तो रोज ऑफिस जाना होता है और बच्चे स्कूल के

* हिन्दी अनुवादक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली।

सच्चे मित्र भाग्य से मिलते हैं।

बाद घर पर अकेले होते हैं। एक दिन अचानक मेरे बेटे को खेलते हुए चोट लग गई, इस पर उन्होंने आव देखा ना ताव और उसे जल्दी से हॉस्पिटल लेकर भागे। वहां पता चला कि उसके हाथ में फ्रैक्चर हुआ है। उन्होंने शादी की शॉपिंग के लिए जो पैसे रखे थे, उससे उसका इलाज करवाया, प्लास्टर लगवाया और तब कहीं जाकर दो–तीन घंटे बाद वे घर पहुंचे। तब तक हम भी घर आ गए थे। उनकी इस निःस्वार्थ भावना को देखकर हमारा दिल भर आया। हमने उनको दिल से धन्यवाद दिया।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम ऐसे देश में रहते हैं, जहां दुशमन को भी गले लगा लेते हैं, फिर अतिथि तो हमारे अपने होते हैं। हमारे लिए समय निकालकर हमसे मिलने आते हैं। आजकल, भारत जो अपनी मेहमान नवाजी के लिए मशहूर है, कुछ जगह पर अपनी पहचान खोता जा रहा है। हम सभी को सकारात्मक सोच रखनी चाहिए तथा अपनी संस्कृति या जो कुछ हमने अपने पूर्वजों से सीखा है यानि अतिथि देवो भवः अपने मन से अपनाना चाहिए और बच्चों को भी यही शिक्षा देनी चाहिए कि घर पर आए मेहमान का सम्मान करना चाहिए, उसका सत्कार करना चाहिए और यदि वो किसी परेशानी में है तो उसके मदद करनी चाहिए। अतः मेहमान भगवान का ही रूप होता है, हमें उसकी सेवा–सत्कार पूरे मन से करना चाहिए। ❑

दिल की आवाज़

मो. अरशद *

बन्द जिस दिन धड़कनों का साज़ होगा दोस्तों।
मेरे सिर पर वो कफ़न का ताज़ होगा दोस्तों।
बाद मरने के मेरा दिल चीर कर तुम देखना।
मेरी बर्बादी का उसमें राज होगा दोस्तों।।
आकर मेरी लाश पर आँसू बहाना न कोई।
मौत से मिलने का ऐसा अन्दाज़ होगा दोस्तों।।
बन्द जिस दिन धड़कनों का साज़ होगा दोस्तों।
मेरे सिर पर वो कफ़न का ताज़ होगा दोस्तों।।
बन–सवँर कर आज घर से वो जो निकलेगी अगर।
सोच लेना हादसा कोई आज होगा दोस्तों।।
बन्द जिस दिन धड़कनों का साज़ होगा दोस्तों।
मेरे सिर पर वो कफ़न का ताज होगा दोस्तों।।
"अरसद" के मरने की खबर सुनकर वो हँस देगी अगर।
उनको अपने हुस्न पर कुछ नाज़ होगा दोस्तों।।
बन्द जिस दिन धड़कनों का साज़ होगा दोस्तों।
मेरे सिर पर वो कफ़न का ताज़ होगा दोस्तों।

* कनिष्ठ तकनीकी सहायक, सैन्ट्रल वेअरहाउस, इन्द्री (करनाल)

यह संभव था कि...

राजीव शर्मा*

यह संभव था कि
समय के साथ सभ्य, गुणी व ज्ञानवान होना
यथोचित आदर देना और पाना
परिकल्पना को धरातल तक ले जाना
खरे खोटे की परख, झूठ सच में भेद व
सामने बैठे व्यक्ति को सही मूल्यांकन कर पाना।

वह सब मैं कई वर्षों से कर रहा हूँ, लेकिन
क्या मैं अपने प्रयास में खरा उतरा?
नहीं।

मैं केवल
दूसरों के दोषों को नकारता गया
सबको अपनाने की चाह में
अपने से समझौता करता गया
वजूद से ज्यादा खर्चता गया।

शायद मैं–
दिखावा ना चाहते हुए भी करता गया
आज करने को कुछ नहीं है, इसीलिए बस
अपना मूल्यांकन कर, अपनी सतह खोजता हूँ।

* पूर्व सहायक महाप्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई

मानवता का इतिहास विचारों का इतिहास है।

भाग्य का लिखा

दयानिधि अग्रवाल*

भाग्य से बड़ा कुछ नहीं, इसका अर्थ यह न लगाया जाए कि कोई कार्य न करें क्योंकि जो भाग्य में लिखा है, वही मिलेगा। आप काम करेंगे तब ही भाग्य उदय होगा।

भगवान श्रीराम के विवाह में कुंडली मिलाई गई, 36 गुण मिले जो सर्वाधिक हैं, लेकिन श्रीराम के जन्म के समय ही महान त्रिकालदर्शी मुनियों द्वारा जीवन में अत्यंत कठिनाई की भविष्यवाणी की गई थी। लेकिन उसका उपाय कुछ भी नहीं था? उन्हें वनवास मिला अपनी पत्नी से विरक्त होना पड़ा। भले ही वे पूजे जाते हैं लेकिन भाग्य से बड़ा कुछ नहीं।

पिछले दिनों चक्रवर्ती सम्राट अशोक का सीरियल चल रहा था जिसमें अशोक का अपनी चहेती राजकुमारी से विवाह नहीं हो सका क्योंकि उनकी असफलता और जीवन में अनिष्ट होने के कारण उन्हें राजकुमारी की सखी के साथ विवाह करना पड़ा। यह भी भाग्य के कारण है।

भाग्य के साथ कुंडली का मिलान सर्वथा आवश्यक है, यह मेरी नहीं ज्योतिषियों की वाणी है, तभी हमारे पूर्वज विवाह के पूर्व कुंडली मिलाने पर ध्यान देते रहे हैं। कुंडली के 19 से अधिक व 36 तक गुण मिलने पर ही सफल दाम्पत्य जीवन सुखमयकारी माना जाता रहा है। यदि कुंडलियों में पर्याप्त अंक का मिलान न हो तो दाम्पत्य जीवन सुखद नहीं होगा, ऐसा माना गया है।

कलयुग में लोग इसे गलत समझने की भूल कर रहे हैं, उन्हें इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि गृह नक्षत्रों के चलते प्रत्येक दिन जो बीत चुका है, आगे वैसा नहीं होगा, ऐसा क्यों? यह सब कुछ नक्षत्रों के कारण है। आज प्रेम विवाह असफल होने का मुख्य कारण यही हैं। अचानक पारिवारिक हानि भी इसीलिए बढ़ रही है। अभी एक रिवाज चल रहा है "लिवइन रिलेशन" जिससे पाश्चात्य देशों की बीमारियां भारत जैसे आध्यात्मिक राष्ट्र में फैल रही हैं, जो निश्चित ही कुंठित मानसिकता का परिचायक है।

इस युग में प्रगतिशील वैज्ञानिक, कृषि, इंजीनियरिंग व अन्य उपकरण से भारत को समृद्धि की ओर ले जा रहे हैं। इसके साथ–साथ भारत के भाग्य में कश्मीर की समस्या, नक्सलवादियों के जातिगत मतभेद, अलगाववादियों से लड़ाई, बाढ़ और अन्य प्राकृतिक विपदाएं भी लिखी हैं और उसे भोगना ही पड़ेगा। क्योंकि उक्त समस्या का कोई हल नहीं है। ग्रह नक्षत्र के चलते कभी सुधार की गुंजाईश होती है तो कभी स्थिति अत्यधिक बिगड़ जाती है।

इस युग में हमें भाग्य, ग्रह नक्षत्रों को अपने पक्ष में करने के लिए अत्यधिक समय क्रियाकलापों में बिताना चाहिए क्योंकि भाग्य में जो लिखा है, वह तो होना ही है। ❑

* वेअरहाउस सहायक–1, क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

लघु कथा

क्या चल रहा है?

दो भिक्षु गुंबद पर बने झंडे को देखकर बहस कर रहे थे। एक भिक्षु ने कहा– 'झंडा हिल रहा है।' दूसरे ने कहा– 'झंडा नहीं, हवा चल रही है।'

दोनों में से कोई भी एक–दूसरे की बात सुनने या मानने के लिए तैयार नहीं था। अपनी बात को साबित करने के लिए वे तरह–तरह के तर्क दे रहे थे।

बहस को थोड़ी देर सुनने के बाद वहां से गुजर रहे एक भिक्षु ने कहा कि थोड़ा ध्यान से देखों। न झंडा चल रहा है और न ही हवा चल रही है। केवल तुम लोगों का मन चला रहा है।

भूत से प्रेरणा लेकर, वर्तमान में भविष्य का चिंतन करना चाहिए।

कालिदास–संक्षिप्त परिचय

जे.पी. बेंजवाल*

यूँ तो कालिदास के बारे में मुझ जैसे व्यक्ति द्वारा कुछ लिखना न सिर्फ हास्यास्पद होगा अपितु यह सूरज को दीया दिखाने वाली बात भी होगी। परन्तु इस महानतम संस्कृत के कवि के बारे में जो रहस्य, किंवदन्तियां और जनश्रुतियां विद्यमान है, उनके बारे में लिखकर इस महान कवि के जीवनकाल व रचनाओं की तनिक जानकारी से सभी पाठकवृन्द लाभान्वित होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

कालिदास का जीवन किंवदन्तियों के घटाटोप में खो गया है– भारतीय परंपरा की एक अनिवार्य परिणति, भारतीय परम्परा में कवि अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में कुछ नहीं लिखता। मनुष्य नश्वर है, उसकी कृति दीर्घजीवी है, वह समाज व आने वाली पीढ़ियों के लिए उपयोगी है, भारतीय परम्परा में इस बात का लगातार परहेज दिखा है कि कवि या कलाकार अपनी मृत्योपरान्त अपने यश की कामना करता हो। अपने कर्म में तल्लीन होकर, उसमें कुशलता प्राप्त कर व सर्वोत्कृष्ट तक पहुंचना ही उनके लिए योग है (योगः कर्मसु कौशलम्), यही उनकी मुक्ति है। यही कारण है कि जब पश्चिमी या पश्चिमी दृष्टिवाला कोई इतिहासकार भारत का सांस्कृतिक इतिहास लिखने बैठता है तो बात–बात पर झुंझलाता है, कृतियां इतनी उत्कृष्ट लेकिन कवि–कलाकार का कुछ पता नहीं। यहां तक कि असली नाम को लेकर घोर विवाद, काल, स्थान, माता–पिता तो दूर की बात है। अजंता, एलौरा, एलीफैंटा, कोणार्क, खजुराहो और दक्षिण भारत के मन्दिरों के अनेकानेक मूर्तिकारों व चित्रकारों के बारे में कोई जानकारी है? उत्तर है– नहीं।

कालिदास ईसा पूर्व की पहली शताब्दी से लेकर चौथी–पांचवी शताब्दी तक लुढ़क रहे हैं। समस्त भारतीय मतों के विश्लेषण के बाद एम.आर. काले ने उन्हें ईसा से एक शताब्दी पूर्व अधोष्ठित किया है। पाश्चात्य विद्वान जैसे– कीथ महोदय उन्हें चौथी शताब्दी में खींच

ले जाते हैं। उनके काल को लेकर ही इतना विवाद व अनिश्चितता है तो उनके व्यक्तिगत जीवन के बारे में भी अवधारणा है। ऐसे में उनके जीवन के बारे में कुछ भी कहना कठिन है। मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में एक सामान्य जनपदीय सहृदय नागरिक और राजधानी के विख्यात कवि के रूप में कालिदास का जो द्वन्द्व सामने आता है, उसका कोई ऐतिहासिक आधार नहीं है। यह मात्र आधुनिक भाव–बोध का आरोपण है।

उपरोक्त भिक्षो "मांसनिसेवण" वाली किंवदन्ती बहुप्रचलित है और कालिदास के प्रारम्भिक दिनों की (जब वह विद्वता प्राप्त कर लौटे थे) है। मूल किंवदन्ती सब जानते हैं कि विदुषी राजकुमारी विद्योत्तमा की प्रतिज्ञा थी कि वह उसी विद्वान से विवाह करेगी जो शास्त्रार्थ में उसे हरा देगा। क्योंकि शास्त्रार्थ में सभी विद्वान हार गये थे इसलिए सभी खीझे पंडितों ने किसी महामूर्ख को खोजकर उससे विद्योत्तमा का विवाह करवाने का षड़यन्त्र रचाया। खोजते–खोजते एक ऐसे व्यक्ति (कालिदास) का दिख जाना, जो पेड़ की उस डाल को काट रहा था जिस पर वह स्वयं बैठा था, विद्वानों को कार्य सिद्ध होने जैसा दिखा। उसे पेड़ से उतारकर, सजाकर राज दरबार में पहुंचा दिया। यह कहकर कि पंडित जी आजकल मौनव्रत पर है, इसलिए शास्त्रार्थ इशारों से ही करेंगे, राजकुमारी को शास्त्रार्थ हेतु आमन्त्रित कर दिया।

* भण्डारण एवं निरीक्षण अधिकारी (सतर्कता), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली।

अच्छे शब्दों के प्रयोग से बुरे लोगों का भी दिल जीता जा सकता है।

विद्योत्तमा ने एक उंगली दिखाई– ब्रह्म एकमात्र सत्य है। निरक्षर कालिदास ने समझा वह उनकी एक आंख फोड़ने की धमकी दे रही है। उन्होंने दो उंगलियाँ उठा दी– दोनों आंखें फोड़ देंगे। पंडितों ने सिद्ध कर दिया कि महान विद्वान कह रहे हैं कि– ''नहीं, ब्रह्म और माया तथा पुरूष और प्रकृति दोनों उतने ही सत्य हैं''। फिर विद्योत्तमा ने पांचों उंगलियों को उठाकर पंजा दिखाया– मनुष्य पांच ज्ञानेन्द्रियों के वशीभूत है। कालिदास ने समझा कि वह तमाचा मारने की धमकी दे रही है। उन्होंने उंगलियों को मोड़कर मुट्ठी कस ली और ऊपर उठाया– घूसा मारूंगा। पंडितों ने व्याख्या की– ''नहीं, मन के नियन्त्रण में एकजुट होकर ही ज्ञानेन्द्रियां बनती हैं। अन्यथा वे तो जड़ और निरर्थक हैं।'' फिर बात बन गई। कालिदास जीत गये और विद्योत्तमा से उनका विवाह हो गया। लेकिन शीघ्र ही उनकी पोल खुल गई।

विद्योत्तमा व कालिदास राजमहल में अपने कक्ष में खिड़की के पास बैठे थे। जब बाहर से एक ऊंट के बलबलाने की आवाज आई और विद्योत्तमा ने पूछा कि यह कैसी आवाज़ है? कालिदास ने शुद्ध शब्द उष्ट्र के बजाय उट्र–उट्र कह दिया। विद्योत्तमा ने समझ लिया कि उनके साथ छल हुआ है। उसने क्रोध में कालिदास को खिड़की के बाहर धकेल दिया। कुछ लोग विद्योत्तमा का पाद–प्रहार करना भी बताते हैं। अपमानित होकर कालिदास निकल पड़े थे और वे माता काली के मन्दिर में गिरते हैं। मां काली के सामने विद्योत्तमा की जगह विद्या–विद्या कहते हैं और मां काली उन्हें विद्वान बनने का आर्शीवाद देती हैं और वे विद्वान बने। जो भी हो, पत्नी से उच्चकोटि के विद्वान बनकर ही वे वापस लौटे। भिक्षा आई तो मांसाहार की फरमाइश कर ली– तभी दोनों तके उपरोक्त संवाद सम्पन्न हुआ। यह एक जनश्रुति है और प्रत्येक व्यक्ति अपने–अपने ढंग से कालिदास की गर्वोक्ति की व्याख्या कर सकता है। लेकिन विद्वजनों में अन्तिम पंक्ति एक सूक्ति (कहावत) के रूप में प्रचलित हो गई– नष्टस्य कान्या गति अर्थात जो एक बार गिर गया, गिरते जाना उसकी नियति है।

कालिदास के बारे में दूसरी किंवदन्ती अधिक प्रचलित है। यह भी विद्वान बन कर लौटने के बाद उनके व विद्योत्तमा के बीच संवाद को लेकर है। दोनों किंवदन्तियों को मिलाया भी जा सकता है। पहली बार भड़कीली बातें बोलकर व मांसाहर व शराब की मांग कर बात नहीं बनी और वे लौट गये। कुछ महीनों बाद वापस आये और उन्होंने दरवाजा खटखटाया– अनावृतं कपाटं देहि–किवाड़ खोलो। अब की बार विद्योत्तमा ने स्वर पहचान लिया और पूछा– अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः– वाणी (भाषा) में कुछ परिष्कार आ गया क्या? कालिदास द्वारा पहले उच्चरित 'उट्र' और उससे उजागर हुआ छल उसे कैसे भूलते। स्वाभिमानी कालिदास फिर लौट गये। विद्योत्तमा के प्रश्न में तीन शब्द थे। उन्हीं तीनों से शुरू करके उन्होंने तीन महाकाव्य लिख डाले। अस्ति से–

"अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराजः।
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।
(कुमार सम्भव 1:1)

{(भारत के) उत्तर में देवतुल्य हिमालय नाम का पर्वतों का राजा है, जो पूरब और पश्चिम के समुद्रों को छूता हुआ ऐसे स्थित है, जैसे पृथ्वी का मानदण्ड हो।}

कश्चिद् से –

कश्चित्कान्ता विरहगुरूणा
स्वाधिकारात्प्रमतः
शापेनास्तंगमितमहिमा वर्ष भोग्येण मर्तुः।

यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेशु
स्निधच्छायातरूषु वसंति रामगिर्याश्रमेशु।।
(मेघदूतम्, पूर्व मेघः 1:1)

{अपने काम में ढिलाई बरतने वाले यक्ष को शाप मिला कि वह एक वर्ष तक अपनी प्रिय पत्नी से दूर रहकर वियोग की पीड़ा सहे। शाप के दिन काटने के लिए उसने रामगिरि (आज के नागपुर के पास स्थित रामटेक की पहाड़ी) में स्थित आश्रमों में जाकर डेरा डाला। जहां के जलाशयों का जल पूर्व में सीता के स्नान करने से पवित्र हुआ, और जहां स्निग्ध छायावाले वृक्ष लहलहाते हैं।}

और वाग्विशेषः से –

वागर्थाविव संपृक्तों वागर्यप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौवन्दे पार्वतीपरमेंश्वरौ।।
(रघुवंशम 1:1)

{शब्द और अर्थ पर अधिकार पाने के लिए संसार के माता–पिता शंकर और पार्वती की वन्दना करता हूँ, जो उसी तरह अविच्छेद्य रूप से जुड़े हुए हैं, जैसे– शब्द और अर्थ।}

कालिदास के ये तीनों महाकाव्य संस्कृत के उन छः महाकाव्यों में से हैं जिन्हें शीर्षस्थ माना जाता है, तीन अन्य महाकाव्य हैं– किरातार्जुनीयम (भारवि) शिशुपालवधम् (माघ) तथा नैषधीयचरितम (श्री हर्ष)।

कालिदास रचित तीन महाकाव्यों के अलावा उनके तीन उत्कृष्ट नाटक भी हैं जिसमें "अभिज्ञानशाकुंतलम" तो विश्व प्रसिद्ध है ही।

प्रसंगवशः कालिदास अपने छंदों के बीच–बीच में पिरोई सूक्तियों के लिए भी बहुत प्रसिद्ध है। कुछ छंद तो पूरी ही सूक्ति बन गई है। उनके नाटक "मात्नविकाग्निमित्रम का यह श्लोक देखिये–

"पुराणामित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्य
नव मित्यवद्यम।
संतः परीक्षान्यतर दृजन्ते मूढः
परप्रत्ययनेय वृद्धि।।

(पुरानी होने से कोई चीज अच्छी नहीं हो जाती, न ही नई होने से बुरी। समझदार लोग तो विवेक से परीक्षण करने के बाद ही अच्छे बुरे का निर्णय करते हैं, जबकि मूर्खों की बुद्धि सुनी सुनाई बातों पर जाती है।)

कालिदास जैसे महान व्यक्ति का चित्रण इस एक लेख में समेटना असम्भव है– कारण कि मेरा अल्पज्ञान व कालिदास की महान कृतियों पर हजारों शोध भी कम हैं। जहां उनके जीवन काल के बारे में विद्वान एकमत नहीं हैं, वहीं उनके जन्म स्थान के बारे में भी एक राय नहीं हैं। कुछ विद्वान उनका जन्म स्थान उज्जैन बताते हैं तो कुछ उत्तराखण्ड में कालीमठ। उत्तर प्रदेश सरकार में रहे विद्वान मन्त्री डा. शिवानन्द नौटियाल ने अवश्य शोध के आधार पर उनके कुछ कार्यक्षेत्र को उत्तराखण्ड के वनों में बताया है– मेघदूतम में हाथियों का आवागमन व मेघों का इस प्रकार विद्यमान रहना सिद्ध करता है कि मेघदूतम की रचना हिमालय के वनों में की गई होगी। हाँ– प्रत्येक महान पुरूष (कालिदास) के पीछे एक नारी (विद्योत्तमा) होती है, यह उक्ति यहां चरितार्थ नहीं होती है। कालिदास अनुपम थे, उन्हें किसी उक्ति में पिरोना सम्भव नहीं है। ❑

पापा तुम बिन लगता है सूना–सूना

विनीत निगम*

पापा तुम्हारे जाने के बाद मुझको सब सूना–सूना लगता है
पर कैसे कहूँ रुक जाओ, मुझे मालूम है तुम रुक नहीं सकते
क्योंकि मुझसे पहले तुम पर हक है देशवासियों का
ऋण है इस जननी का तुम पर, तुम रक्षक हो मातृभूमि के।

पापा तुम्हारी चिट्ठी का रोज, माँ करती है इंतजार
फिर सब्र कर लेती है, तुम पर और भी बड़ी जिम्मेदारी है
मातृभूमि की रक्षा हम सभी का संकल्प है
देश का बच्चा–बच्चा सच्चे सैनिक के साथ है।

पापा तुम फिक्र न करना, तुम्हारे साथ पूरा राष्ट्र खड़ा है
कोई बात नहीं, यदि इस दीवाली तुम घर नहीं आए
पर जब भी आना, दुश्मन को सबक सिखा कर आना
या मातृभूमि की रक्षा में, भले ही बलिदान हो जाना।

कसम तुम्हें तिरंगे की, शान नहीं कम होने देना
मौत भले ही आ जाए पर, भारत का मान नहीं घटने देना
या तो झंडा फहरा के आना या झंडे में लिपट के आना।
पर जब भी आना, शेरों की तरह शान से आना।

मेरा वादा है, मैं भी तुम्हारा मान नहीं घटने दूँगा
तुम वीर गति को प्राप्त हुए यदि, मैं भी सीमा पर जाऊँगा
हम वीर शिव की संताने हैं, दुश्मन को धूल चटा देंगे
एक बार की बात है क्या, शत–शत शीश चढ़ा देंगे।

* पूर्व प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुम्बई

गत वर्ष आयोजित वार्षिक साधारण बैठक की झलकियाँ

सबसे बड़ी सेवा मानवता की सेवा है।

नराकास द्वारा निगम की त्रैमासिक पत्रिका ''भंडारण भारती'' को गृह पत्रिका पुरस्कार

यह प्रसन्नता की बात है कि गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली की दिनांक 08.09.2017 को आयोजित बैठक में निगम की त्रैमासिक पत्रिका ''भंडारण भारती'' को वर्ष 2016-17 के लिए गृह पत्रिका पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार स्कोप ऑडिटोरियम, नई दिल्ली आयोजित समारोह में निगम के निदेशक (कार्मिक) श्री जे.एस. कौशल ने सचिव (राजभाषा) श्री प्रभास कुमार झा से प्राप्त किया।

न रा का स उपक्रम दिल्ली

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली

(राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार)

सचिवालय : स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
16वाँ तल, स्कोप मीनार, कोर-2, नार्थ टॉवर, लक्ष्मी नगर डिस्ट्रिक्ट सेण्टर, दिल्ली 110 092

गृह पत्रिका पुरस्कार

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि..... केंद्रीय भण्डारण निगम .....

की पत्रिका ..... भण्डारण भारती ..... को दिल्ली स्थित उपक्रमों की

गृह पत्रिका प्रतियोगिता में वर्ष ..... 2016 - 17 ..... के लिए ..... तृतीय .....

पुरस्कार प्रदान किया गया।

निदेशक (कार्मिक)
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, नई दिल्ली

अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
(उपक्रम), दिल्ली

सदस्य सचिव
नराकास (उपक्रम), दिल्ली

निगमित कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में त्रैमासिक पत्रिका भंडारण भारती का विमोचन

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को निरन्तर गति प्रदान करने के उद्देश्य से निगमित कार्यालय में प्रत्येक तिमाही प्रबंध निदेशक महोदय की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित की जाती है। जुलाई–सितम्बर, 2017 की तिमाही बैठक दिनांक 11.09.2017 को आयोजित की गई। इस बैठक में पर्यवेक्षक के रूप में मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य श्री अजय कुमार को भी आमंत्रित किया गया, जिन्होंने राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अपने सारगर्भित विचार समिति के समक्ष रखे। इस अवसर पर भंडारण भारती पत्रिका के 64वें अंक का विमोचन भी किया गया। समिति को अवगत कराया गया कि यह प्रसन्नता की बात है कि निगम को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली द्वारा आयोजित समारोह में वर्ष 2016–17 के लिए 'भंडारण भारती पत्रिका' को श्रेष्ठ पत्रिका का तृतीय पुरस्कार सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से दिनांक 08.09.2017 को प्राप्त हुआ है, जिस पर बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों ने खुशी जाहिर की और आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी निगम राजभाषा कार्यान्वयन के साथ–साथ पत्रिका प्रकाशन की दिशा में भी निरन्तर आगे बढ़कर पुरस्कार प्राप्त करता रहेगा। कार्यसूची के अनुसार पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई कार्रवाई से अध्यक्ष महोदय को अवगत कराया गया।

इसके अलावा पिछली तिमाही की तुलना में इस तिमाही में हिंदी पत्राचार, फाइलों पर हिंदी टिप्पणियाँ आदि लिखने के संबंध में वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार प्रतिशतता का लक्ष्य पूरा करने के लिए विस्तार से चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त, बैठक में दिनांक 14.09.2017 से 28.09.2017 तक हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं के संबंध में भी समिति को अवगत कराया गया। हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य, प्रबंध निदेशक, निदेशकगण तथा अन्य सभी अधिकारियों को धन्यवाद देते हुए बैठक समाप्त हुई।

मानव समाज के हित में किया गया कार्य ही यज्ञ होता है।

निगमित कार्यालय में आयोजित हिन्दी दिवस का शुभारम्भ समारोह

निगमित कार्यालय में दिनांक 14.09.2017 को हिन्दी दिवस समारोह का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। इस अवसर पर सरस्वती वन्दना, देश भक्ति गीत एवं भजन के साथ–साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। निगम के प्रबन्ध निदेशक महोदय द्वारा भंडारण भारती पत्रिका के नवीनतम अंक का विमोचन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुभाष चन्द्र लखेड़ा, पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं साहित्यकार तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री एम.एस. कठैत, पूर्व संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान को आमन्त्रित किया गया, जिन्होंने अपने सारगर्भित व्याख्यान से उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी में अधिक से अधिक काम करने की प्रेरणा देते हुए संबोधित किया। प्रबंध निदेशक महोदय, निदेशक (कार्मिक) तथा निदेशक (एमसीपी) ने भी अपने संबोधन में प्रेरणादायक संदेश के माध्यम से निगम में राजभाषा का कार्य निरन्तर गति से आगे बढ़ाने के लिए सभी को प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम के अन्त में उप महाप्रंधक (कार्मिक) ने समारोह के सफल आयोजन के लिए बधाई दी तथा उपस्थित उच्च अधिकारियों तथा कर्मचारियों को इस समारोह में शामिल होने के लिए धन्यवाद दिया।

विश्व के सर्वोत्कृष्ट कथनों और विचारों का ज्ञान ही संस्कृति है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद को वर्ष 2016–17 के लिए राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद द्वारा वर्ष 2016–17 के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। गुजरात विद्यापीठ, डायमंड जुबली हॉल, अहमदाबाद में दिनांकः 08.08.2017 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद की 70वीं बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह में श्री पी.सी. मोदी, अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त–गुजरात, अहमदाबाद से श्री विकास सिंह, क्षेत्रीय प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद ने प्रोत्साहन पुरस्कार स्वरुप शील्ड तथा प्रशस्ति पत्र प्राप्त किया।

भारत सरकार
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
(प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त-गुजरात कार्यालय, अहमदाबाद)

प्रशस्ति पत्र

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद के स्तर पर वर्ष 2016 -17 के दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए केन्द्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद कार्यालय ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया है। राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें शील्ड तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

पुरस्कृत कार्यालय के सभी कार्मिकों से यह अपेक्षा है कि वे अपने सरकारी कार्यों में हिन्दी के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि करते रहें।

(एल.डी.धमल)
उप निदेशक (रा.भा) एवं
सदस्य-सचिव नराकास, अहमदाबाद

(पी.सी.मोदी)
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं
प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त-गुजरात, अहमदाबाद

हिंदी के विकास की अन्य विशेषताएं

- पत्रकारिता का आरम्भ भारत के उन क्षेत्रों से हुआ जो हिंदी भाषी नहीं थे/हैं (कोलकाता/लाहौर आदि)।
- हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का आन्दोलन अहिंदी भाषियों (गांधी, सरस्वती आदि) ने आरंभ किया।
- हिंदी के विकास में राजाश्रय का कोई स्थान नहीं है; इसके विपरीत, हिंदी का सबसे तेज विकास उस दौर में हुआ जब हिंदी अंग्रेजी-शासन का मुखर विरोध कर रही थी। जब-जब हिंदी पर दबाव पड़ा, वह अधिक शक्तिशाली होकर उभरी है।
- हिंदी के विकास में पहले साधु-संत एवं धार्मिक नेताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उसके बाद हिंदी पत्रकारिता एवं स्वतंत्रता संग्राम से बहुत मदद मिली; फिर बम्बईया फिल्मों से सहायता मिली और अब इलैक्ट्रॉनिक मीडिया (टीवी) के कारण हिंदी समझने-बोलने वालों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई है।

महान आदर्श महान मस्तिष्क का निर्माण करते हैं।

हिंदी में प्रवीणता एवं कार्यसाधक ज्ञान की परिभाषा

1. हिंदी में प्रवीणता – किसी कर्मचारी के बारे में यह समझा जाएगा कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है यदि उसने :–

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसके समकक्ष या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी को माध्यम के रूप में अपनाकर उत्तीर्ण की है; अथवा

(ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समकक्ष या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को उसने एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था; अथवा

(ग) यह वह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीण ाता प्राप्त है।

2. हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान – किसी कर्मचारी के बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, यदि उसनेः–

1. मैट्रिक परीक्षा या उसके समकक्ष या उससे उच्चतर परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण की है; अथवा
2. केंद्रीय सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट वर्ग के पदो के संबंध में निर्धारित कोई निम्नस्तर परीक्षा उत्तीर्ण की है; अथवा
3. केंद्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्धारित कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या
4. यदि वह यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अनुसार सामान्य आदेश में निम्नलिखित सम्मिलित हैं:–

1 ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हों और जो स्थायी प्रकार के हों;

2 ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के संबंध में हों या उनके लिए हों;

3 ऐसे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हों या सरकारी कर्मचारियों के लिए हों।

राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976

नियम 2 (1) क्षेत्र 'क' में बिहार, झारखण्ड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य, उत्तराखंड और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह तथा दिल्ली के संघ राज्य क्षेत्र आते हैं;

(2) क्षेत्र 'ख' में गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य और चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र आते है;

(3) क्षेत्र 'ग' में उक्त (क) और (ख) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र आते हैं।

नियम 8 केंद्रीय सरकार के कार्यालयों टिप्पणों का लिखा जाना

(1) कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

(4) उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी केंद्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा जिन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा।

नियम 10 (2) यदि केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियो/अधिकारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय में कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

नियम 10 (4) केंद्रीय सरकार के जिन कार्यालयों के अस्सी प्रतिशत कर्मचारियों/अधिकारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे।

परन्तु, यदि केंद्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख से उप–नियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

जिसके पास उम्मीद है, उसके पास सब कुछ है।

राजभाषा हिन्दी का अतीत एवं वर्तमान

रजनी सूद *

भारत का अतीत 500 से भी ज्यादा वर्षों का स्वर्णिम इतिहास है जिसमें विभिन्न प्रकार की भाषाएं और बोलियाँ बोली जाती थीं जिसमें मुख्यतः हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत, फारसी, उर्दू एवं अंग्रेजी है। अगर उस समय के भौगोलिक मानचित्र पर नज़र डाले तो संपूर्ण भारत रियासतों एवं सूबों में बंटा हुआ था, प्रत्येक रियासत अपने को एक अलग देश समझती थी। सत्ता परिवर्तन के साथ ही शासन को चलाने वाली भाषाएं भी बदल जाती थीं, कभी उर्दू, कभी फारसी और कभी अंग्रेजी। अग्रेजों ने 200 वर्षों तक भारत पर शासन किया और अंग्रेजी को भारतीयों पर लाद दिया और भारतीयों को इस भाषा को बोझ ढोने की इतनी आदत हुई कि आज तक इसका प्रयोग कर रहे हैं।

आज से 800 वर्ष पहले तक यानि तेरहवी शताब्दी तक संपूर्ण विश्व में अंग्रेजी नाम की कोई भाषा नहीं थी। अंग्रेजी भाषा के जन्म से चार सौ वर्ष पूर्व हिन्दी भाषा का साहित्यिक वीरगाथा काल समाप्त होकर भक्तिकाल में प्रवेश कर चुका था। 'पृथ्वीराज रासो, बीसलदेव रासो और पद्मावत आदि काव्यों की रचना की जा चुकी थी और हम साहित्यिक संपदा से भरपूर थे।

अठ्ठारहवी शताब्दी में जब पाश्चात्य साहित्यकारों ने संस्कृत भाषा की औपचारिक शिक्षा ग्रहण की तब उन्हें समझ आया कि भारतीयों के पास कितनी साहित्यिक प्रतिभा है, संसार को पता ही नहीं चल पाया कि भारत की सभ्यता, संस्कृति कितनी विशाल और प्रांजल है। जब उन्हें आभास हुआ कि कुछ तो है जो औरों से भिन्न है तब उन्होने भारत की कथा–कहानियों को सुनना और समझना शुरू कर दिया और अपने देशवासियों को भी इसके बारे में बताया। साहित्य का हस्तांतरण श्रुति के आधार पर पहले ही शुरू हो चुका था। हिन्दी प्राचीन और संपन्न भाषा है, रामायण, महाभारत और पौराणिक कथाएं, इसका जीता–जागता उदाहरण है। हिन्दी के गौरवशाली अतीत को और अधिक गरिमा प्रदान की नल–दमयंती, राजा भतृहरि, उदल आदि के प्रेम, विरह और शौर्य की गाथाओं ने।

अब अगर हम वर्तमान की बात करते हैं तो विश्व में 80 करोड़ से ज्यादा लोग हिन्दी में बात करते हैं। आजादी के बाद 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया, परंतु मानसिकता में बदलाव होना भी आवश्यक है। जब कभी भी सरकारी तंत्र में राजभाषा हिन्दी का जिक्र आता है, हम देखते हैं कि यदि उसी वक्त अंग्रेजी को सहभाषा न माना होता तो आज स्थिति कुछ और होती। सरकारी कार्यालयों के अलावा हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में भी हिंदी ने अपना काफी योगदान दिया। सिनेमा उद्योग ने इसे और मजबूती दी। हिन्दी के बलबूते पर ही फिल्में सिर्फ मनोरंजन का साधन न होकर जीवन का अभिन्न अंग बन गई है। आज भारत प्रत्येक क्षेत्र में विश्व स्तर पर विकास की ऊंचाइयाँ तय कर रहा है। विश्व के सभी देश भारत को सम्मान की दृष्टि से देख रहे हैं।

चूँकि भारत एक उभरता हुआ बाजार है जिसमें पैर पसारने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अपना व्यापार बढ़ाने के लिए हिन्दी का प्रयोग आवश्यक हो जाता है। वैसे भी जब हमने किसी देश की अर्थव्यवस्था में प्रवेश करना होता है तो उस देश की भाषा जानने से उस देश में काम करना आसान हो जाता है। जो भारतीय हिन्दी में काम नहीं करते या जिनको लगता है कि हिन्दी में काम नहीं किया जा सकता तो ऐसे लोगों को चीन, जापान, जर्मनी, फ्रांस रूस से सीख लेनी चाहिए कि इन सभी देशों के निवासी अपने देश की सभ्यता और संस्कृति से कितना प्यार करते हैं। इन देशों का तकनीक में कोई सानी नहीं है। इलैक्ट्रॉनिक बाजार पर चीन और जापान का कब्जा है। हिन्दी के कारण ही हमारी विदेशी मुद्रा में लगातार बढ़ोतरी हो रही है।

जब हम छोटे थे तो हमारे माता–पिता सुबह–शाम बीस मिनट की प्रार्थना करवाया करते थे जिसमें परिवार के सभी सदस्यों को अनिवार्यतः सम्मिलित होना होता था। उन बीस मिनटों में जगत के कल्याण की प्रार्थना की जाती थी, उन मिनटों ने आज भी मुझे अपनी मातृभाषा से जोड़कर रखा हुआ है। संपूर्ण जगत के कल्याण की कामना करते हुए मन कितनी सुखद अनुभूति करता है। उस अनुभूति के अहसास को वही जान सकता है जिसमें संवेदना हो और हिन्दी संवेदना की भाषा है। जय शंकर प्रसाद, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, हरिवंश राय बच्चन न जाने कितने साहित्कार उस संवदेना को पूरा करते हैं।

आज भारत राजभाषा के क्षेत्र में लगातार तरक्की कर रहा है, चाहे वह तरक्की फिल्म उद्योग के माध्यम से हो अथवा विज्ञापनों के माध्यम से। हालांकि सरकारी तंत्र में भी इसका उपयोग बढ़ा है और हम इसके महत्व को नकार नहीं सकते। इसका भविष्य तब तक उज्ज्वल रहेगा जब तक हमारे मन मस्तिष्क में हमारा प्यारा भारतवर्ष बसा रहेगा। ❑

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (प्रचार), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

धैर्य कड़वा है लेकिन इसका फल मीठा है।

भाषा की सेवा के लिए पुरस्कार एवं सम्मान

ज्ञानपीठ पुरस्कार

22 भाषाओं में साहित्य के क्षेत्र में दिए जाने वाले इस सर्वोच्च पुरस्कार की शुरुआत भारतीय ज्ञानपीठ न्यास की ओर से 1965 में हुई। हिंदी में सर्वप्रथम सुमित्रानंदन पंत को यह पुरस्कार दिया गया।

व्यास सम्मान

इसे दूसरे बड़े साहित्यिक सम्मान के रूप में मान्यता हासिल है। 1991 में के.के. बिड़ला फाउंडेशन ने इसकी शुरुआत की थी। दस साल की अवधि में प्रकाशित साहित्यिक कृति इस पुरस्कार की पात्र हो सकती है।

सरस्वती सम्मान

हिंदी के लिए पहला सरस्वती सम्मान हरिवंश राय बच्चन को 1991 में दिया गया था। संविधान की आठवी अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट साहित्यिक कृति को यह सम्मान दिया जाता है। के.के. बिड़ला फाउंडेशन की ओर से साल 1991 में इसे शुरू किया गया था।

शलाका सम्मान

यह हिंदी अकादमी की ओर से दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है। हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में समर्पित विद्वान को यह सम्मान दिया जाता है। सबसे पहले 1986–87 में यह रामविलास शर्मा को दिया गया था।

साहित्य अकादमी पुरस्कार

साहित्य अकादमी संस्था की ओर से हिंदी समेत कुल 24 भाषाओं की कृतियों को यह पुरस्कार दिया जाता है। हिंदी में पहली बार 1955 में हिमतरंगिनी के लिए यह पुरस्कार माखनलाल चतुर्वेदी को मिला था।

भारत–भारती सम्मान

यह उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का सबसे बड़ा पुरस्कार है। भारत–भारती सम्मान हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया जाता है। सबसे पहले 1982 में यह महादेवी वर्मा को मिला था।

अन्य पुरस्कार

हिंदी में उल्लेखनीय योगदान के लिए अलग–अलग संस्थाओं की ओर से कथाक्रम सम्मान, केदार सम्मान, भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, लोहिया सम्मान, शिखर सम्मान जैसे अवॉर्ड दिए जाते है।

जहां सच्चाई होती है, वहीं सरलता रहती है।

हिन्दी भाषा के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी

- संस्कृत से उपजी भारतीय आर्यभाषाओं के अपभ्रंश से 1050 से 1150 के बीच हिंदी का जन्म माना गया है।
- 1165 से 1192 के बीच दरबारी कवि चंदबरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' के रूप में हिंदी साहित्य की पहली रचना की।
- पहला हिंदी उपन्यास 'परीक्षा गुरु' है, जिसे लाला श्रीनिवासदास ने लिखा था।
- गोपाल चंद्र का 'नहुष' हिंदी का पहला मौलिक नाटक माना जाता है।
- 1796 में कलकत्ता से प्रकाशित जॉन गिलक्रिस्ट की 'ग्रामर ऑफ हिंदुस्तानी लेग्वेज' टाइप आधारित देवनागरी में प्रकाशित पहली किताब थी।
- हिंदी का पहला अखबार 'उदन्त मार्त्तण्ड' 30 मई, 1826 को पं. जुगल किशोर शुक्ल के संपादन में निकला था।
- हिंदी भाषी प्रदेशों में सबसे पहले बिहार में 1835 में हिंदी आंदोलन शुरू हुआ।
- हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का विचार सबसे पहले गुजराती कवि श्रीनर्मद (1833–86) ने रखा था।
- भारत में पहली बार हिंदी में स्नातकोत्तर की पढ़ाई कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति सर आशुतोष मुखर्जी ने फोर्ट विलियम कॉलेज में 1919 में शुरू कराई।
- 1930 में पहला हिंदी टाइपराइटर अस्तित्व में आया।
- 1931 में अर्देशिरईरानी ने भारत की पहली बोलती फिल्म 'आलमआरा' हिंदी में बनाई।
- लोकसभा में 15 मई, 1952 को पहली बार हिंदी में संबोधन सीकर के तत्कालीन सांसद एन.एल. शर्मा ने किया।
- 14 सितंबर 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया।
- देश में 14 सितंबर, 1953 को पहली बार 'हिंदी दिवस' मनाया गया।
- हिंदी भाषा की रचना के लिए पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार सुमित्रानंदन पंत को दिया गया।
- पहला विश्व हिंदी सम्मेलन 10–12 जनवरी, 1975 को भारत में हुआ, जिसमें 30 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- संयुक्त राष्ट्र संघ में पहली बार हिंदी में भाषण 1977 में तत्कालीन विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने दिया।
- इलाहाबाद हाईकोर्ट ने न्यायमूर्ति रहे स्व. प्रेम शंकर गुप्त हिंदी में निर्णय देने वाले पहले न्यायाधीश थे।
- हिंदी की पहली इंटरनेट पत्रिका भारत–दर्शन न्यूजीलैंड से प्रकाशित हुई।
- पेशे से इंजीनियर आलोक कुमार ने 21 अप्रैल, 2003 का हिंदी का पहला ब्लॉग 'नौ दो ग्यारह' शुरू किया।
- देश का पहला राष्ट्रीय हिंदी संग्रहालय आगरा में स्थापित करने की योजना है।

बार-बार कहने से झूठ सच नहीं हो जाता।

अपराध अप्रभाषित

कृष्ण कुमार*

अपराध शब्द का प्रयोग प्रायः हर व्यक्ति करता है। सामाजिक राजनैतिक संगठन एवं न्यायालयों में भी मौखिक अथवा लिखित रूप में अपराध शब्द का प्रयोग होता है। परंतु आपको आश्चर्य होगा कि अपराध की सटीक एवं सर्वमान्य परिभाषा किसी भी सांविधिक और कानूनी पुस्तक में नहीं दी गई है। वस्तुतः अपराध की परिभाषा कर पाना कोई सरल कार्य नहीं है। इसका यह तात्पर्य भी नहीं कि किसी विशेषज्ञ ने इसे परिभाषित करने का प्रयास नहीं किया। विधिवेताओं, समाजशास्त्रियों, विचारकों, दार्शनिकों एवं अपराध तत्व शास्त्रियों ने निःसंदेह अपराध को परिभाषित करने के अपनी–अपनी सोच और समझ के अनुसार प्रयास किए हैं। इन विद्वानों ने पहलू विशेष पर बल देते हुए अपनी–अपनी परिभाषएं दी है। परिणाम यह है कि अब तक कोई भी परिभाषा सटीक संक्षिप्त एवं संतोषजनक नहीं पाई गई।

वस्तुतः अपराध वह कृत्य है जिसे समाज विशेष एक समय में अपराध मानता है। यह निर्णय समाज विशेष की मान्यताओं, रीति–रिवाजों एवं मूल्यों को ध्यान में रख कर किया जाता है।

ब्लैक स्टोन के अनुसार लोकविधि के विरुद्ध जा कर अथवा इसकी अपेक्षा करते हुए किए गए काम को अपराध कहा जाएगा।

सर जेम्स स्टीफन का कहना है कि विधि द्वारा प्रतिबंधित एवं समाज की नैतिक भावनाओं के प्रति किए जाने वाले विद्रोह को अपराध कहा जाएगा।

इंग्लैंड के हैल्सबरी लॉज़ के अनुसार अपराध विधि विरुद्ध वह कार्य अथवा चूक है जिसके लिए दोषी कानून की दृष्टि से दण्ड का पात्र होगा।

वास्तव में अपराध वह कृत्य है जिससे किसी व्यक्ति की मानसिक चोट पहुँची है या उसको किसी प्रकार की क्षति हुई है और जिसका दीवानी वाद से उपचार हो जाएगा। यह वह कृत्य है जिससे समाज की शांति व्यवस्था भंग हुई है और सरकार द्वारा ऐसे कृत्य को अपराध की श्रेणी में रखा गया है।

हमारे निगम में जो आचार नियमावली है इसकी किसी धारा उपधारा के विरूद्ध किया गया प्रमाणित कार्य दोष माना जाएगा और कर्मचारी के विरूद्ध तदनुसार कार्रवाई की जाएगी।

अपराध में मुख्यतः तीन तत्व शामिल होते हैं। पहला भौतिक निष्पादन और दूसरा विवेक अर्थात् सोच–समझ एवं तीसरा वह कार्य या गतिविधि जिसके लिए आचार संहिता कोई विधि, कोई संवैधानिक अनुच्छेद मना करता है। प्रमाणिक अपराध तब होता है जब मन में ठान रखा हो, उसके लिए तैयारी कर रखी हो, प्रयास अथवा कोशिश की जाए तथा परिणाम भी निकलना चाहिए। उदाहरण स्वरूप यदि किसी व्यक्ति पर हत्या का मुकदमा चलाना है तो हमें प्रमाणित करना होगा कि अमुक व्यक्ति घर से हत्या करने का मन बना कर चला था; उसके पास लाठी–चाकू, छुरा, बंदूक आदि में से कोई भी अस्त्र–शस्त्र था, उसने घात लगा कर अथवा चुपके से आक्रमण किया जिसके कारण व्यक्ति मारा गया। यदि व्यक्ति बच जाता है तो भी हत्या के प्रयास का मुकदमा चलाने का प्रयास रहेगा।

यदि आपने बिना देखे घर से बाहर ईंट फेंकी और वह किसी व्यक्ति को लग गई और वह मर गया। इसी प्रकार आप अपनी कार पिछले गेयर में पीछे कर रहे हैं और कोई नीचे आ गया तो भी हत्या का मुकदमा दर्ज नहीं होगा क्योंकि आपके कार्य के साथ आपका विवेक अपराधिक मानसिकता जुड़ी हुई नहीं है। एक बात और यदि यह भी प्रमाणित हो जाए कि अमुक व्यक्ति की हत्या इसलिए की गई कि उसकी ज़मीन पर कब्जा करना था या उसका मकान हड़पना था क्योंकि दूसरा दावेदार नहीं है।

प्रसंगवश आपको बताता हूँ कि तीस हजारी कोर्ट में बाप के मकान पर सम्पत्ति लेने के लिए भाई बयान

* पूर्व प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

देता है कि उसने शमशान–घाट में अपने बाप का अंतिम संस्कार किया, लकड़ी की पर्ची दिखाता है कोर्ट में और बहन कहती है कि बीमार बाप की सेवा, दवा–दारू उसने की, दवाइयों के बिल कोर्ट में प्रस्तुत करती है।

कई मामलों में मात्र मानसिक अथवा तैयारी को भी अपराध माना जाएगा यथा– देश की सरकार के विरुद्ध गृह युद्ध की तैयारी, देश के किसी प्रदेश अथवा परियोजना यथा बिजली संयंत्र, विज्ञान अनुसंधान संयंत्र–प्रयोगशाला अथवा जलबंध पर कब्जा करने का प्रयास और डाका डालने की तैयारी करते पाए जाना। यदि कोई किसी को मारने जा रहा है और उसका हथियार गिर गया है, आप उसे हथियार उठा कर देते है या झगड़े के समय आप किसी को हथियार से सहायता करते हैं तो आपको भी अपराध में शामिल माना जाएगा। किसी को अपराध करने के लिए उकसाना भी अपराध की श्रेणी में आता हैं। कई व्यक्ति मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति या बच्चे के हाथ में पिस्टल पकड़ा देते हैं और उसे उकसाते हैं, तो ऐसे उकसाने को अपराध माना जाएगा।

विश्वभर में अपराधियों के लिए सजा का प्रावधान है। यद्यपि सजा भी एक बुराई है तथापि समाज में, देश में सामाजिक सद्भाव शांतिपूर्ण वातावरण, कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए सजा की विधि भी आवश्यक मानी गई।

आप अपनी रक्षा हेतु अपराधी को स्वंय भी सजा दे सकते हैं परंतु वो तब जब आपकी जान पर बन आए या आपकी संपति पर कब्जा हो रहा है या कोई आपका धन, मकान छीन रहा हो। हाँ आपने शुरूआत कम से कम सजा से करनी है। कोई आपको कहीं बंद कर रहा है, आपका अपहरण कर रहा है तो आप उतने ही बल का प्रयोग कर सकते है कि आपका बचाव हो जाए। आपको अपना बचाव करना है न कि आक्रामक को गंभीर चोट पहुँचानी है। याद रहे यदि अपने बचाव में आप अपराधी को चोट पहुँचाते हैं तो आपको प्रमाणित करना होगा कि वह आपको उससे अधिक चोट पहुँचाने वाला था। ❑

जीवन में विचार का महत्व

रामअवतार प्रसाद *

अपने जीवन में एक सद–विचार जीवन को संपूर्ण रीति से बदल सकता है, जीवन का आनंद आपके विचारों पर आधारित है। आपका जैसा विचार होगा उसी के अनुसार ही आपका भाग्य एवं परिस्थिति का निर्माण होगा। जिस प्रकार आप अपने पहनने वाले वस्त्रों तथा अन्य पसंद वाली वस्तुओं को सहेज, संभाल कर रखते हो उसी प्रकार अपने विचारों को भी संभाल कर रखना होगा। आपके विचारों की पसंदगी आपके जीवन शैली को निर्धारित करती है।

इसके लिए यदि देखें तो, स्टार बक्स काफी के चेयरमैन, श्री हार्वर्ड सूज के अनुसार जो सफलता आपको मिलती है, वह सूथ की रेसिपी नहीं है, उसके लिए कठोर परिश्रम एवं सतत सकारात्मक विचारों की आवश्यकता होती है। 78 प्रतिशत सफलता आपके विचारों से मिलती है और बाकी बचा कार्य विचारों के बाल से हो जाता है। इसीलिए बी–पॉजिटिव अर्थात सकारात्मक रहो–

जो तुम चाहो, वो दुनिया की रीत होगी, पूरी दुनिया तुम्हारी मन मीत होगी।
दस्तूर एक ही होता है जज्बे का, मान लो तो हार और ठान लो तो जीत।।

* वेअरहाउस प्रबन्धक, सैंट्रल वेअरहाउस, मालिया हटनि, गुजरात

ज्ञान बोलता है, लेकिन बुद्धि सुनती है।

निगम द्वारा आयोजित खेल गतिविधियां

निगम द्वारा समय–समय खेलों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से खेल गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। जुलाई–सितंबर की तिमाही के दौरान आयोजित खेल गतिविधियों का विवरण इस प्रकार है

टेबल टेनिस

निगम के श्री सुशील टेक चंदानी एंव अन्य खिलाडियों ने 20 जुलाई से 23 जुलाई तक श्रीलंका में आयोजित द्वितीय सार्क वैटर्नज टेबल टेनिस टूर्नामेंट में भाग लिया। भारत की टीम ने प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक हासिल किया एवं व्यक्तिगत स्पर्धा डब्ल्स में श्री सुशील टेकचंदानी ने

कांस्य पदक हासिल किया जो निगम के लिए गौरव की बात है।

बैडमिण्टन

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर निगमित कार्यालय में बैडमिण्टन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें लैण्डपोर्ट अॅथारिटी ऑफ इंडिया के खिलाड़ी भी शामिल हुए। इस प्रतियोगिता में पहली बार आयु के आधार पर महिला वर्ग में दो तथा पुरुष वर्ग में तीन श्रेणियाँ बनाई गईं। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण समारोह के आयोजन के बाद निगम के प्रंबध निदेशक, निदेशक (वित्त), निदेशक (कार्मिक), निदेशक (एम.सी.पी) द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया। प्रंबध निदेशक महोदय द्वारा बैडमिण्टन के खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया गया। विजेता खिलाड़ियों की सूची इस प्रकार है:–

महिला वर्ग

45 वर्ष से कम	45 वर्ष से ऊपर
विजेता–नीतु मुंजाल उपविजेता–वाजिहा खान	विजेता– श्रीमती नीलम अरोड़ा उपविजेता– श्रीमती मोहिनी मल्होत्रा

पुरुष वर्ग

30 वर्ष से कम	31 से 45 वर्ष	45 वर्ष से ऊपर
विजेता– श्री पंकज और श्री अमित शर्मा उपविजेता– श्री दिनेश एंव श्री रवि कुमार	विजेता– श्री बॉबी थॉमस एंव श्री प्रमोद कुमार उपविजेता– श्री आर. आर. अग्रवाल एंव श्री गौरव दत्त	विजेता– श्री एन के ग्रोवर एंव श्री पी.के. नेगी उपविजेता– श्री पवन कुमार एंव श्री पी.के. पाण्डेय

आशा है भविष्य में भी निगम के अधिकारी और कर्मचारी विभिन्न खेल गतिविधियों में भाग लेते हुए अपना योगदान देते रहेंगे। ❑

दोस्ती और भाईचारा ही मानव जीवन के सर्वश्रेष्ठ रत्न हैं।

संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए वार्षिक कार्यक्रम (2017-18)

क्र. सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र		'ख' क्षेत्र		'ग' क्षेत्र	
1.	हिंदी में मूल पत्राचार ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100% 100% 65% 100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90% 90% 55% 100%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	55% 55% 55% 85%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना		100%		100%		100%
3.	हिंदी में टिप्पण		75%		50%		30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम		70%		60%		30%
5.	हिंदी टंकक करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपि की भर्ती		80%		70%		40%
6.	हिंदी में डिटेक्शन/ की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं अथवा सहायक द्वारा)		65%		55%		30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)		100%		100%		100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना		100%		100%		100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिन्दी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय		50%		50%		50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद		100%		100%		100%
11.	वेबसाइट		100% (द्विभाषी)		100% (द्विभाषी)		100% (द्विभाषी)
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन		100% (द्विभाषी)		100% (द्विभाषी)		100% (द्विभाषी)
13.	I) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का %)		25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)
	II) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण		25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)
	III) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण				वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें						
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 02 बैठकें				
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)				
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)				
15.	कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद		100%				

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रांति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110 016